दर्शन एवं संस्कृति विभाग, संस्कृति विद्यापीठ

परास्नातक कार्यक्रम हेतु

अधिगम परिणाम आधारित पाठ्यक्रम संरचना (LOCF)

विभाग की कार्य-योजना (Action Plan of the Department)

दर्शन एवं संस्कृति विभाग; शास्त्रीय भारतीय व पश्चिमी दर्शन, भाषा-दर्शन, संस्कृति-दर्शन, तुलनात्मक दर्शन, सामाजिक-राजनीतिक दर्शन, तुलनात्मक धर्म, नैतिकता तथा तर्कशास्त्र की विभिन्न शाखाओं पर अभिकेंद्रित है। दर्शनशास्त्र आलोचनात्मक दृष्टि एवं विचार की एक व्यापक प्रक्रिया है, इसमें निरीक्षण और परीक्षण की अधिमान्यता, मान्यताओं का पुनर्मूल्यांकन तथा दार्शनिक प्रणालियों का तर्कणापूर्ण व्यवस्थितिकरण करना शामिल है। दर्शनशास्त्र, एक तर्कसंगत बौद्धिक सम्पदा का दस्तावेज़ होने के नाते, हमारी वैचारिकी को तीक्ष्ण करता है, हमारी समझ को समृद्ध करता है तथा हमारे बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करता है। दर्शनशास्त्र का अनुशासन वर्तमान शिक्षा में अपरिहार्य है, इसका अनुप्रयोज्य प्रभाव जीवन के सभी क्षेत्रों में स्पष्ट है, यथा-राष्ट्रीय नीतिगत निर्णय, प्रबंधन, मीडिया, कानून, पारिस्थितिकी, विज्ञान-प्रौद्योगिकी, संस्कृति आदि परम्परा से जो विरासत हमें प्राप्य है तथा हमारे जीवन को प्रभावित करती है; इनमें से कोई भी महत्त्वपूर्ण समाधान दार्शनिक नींव के बिना संभव नहीं हो सकता है।

विभाग का मुख्य उद्देश्य दार्शनिक चर्चा के लिए अंतर्राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य करने के लिए विद्वानों के बीच सुसंगत विमर्श विकसित करना है। विभाग दार्शनिक और सांस्कृतिक अध्ययन के क्षेत्र में बहुआयामी होने की आकांक्षा रखता है। विभाग का उद्देश्य शास्त्रीय भारतीय दार्शनिक ग्रंथों के गहन अध्ययन और उनकी पुनर्व्याख्या का है, जिससे दार्शनिक वैचारिकी को एक नई प्रेरणा और दिशा मिल सके।

दर्शन और संस्कृति विभाग, विश्वविद्यालय के नवोदित विभागों में से एक है। युवा मेधा में दार्शनिक समझ के साथ विभाग अनुसंधान (शोध) और स्नातकोत्तर में शिक्षण का कार्यक्रम प्रदान करता है। विभाग ऐसे सक्षम वातावरण प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है जिसमें विद्यार्थी व शोधार्थी दर्शन एवं संस्कृति के विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक समझ के साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकें।

इस कार्यक्रम के उद्देश्य हैं-शैक्षिक तथा गैर-शैक्षणिक संस्थानों, अनुसंधान एवं विकास संगठनों के आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु अत्यधिक विश्लेषणात्मक और व्यापक दृष्टिकोण का विकास, विभिन्न सांस्कृतिक परिवेश में विकसित दर्शन के बुनियादी सिद्धांतों की सांगोपांगी समझ, विशेषज्ञता के क्षेत्र का गंभीर ज्ञान, दार्शनिक विचारों के विकास की सामान्य जागरूकता, अनवरत सीखने तथा बहुविषयी-अन्तर्संबन्ध विकसन के साथ गुणवत्तापूर्ण और व्यवसायोन्मुख शैक्षिक वातावरण की निर्मिति हेतु संकल्पित है।

शीर्षक (Title)	कार्य-योजनाएँ (Action Plans)
शिक्षण **Teaching**	• उपाधि कार्यक्रम (Degree Programme) ❖ अनुसंधान कार्यक्रम (Ph. D. Programme) ❖ परास्नातक कार्यक्रम (PG Programme) ❖ स्नातक कार्यक्रम (UG Programme)
प्रशिक्षण **Training**	**'पद्धतिशास्त्र एवं शिक्षणविधि : दर्शनशास्त्र का अध्ययन एवं अध्यापन'** **विषय पर प्रतिवर्ष कार्यशाला के आयोजन की योजना**
विभाग द्वारा चिह्नित विशेषीकृत शोध-क्षेत्र (Research Areas specified by the Department)	**भाषा-दर्शन,** **समसामयिक चिंतन,** **सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन,** **मूल ग्रंथ आधारित शोध तथा** **नैतिकता केन्द्रित शोध**
ज्ञान-वितरण के माध्यम Modes of the Dissemination of Knowledge	• विभाग द्वारा प्रकाशन कार्यक्रम सुनिश्चित करना • शोध- पत्रिका का प्रकाशन • दार्शनिक परियोजना द्वारा समाज का अध्ययन • राष्ट्रीय संगोष्ठियों/ कार्यशाला का आयोजन
प्रकाशन-योजना	**भाषा-दर्शन से संबन्धित ग्रंथ**

कार्यक्रम-विवरण हेतु ढाँचा

विभाग का नाम : दर्शन एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम का नाम : परास्नातक- दर्शनशास्त्र

पाठ्यक्रम कोड : MAPHIL

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Programme Learning Outcomes):

ज्ञान संबंधी	कौशल/दक्षता संबंधी	रोजगार संबंधी
दर्शनशास्त्र वर्तमान में सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण विषयों में से एक है। यह छात्रों को महान दार्शनिकों और उनके विचारों से परिचित कराएगा और यह भी कि कैसे उनके सिद्धांतों के माध्यम से समकालीन समस्याओं के बारे में चिंतन कर सकते हैं। यह पाठ्यचर्या भारतीय और पश्चिमी दर्शन को व्यापक आकार देगा। यह छात्रों को नैतिकतापूर्ण मान्यताओं को मुख्यधाराओं से भी अवगत कराएगा। छात्र कई अन्य मूल और वैकल्पिक पत्रों के माध्यम से विज्ञान, तर्कशास्त्र, विश्वधर्म-दर्शन, समकालीन चिन्तन, अध्यात्म, पर्यावरणीय नैतिकता तथा मूल-ग्रंथ के आलोक में दर्शनशास्त्र का पाठ कर सकते हैं।	पाठ्यचर्या का मुख्य उद्देश्य छात्र को विश्व से संबंधित मूलभूत दार्शनिक तथ्यों से अवगत कराना है, चाहे वह हमारे जीवन से हो, मन से हो, अस्तित्व से हो, विश्वास से हो, धर्म से हो या विज्ञान से संबंधित हो, दर्शनशास्त्र स्वरूप-विश्लेषण में व्यापक और गहन है। दर्शनशास्त्र के लिए यह पाठ्यचर्या विषयगत छात्रों की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और आकांक्षाओं के साथ-साथ एक विषय के रूप में दर्शनशास्त्र की आधुनिकतावादी प्रवृत्तियों और कार्यप्रणालियों के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तैयार किया गया है। पाठ्यचर्या सीखने के क्रम में ज्ञान, समझ, कौशल, दृष्टिकोण तथा मूल्य का विकसन अभीष्ट है।	दर्शनशास्त्र का उद्देश्य गंभीर, तार्किक और विश्लेषणात्मक रूप से सोचने की क्षमता को विकसित करना है और इसलिए व्यावहारिक स्थितियों में दार्शनिक तर्क (मेधा) का उपयोग करना है। दर्शनशास्त्र में उपाधि ग्रहण करने वाले छात्रों को मीडिया, शिक्षा, कानून, राजनीति, सरकार, सिविल सेवा आदि में रोजगार-निर्माण हेतु व्यापक मदद मिलेगी।

शिक्षण अभिगम, विधियाँ, तकनीक एवं उपादान (Approaches, Methods, Techniques and Tools of Teaching) :

अभिगम	शिक्षण एक निरंतर प्रक्रिया है जो छात्रों के ज्ञान, शैक्षणिक जिज्ञासा, पढ़ने और अभ्यास, रचनात्मकता, सोचने की क्षमता और अपने ज्ञान के स्तर को बढ़ाने के लिए तथा लगातार सीखने के दृष्टिकोण से संपृक्त है। यह पाठ्यक्रम छात्रों के बीच बातचीत और उनकी स्वतंत्र रूप से सोचने की क्षमता को विस्तार प्रदान हेतु संकल्पित है।
विधियाँ	छात्रों को कक्षाओं में प्रभावी प्रस्तुति, प्रश्नोत्तरी के साथ-साथ व्याख्यान के माध्यम से मौखिक और लिखित संचार कौशल विकसित किया जाएगा।
तकनीक	कक्षा में यह व्याख्यान, चार्ट, पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन और ऑडियो-विजुअल संसाधनों के उपयोग किया जाएगा। छात्र को कुछ विषयों पर चर्चा, समूह चर्चा और संगोष्ठी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाएगा। जो भी उपयुक्त होगा, समस्या-समाधान का तरीका अपनाया जाएगा।
उपादान	दर्शनशास्त्र के शिक्षण का उद्देश्य कक्षा में ज्ञान के साथ-साथ जीवन में स्थानांतरण के माध्यम से छात्र को दर्शन, संस्कृति और समाज को समझने में दक्ष बनाना है।

मूल्यांकन/ परीक्षा योजना (Evaluation/Examination Planning):सैद्धांतिक पाठ्यचर्या का मूल्यांकन

आतंरिक मूल्यांकन (25%)					**सत्रांत परीक्षा (75%)**
घटक	कक्षा में सतत मूल्यांकन	उपस्थिति	सेमिनार*	सत्रीय-पत्र#	
निर्धारित अंक	05	05	07	08	
पूर्णांक	**25**				**75**

*विद्यार्थी द्वारा तीन सेमिनार प्रस्तुतियों में से दो उत्तम हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।
#विद्यार्थी द्वारा प्रस्तुत तीन सत्रीय पत्र में से दो उत्तम पत्र हेतु प्राप्त अंकों के औसत के आधार पर मूल्यांकन किया जाएगा।

आतंरिक मूल्यांकन (80%)			**मौखिकी (20%)**
घटक	क्षेत्र-कार्य/प्रशिक्षण आधारित प्रस्तुतीकरण	परियोजना/ प्रतिवेदन लेखन	
निर्धारित अंक प्रतिशत	30%	50%	**20%**

कार्यक्रम संरचना (Programme Structure) : परास्नातक कार्यक्रम हेतु प्रस्तावित पाठ्यचर्या संरचना

सेमेस्टर	मूल पाठ्यचर्या	क्रेडिट	ऐच्छिक पाठ्यचर्या	क्रेडिट	योग
प्रथम	भारतीय भाषा-दर्शन (MAPHIL 111)	4	भारतीय तर्कशास्त्र (MAPHIL 115)	4	22 क्रेडिट
	भारतीय दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (MAPHIL 112)	4			
	पाश्चात्य दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (MAPHIL 113)	4	प्रशासनिक नीतिशास्त्र (MAPHIL 116)	2	
	नीतिशास्त्र (MAPHIL 114)	4			
द्वितीय	पाश्चात्य भाषा-दर्शन (MAPHIL 121)	4	गीता का दर्शन (MAPHIL 125)	4	22 क्रेडिट
	भारतीय दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (MAPHIL 122)	4			
	पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (MAPHIL 123)	4	योग-दर्शन (MAPHIL 126)	2	
	संस्कृति-दर्शन (MAPHIL 124)	4			
तृतीय	भर्तृहरि का भाषा-दर्शन (MAPHIL 231)	4	समकालीन भारतीय दर्शन: स्वरूप एवं समस्याएं (MAPHIL 235)	4	24 क्रेडिट
	तर्कशास्त्र (MAPHIL 232)	4			
	धर्मदर्शन (MAPHIL 233)	4	समकालीन पाश्चात्य दर्शन: स्वरूप एवं समस्याएं (MAPHIL 236)	4	
	सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन पर समकालीन भारतीय प्रभाव (MAPHIL 234)	4			
चतुर्थ	भारतीय भाषा-दर्शन पर आधारित ग्रंथ अध्ययन-वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रणीत- तत्त्वबिन्दु (MAPHIL 241)	4	महात्मा गांधी का दर्शन (MAPHIL 249)	4	22 क्रेडिट
	शांकरवेदान्त –चतु:सूत्री के आलोक में (MAPHIL 242)	4			
	निम्नोक्त से कोई एक प्रश्नपत्र का चयन करें- • काश्मीर शैवदर्शन/ (MAPHIL 243) • भारतीय प्रमाणविचार-धर्मकीर्ति प्रणीत न्यायबिन्दु से प्रत्यक्ष खंड तथा धर्मराजाध्वरीन्द्र प्रणीत वेदान्त परिभाषा से आगम प्रमाण खंड / (MAPHIL 244) • सौन्दर्य मीमांसा (MAPHIL 245)	4	भारतीय नीतिशास्त्र (MAPHIL 2410)	2	
	निम्नोक्त से कोई एक प्रश्नपत्र का चयन करें- • कांट का दर्शन/(MAPHIL 246) • अस्तित्ववाद/(MAPHIL 247) • दार्शनिक उपबोधन (MAPHIL 248)	4			
कुल क्रेडिट		64 क्रेडिट		26 क्रेडिट	90 क्रेडिट

भारतीय भाषा-दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय भाषा-दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 111

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

भाषा और भाषायी व्यवहार मनुष्य के अविर्भाव के साथ-साथ उद्भूत हुआ है। भारतीय मनीषा की दृष्टि में भाषायी-व्यवहार की परम्परा अनादि है। भाषायी-व्यवहार की आधारशिला शब्द या पद हैं। शब्द के द्वारा अर्थाभिव्यक्ति वाग्व्यवहार का प्रयोजन है। शब्द और तदर्थ की मीमांसा वैदिक काल से ही प्रारम्भ हो गयी थी। भाषा का शुद्धतम और सर्वोत्तम स्वरूप उपनिषदों में सूक्ष्मता के साथ विवेचित हुआ है। भारतीय दर्शन में शब्द-दर्शन पर हमें वैयाकरणों के अतिरिक्त तीन स्वतन्त्र मान्याताएं दृष्टिगत होती हैं। नैयायिक, मीमांसक तथा बौद्ध-ये सब पद पदार्थ के स्वरूप का विश्लेषण करने का प्रयत्न कर रहे थे। इनके मत में पद वास्तविक और वाक्य के घटक हैं। भाषा और संस्कृति में अनिवार्य समाश्रयता है। भाषा, संस्कृति की पोषिका है और उसके विकास की संवाहिनी भी। यह संवहन अर्थ के माध्यम से होता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

भारतीय भाषा दर्शन विभिन्न दृष्टियों का अद्भुत समन्वय है। इसके समग्र स्वरूप में प्रायः सभी संभावित दृष्टि से किए गये विचार दार्शनिक विधाओं के रूप में निबद्ध हैं। भारतीय भाषा दर्शन को उसके इसी स्वरूप वैशिष्ट्य के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास इस पाठ्यचर्या में किया गया है। भारतीय भाषा दर्शन मात्र बौद्धिक तथा तार्किक विवेचन ही नहीं है, इसके मूल में भारतीय आध्यात्मिकता है। इसकी आध्यात्मिक भावना को, ज्ञान को, बिना समझे, भारतीय भाषा दर्शन को समग्र रूप से समझा ही नहीं जा सकता है। भारतीय भाषा दर्शन में सभी संभावित दृष्टि से विचार किया गया है। यहाँ अनुभव को मात्र सामान्य अनुभव (इन्द्रियानुभव) के रूप में नहीं लिया गया है अपितु उच्चतर अनुभव (अपरोक्षानुभूति) का स्तर भी माना गया है तथा उस दृष्टि से भी भाषा दर्शन पर विचार किया गया है। यहाँ अनुभववादी, बुद्धिवादी, वस्तुवादी, प्रत्ययवादी, निषेधवादी (अपोहवाद), अनेकान्तवादी सभी दृष्टियों से भाषा दर्शन की समस्याओं पर विचार किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यचर्या भारतीय भाषा दर्शन को उसके समग्र रूप में प्रस्तुत करने का एक प्रयास है। भारतीय भाषा दर्शन एक वाद या सम्प्रदाय नहीं है। इसमें वैदिक, अवैदिक (श्रमण) तथा आगमिक (तांत्रिक) परंपराओं का दर्शन समाहित है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **शब्द प्रमाण का स्वरूप**	**दार्शनिक संप्रदायों में शब्द-प्रमाण** 1. चार्वाक मत 2. जैन मत 3. बौद्ध मत 4. सांख्य-योग मत 5. न्यायदर्शन मत 6. वैशेषिक मत 7. मीमांसा मत 8. वेदान्त मत	10	17
मॉड्यूल-2 **पद का स्वरूप**	1. पद के लक्षण व भेद 2. पद तथा पदार्थ 3. पद के संकेतित अर्थ (शक्ति) का स्वरूप 4. शब्द के नित्यता तथा अनित्यता का प्रसंग	10	17

मॉड्यूल-3 **पदों का विश्लेषण**	1. पद की वृतियाँ-अभिधा, लक्षणा 2. अर्थ के साधन-व्याकरण, उपमान, कोश, आप्तवाक्य, व्यवहार, वाक्यशेष, विवृत्ति, सिद्धपद सान्निध्य	10	16
मॉड्यूल-4 **वाक्य का स्वरूप**	1. वाक्य का स्वरूप 2. वाक्य गठन के आधारभूत तत्त्व- (क) आकांक्षा (ख) योग्यता (ग) आसक्ति (घ) तात्पर्य	10	16
मॉड्यूल-5 **वाक्यार्थ बोध की विधियाँ**	वाक्यार्थ बोध की विधियाँ- (क) अभिहितान्वयवाद (ख) अन्विताभिधानवाद (ग) तात्पर्यवाद	10	17
मॉड्यूल-6 **अर्थविज्ञान के दार्शनिक पद्धतियाँ**	**अर्थविज्ञान के दार्शनिक पद्धतियाँ** (क) अपोहवाद (ख) स्फोटवाद	10	17
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Tiwari, D. N. (2008): The Central Problems of Bhartihari's Philosophy, ICPR, New Delhi. 2. Jha, H.M.(1981) Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy, Choukhambha Vidya Bhawan, Varanasi 3. Pandey, R.C. (1963) The Problem of Meaning in Indian Philosophy, MLBD, 4. Raja, Kunjunni(1963) Indian Theories of Meaning: Adyar library & Research Center. 5. Vakyapadiya-Brahmakanda- Tr. in English by K.A.S.Ayer, Poona, and in Hindi by S.C. Awasthi, Choukhambha Vidya Bhawan, Varanasi. 6. Sastri, Gauri Nath (1980) A Study in the Dialectics of Sphoṭa, MLBD, New Delhi 7. Matilal,B.K.(1971) Epistemology, Logic and Grammar in Indian Philosophical Analysis. The Hague, Mouton. 8. Mishra, K.P.: Bharatiya Bhasha Darshana:, Kala Prakashan, Varanasi. 9. Thakur, D.N. (1999) Arthavijñana ki Bharatiya Parampara aur Adhunika Sandarbha, Jagannath Prakashana, Patna.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 112

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

ज्ञान के स्वरूप-विश्लेषण के साथ ही जिस एक बहुत बड़े प्रश्न पर भारतीय दार्शनिकों ने गहन चिन्तन मनन किया, वह अपने मूलरूप में इस प्रकार है कि है ज्ञान का ज्ञान कैसे होता है और उसकी सत्यता का पता कैसे चलता है ? दूसरे शब्दों में, जब हमें किसी पदार्थ का ज्ञान होता है तो यह प्रश्न उपस्थित होता है कि वह कौन-सी कसौटी है, जिसके आधार पर यह पता किया जा सके कि हम जिस वस्तु को जानना चाहते थे हमें उसी का बोध हुआ। इस जिज्ञासा से कम-से-कम तीन पहलू हैं-ज्ञाता, ज्ञेय और ज्ञान। इसके साथ ही ज्ञान के जनक कारण और ज्ञापक कारण कौन से हैं, इस पहलू की भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ज्ञान के ज्ञान की इस समस्या पर भारतीय दार्शनिकों ने प्रमाण और प्रमेय के सन्दर्भ में विचार किया है। प्रमाण की परिभाषा और प्रमाण भेद के सम्बन्ध में मतभेद होने पर भी सभी भारतीय दार्शनिकों ने यह प्रतिपादित किया है कि प्रमेयों (पदार्थों) का ज्ञान प्रमाण द्वारा होता है। अतः इस समस्या का स्वरूप स्वभावतः इस प्रकार विकसित हुआ कि जिस प्रमाण से प्रमेय का ज्ञान होता है उस प्रमाण की परिभाषा और प्रमाण के सत्यत्व की कसौटी क्या है। अर्थात् प्रमाण का प्रामाण्य किस तत्त्व पर निर्भर है ? उत्तर भिन्न होने पर भी प्रश्न तो एक ही रहा जिस पर प्रायः सभी दर्शनों में प्रामाण्य वाद के अन्तर्गत विचार किया गया है। प्रमाण के प्रमाण त्त्व पर विचार के साथ ही उसके अप्रमाणत्व का प्रश्न भी सिक्के के दूसरे पाठ के समान अनिवार्यतः जुड़ा हुआ है, अतः प्रामाण्यवाद में केवल यही बात समाविष्ट नहीं कि प्रमाण के प्रमाण्य का ज्ञान कैसे होता है बल्कि यह भी है कि अप्रमाण के अप्रामाण्य का पता कैसे चलता है। भारतीय दर्शनों में इस समस्या का अपने अपने सम्प्रदायों के अनुसार विश्लेषण किया गया।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

प्रमाणों के द्वारा अर्थपरीक्षण को न्याय कहा जाता है। प्रमेय, प्रमा और प्रमाण के त्रिभुज में ज्ञान की सारी प्रक्रिया समाहित हो जाती है, अतः न्याय में की दृष्टि से प्रमाणों का महत्त्व स्वतः स्पष्ट है। सामान्यतया कई लोग यह कह सकते हैं कि लोकव्यवहार में उन्हें प्रमाण जैसे किसी साधन के स्वरूप के ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती, परन्तु लोकिक जीवन में तो अन्य शास्त्रों के ज्ञान के बिना भी काम चलता ही रहता है। इतना अवश्य है कि शास्त्रों के ज्ञान के बिना भी जो व्यवहार होता है, वह गूंगे के गुड़ के समान स्वयं गूंगे के द्वारा अवर्णनीय होता है और शास्त्रज्ञान सहित जो कार्य होता है, वह वाक् शक्ति सम्पन्न मनुष्य द्वारा उपयोग में लाई जानेवाली वस्तुओं के समान वर्णनीय होता है। मनुष्य एक चेतना सम्पन्न, विवेकयुक्त तथा सामाजिक प्राणी है। ये सब शक्तियाँ यद्यपि उसमें जन्मसिद्ध हैं, किन्तु जिस रूप में इन शक्तियों का विकास हुआ उसमें उसके पूर्वानुभवों के सामान्यीकरण के आधार पर निश्चित किये सिद्धांतों का बहुत बड़ा हाथ है। जिज्ञासा की प्रवृत्ति भी मनुष्य में जन्मजात है। जिज्ञासा की कई दिशाएँ व उद्देश्य हो सकते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से हम जगत् और जीवन के रहस्यों के बारे में जानकारी प्राप्त करके ऐहिक और आमुष्मिक जीनव को सुखीब नाना चाहते हैं। भौतिक दृष्टि से आम आदमी को ही नहीं अपितु पर्याप्त सुबुद्ध व्यक्तियों को कभी-कभी कई मामलों में भ्रांति हो जाती है। इससे यह प्रश्न स्वाभाविक ही उठ खड़ा होता है कि भ्रम के कारण क्या होते हैं और श्रम के हैं अभाव यानी ज्ञान के साधन कौन हैं। इस नकारात्मक दृष्टि से देखा जाए तो प्रमाण भ्रम से बचाव के मार्ग भी सिद्ध होते हैं। शंकराचार्य ने तो स्पष्ट ही यह कहा है कि प्रमाण अविद्या की निवृत्ति करते हैं ज्ञान नहीं देते। किन्तु विवेचन के स्तर पर हम भाव और अभाव में से भाव पर अधिक ध्यान देते हैं क्योंकि उसका विश्लेषण प्राय: सुकर होता है। यही कारण है कि प्रमाणमीमांसा पर लगभग सभी भारतीय दर्शनों ने कुछ-न-कुछ चर्चा अवश्य की है। वैसे यह बात भी स्पष्ट ही है कि प्रमाणों का महत्त्व दार्शनिक दृष्टि से ही अधिक है। दर्शनों का विषय प्रमुखतया ज्ञान का विश्लेषण रहा है अत: प्रमाणों को उनमें पर्याप्त स्थान मिलना स्वाभाविक ही था।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **ज्ञान का स्वरूप**	(क) ज्ञान के लक्षण (ख) प्रमा तथा अप्रमा में भेद	10	16

	(ग) प्रमा के लक्षण व विशेषताएं (घ) अप्रमा के लक्षण व प्रकार		
मॉड्यूल-2 **प्रामाण्यवाद**	(क) स्वतः प्रामाण्यवाद (ख) परतःप्रामाण्यवाद	5	9
मॉड्यूल-3 **ख्यातिवाद**	(क) आत्मख्याति (ख) असत्ख्याति (ग) अख्याति (घ) अनिर्वचनीयख्याति (ङ) अन्यथाख्याति	10	16
मॉड्यूल-4 **प्रत्यक्ष-प्रमाण (न्याय दर्शन)**	(क) परिभाषा (ख) इंद्रियों, मन एवं आत्मा की भूमिका (ग) सन्निकर्ष (घ) प्रत्यक्ष के भेद	10	17
मॉड्यूल-5 **अनुमान प्रमाण (न्याय दर्शन)**	(क) परिभाषा (ख) अनुमान के अवयव (ग) अनुमान के भेद (घ) व्याप्ति (ङ) हेतु (च) हेत्वाभास	10	17
मॉड्यूल-6 **उपमान-प्रमाण**	(क) स्वरूप (ख) पृथक् प्रमाणत्व (ग) उपमान और सादृश्यानुमान	5	9
मॉड्यूल-7 **अर्थापत्ति प्रमाण**	(क) अर्थापत्ति का स्वरूप (ख) अर्थापत्ति के भेद (ग) अर्थापत्ति की उपयोगिता	5	8
मॉड्यूल-8 **अनुपलब्धि प्रमाण**	(क) अनुपलब्धि का स्वरूप (ख) अनुपलब्धि की उपयोगिता	5	8
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Datta, D.M. (1997) The Six Ways of Knowing, University of Calcutta 2. Chatterjee, S.C. (1965) The Nyaya theory of knowledge, University of Calcutta 3. Bhatt, G.P.(1962) Epistemology of the Bhatta School of Purvamimamasa, Chowkhambha Sanskrit Series 4. Vidyabhusana, S.C. (1971) History of India Logic, Motilal Banarsidas, 5. Prasad, Jwala (1958) History of India Epistemology, Munshiram Manoharlal, Delhi, 1958 6. Matilal B.K. (1986) Perception Clarendon Press, Oxford 1986 7. Kar, B (1990) Indian Theories of Error, Delhi Azanta Books International Sinha, Nilima (2005) Bharatiya Pramanamimasa, Motilal Banarsidas, Delhi

		8. Sharma N.K (1984) Bharatiya Darshanik Samasyayen, Rajasthan Hindi Granth Academy 9. C. D. Bijalvan (1983) Bharatiya Nyayashasstra, Uttar Pradesh Hindi Sansthana, Lucknow
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

पाश्चात्य दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : पाश्चात्य दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 113

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या "**पाश्चात्य दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं** " के अंतर्गत विद्यार्थी ज्ञान की प्रकृति 'यह जानना कि कैसे बनाम उस सिद्धांत को जानना, ज्ञान की परिभाषा, ज्ञान की संरचना, मूलाधारवाद, संसक्ततावाद, अनिवार्य एवं अनुभव जन्य ज्ञान, ज्ञान के स्रोत, इन्द्रियानुभव, तर्कबुद्धि, इन्द्रियबोध, अन्त:प्रज्ञा, श्रुति, आप्तवचन, ज्ञान के प्रकार : प्रागनुभविक, अनुभव सापेक्ष, वस्तुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ सम्बन्ध, आदर्शवाद, वास्तववाद, नव वास्तववाद, प्रत्ययवाद, संवृत्तिवाद, ज्ञान की सीमा : संशयवाद एवं अज्ञेयवाद, सत्य की प्रकृति, सत्य का क्षेत्र, सत्य का संवादिता सिद्धांत, सत्य का संसक्तता सिद्धांत, सत्य का व्यवहारिकतावादी सिद्धांत का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत **पाश्चात्य दर्शन की ज्ञानमीमांसीय समस्याएं** विषय का संप्रत्यय स्पष्ट कर पाएंगे। तत्त्वमीमांसा की परिभाषा समझने साथ ही पाश्यात्य दर्शन के अंतर्गत तत्त्वमीमांसा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालने की स्थिति में होंगे। पाश्चात्य दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों की समझ को विकसित कर उसकी मूल प्रवित्तियों की पहचान कर सकेगा। इस विषय का दार्शनिक विवेचन करते हुये वर्तमान में इसके महत्व को रेखांकित करने की स्थिति में होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1 – ज्ञान की प्रकृति 1.2 – ज्ञान की परिभाषा 1.3 – ज्ञान की संरचना 1.4 – मूलाधारवाद 1.5- संसक्तता	**15**	**25**
मॉड्यूल-2	2.1 – अनिवार्य एवं अनुभवजन्य ज्ञान 2.2 – ज्ञान के स्रोत 2.3- इन्द्रियानुभव, तर्कबुद्धि, इन्द्रियबोध 2.4 - अन्त:प्रज्ञा 2.5 – श्रुति, आप्तवचन 2.6 – ज्ञान के प्रकार : प्रागनुभविक, अनुभवसापेक्ष	**15**	**25**
मॉड्यूल-3	3.1- वस्तुनिष्ठ एवं आत्मनिष्ठ सम्बन्ध 3.2 – आदर्शवाद, वास्तववाद, नव वास्तववाद 3.3 – प्रत्ययवाद, संवृत्तिवाद, नव वास्तववाद 3.4 – ज्ञान की सीमा- संशयवाद एवं अज्ञेयवाद	**15**	**25**

मॉड्यूल-4	4.1-सत्य की प्रकृति 4.2 – सत्य का क्षेत्र 4.3 – सत्य का संवादिता सिद्धांत 4.4 – सत्य का संसक्तता सिद्धांत 4.5 – सत्य का व्यवहारिकतावादी सिद्धांत	**15**	**25**
योग		**60**	**100%**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Ewing, A.C. (1984).The Fundamental Questions of Philosophy, Allied Publishers, New Delhi. 2. Grayling, A.C. (1996). Philosophy : A guide through the subject, O.U.P. 3. Patrick, G.T.W. (1978). Introduction to philosophy, Surjeet Publications, Delhi,. 4. प्रसाद, राजेन्द्र. (1993). दर्शनशास्त्र की रूपरेखा, शुक्ला बुक डेपो, पटना. 5. तिवारी, के.एन.(1986).तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा, एम.एल.बी.डी.दिल्ली. 6. Taylor, Richard. (1994) .Metaphysics, Prentice-Hall of India Private Ltd., New Delhi. 7. Conee, E., and Sider, T. (2005) Riddles of Existence, Clarendon Press, Oxford. 8. आर.एस., भटनागर. (1987). दार्शनिक समस्या, तत्त्वमीमांसा, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर. 9. Heil John (2002). Philosophy of Mind : A Contemporary Introduction, Routledge, London.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

नीतिशास्त्र (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : नीतिशास्त्र (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 114

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर : I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत "नीतिशास्त्र" में विद्यार्थी नीतिशास्त्रीय प्रणाली, प्रकृति एवं क्षेत्र, मूल प्रश्न, नैतिक अवधारणाएं : शुभ, अधिकार, कर्तव्य, मूल्य, नैतिकता की पूर्व मान्यताएं, नैतिक निर्णय का उद्देश्य, प्रकृति, नीतिशास्त्रीय सिद्धांत:नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक सुखवाद, बेंथम एवं मिल का उपयोगितावाद, मानदंडक नीतिशास्त्र, अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र, वर्णनात्मक नीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र के आयाम: निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, मानवीय मूल्य महान नेताओं सुधारकों का जीवन एवं उनकी शिक्षा, मूल्य विकसित करने में परिवार समाज एवं शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका, भारतीय एवं पाश्चात्य नीतिशास्त्र : ऋत एवं ऋण की वैदिक अवधारणा, पुरुषार्थ की अवधारणा, चार्वाक, कर्म-सिद्धांत, कर्तव्य स्वातंत्र्य बनाम निर्धारणवाद, गांधी का नैतिक दर्शन, सुकरात का सद्गुण, प्लेटो : विवेक, न्याय, संयम अरस्तू : नैतिक एवं बौद्धिक सद्गुण के अध्ययन करके नैतिकता, मूल्य तथा प्रमुख नैतिक विचारक का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत भारतीय एवं पाश्चात्य नीतिशास्त्र के महत्वपूर्ण आयामों से न सिर्फ भली-भांति परिचित होंगे बल्कि उनके सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर सार्थक, गरिमापूर्ण एवं न्यायोचित जीवन जीने में सफल होंगे। सही और गलत के बीच अंतर करने की स्थिति में होंगे। विवेक पूर्ण निर्णय की क्षमता विकसित होगी।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **नीतिशास्त्र: प्रकृति एवं स्वरूप**	1.1- नीतिशास्त्रीय प्रणाली, 1.2- प्रकृति एवं क्षेत्र, 1.3- मूल प्रश्न, 1.4- नैतिक अवधारणाएं : शुभ, अधिकार, कर्तव्य, मूल्य, 1.5- नैतिकता की पूर्व मान्यताएं, 1.6- नैतिक निर्णय का उद्देश्य प्रकृति	**12**	20
मॉड्यूल-2 **नीतिशास्त्रीय सिद्धांत**	नीतिशास्त्रीय सिद्धांत: (नैतिक एवं मनोवैज्ञानिक) **2.1-** सुखवाद, बेंथम एवं मिल का उपयोगितावाद, **2.2-** मानदंडक नीतिशास्त्र, अनुप्रयुक्त नीति शास्त्र, वर्णनात्मक नीतिशास्त्र	**12**	20
मॉड्यूल-3 **नीतिशास्त्र के आयाम**	**3.1-** निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, **3.2-** मानवीय मूल्य महान नेताओं सुधारको का जीवन एवं उनकी शिक्षा **3.3-** मूल्य विकसित करने में परिवार समाज एवं शैक्षणिक संस्थाओं की भूमिका	**12**	20
मॉड्यूल-4 **भारतीय नीतिशास्त्र**	**4.1-** ऋत एवं ऋण की वैदिक अवधारणा **4.2-**पुरुषार्थ की अवधारणा **4.3-** चार्वाक, कर्म-सिद्धांत **4.4-** कर्तव्य स्वातंत्र्य बनाम निर्धारणवाद,	**12**	20

	4.5- गांधी का नैतिक दर्शन		
मॉड्यूल-5 **पाश्चात्य नीतिशास्त्र**	पाश्चात्य नीतिशास्त्र **5.1**-सुकरात का सद्गुण, **5.2-** प्लेटो : विवेक, न्याय, संयम **5.3**-अरस्तु:नैतिक एवं बौद्धिक सद्गुण	**12**	20
योग		**60**	**100%**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. मिश्र, डॉ. नित्यानंद. (2005). नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग),मोतीलाल बनारसीदास. 2. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश. (1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 3. वर्मा, डॉ. अशोक कुमार. (1977). नीतिशास्त्र के सिद्धान्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. 4. पांडेय, संगमलाल. (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 5. Panigrahi, S.C. (2006). Issues in Indian Ethics, Dept of SAP in Philosophy, Utkal University, Orissa. 6. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974). भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. 7. Maitra, S.K. (1978). The Ethics of the Hindu's, University of Calcutta. 8. William, Lillie. (1955). An Introduction to Ethics, allied Publisher, Indian Reprint. 9. Shanti, Joshi. (1963). Nitishastra, Rajkamal Prakashan Pvt Limited, Delhi.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय तर्कशास्त्र (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय तर्कशास्त्र (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 115

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

सभ्यता के विकास के साथ-साथ मनुष्य ने वाद-विवाद की पद्धति का भी आविर्भाव व विकास किया और शास्त्रीय प्रश्नों के सुलझाने के लिए प्रमाणों का सहारा लिया। प्राचीन भारत में 'शास्त्रार्थ' एक प्रकार की ऐसी ज्ञानवर्धक प्रतियोगिता थी, जिसमें विभिन्न पदों या पुरस्कारों के लिये विद्वानों का चयन किया जाता था। इन शास्त्रार्थों में वाद-विवाद का विषय चाहे कोई भी हो, किसी-न-किसी अंश में प्रमाणों का सहारा अवश्य लिया जाता रहा है। प्रमाणों के नाम पर ही उनके द्वारा उत्पन्न ज्ञान का नामकरण किया गया है। प्रमाता और प्रमेय के तद्वत् रहने पर भी यदि प्रमाण में परिवर्तन हो जाता है तो प्रमा का रूप ही परिवर्तित हो जाता है। किसी पदार्थ का ज्ञान अवसर के अनुसार प्रत्यक्ष, अनुमान आदि किसी भी प्रमाण से हो सकता है। प्रमाण के एक रहने और ज्ञेय के परिवर्तित होने पर भी ज्ञान के स्वरूप में परिवर्तन नहीं आता। प्रमाता के रूप 'क' की जगह 'ख' और प्रमेय के रूप में 'अ' के स्थान पर 'ब' होने पर भी प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा उत्पन्न ज्ञान का स्वरूप सदा एक सा ही रहेगा। ज्ञान जब तक प्रमाणित नहीं हो जाता, तब तक उसका कोई मुख्य नहीं है। अत: प्रमाण ज्ञान का साधकतम कारण होने के साथ ही ज्ञान को सत्यता से युक्त भी होना चाहिए। न्यायसूत्र के सोलह पदार्थों में प्रमाण की गणना सर्वप्रथम की गई है। न्याय को बाकी सभी शास्त्रों का प्रदीप भी इसी कारण माना गया है कि उनके विश्लेषण में प्रमाणों की पर्याप्त सहायता ली जाती है। प्रमाण मीमांसा का न्याय में इतना अधिक महत्त्व है कि उदयनाचार्य ने प्रमाण को साक्षात् शिव की तरह माना है और विश्वनाथ पंचानन ने प्रमाण को विष्णु के अर्थ में प्रयुक्त किया है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम(Course Learning Outcomes)

भारतीय दर्शनों में ही नहीं अपितु भारतीय वाङ्मय के सभी भेदोपभेदों में भी प्रत्यक्ष शब्द का अत्यधिक प्रयोग होता आया है। इसके साथ ही 'प्रत्यक्षे कि प्रमाणम्' जैसी कहावतों से भी यह स्पष्ट ही है कि न केवल बुद्धिजीवीवर्ग में अपितु आम जनसमाज में भी इस शब्द का पर्याप्त प्रचलन है. अंग्रेजी में प्रत्यक्ष' के लिए 'परसेप्सन' शब्द का व्यवहार किया जाता है। भारतीय ज्ञानमीमांसा पर विचार करने वाला शायद ही कोई आचार्य होगा, जिसने प्रत्यक्ष की चर्चा न की हो। न्यायशास्त्र में प्रत्यक्ष का प्रयोग प्रमा और प्रमाण, अर्थात् साधन तथा फल दोनों अर्थों में किया गया है। इस प्रकार के द्विविध अर्थ में अन्य प्रमाणों का प्रचलन नहीं है। उदाहरण के रूप में अनुमान प्रमाण है, किन्तु उससे उत्पन्न ज्ञान को अनुमिति कहते हैं। इसी प्रकार उपमान, उपमिति शब्द और शब्द के रूप में साधन और फल के लिए अलग-अलग शब्दों का व्यवहार पाया जाता है। पाश्चात्य तर्कशास्त्र के आचार्यों ने प्रत्यक्ष प्रमाण की समस्या पर अधिक ध्यान नहीं दिया। वे प्रत्यक्ष की प्रामाणिकता के विश्लेषण को संभवत: इसलिए अनावश्यक मानते हैं कि संसार भर में अपनी इन्द्रियों से उपलब्ध ज्ञान को कोई भी व्यक्ति झूठा नहीं मानता। किन्तु भारतीय दार्शनिकों का मत उनसे भिन्न है। भारतीय चिन्तकों ने प्रत्यक्ष प्रमाण पर भी उसी प्रकार विस्तार से विचार किया है, जिस प्रकार पाश्चात्य दार्शनिकों ने अनुमान पर किया है। वैसे भारत में भी कुछ ऐसे चिन्तक हुए हैं, जिन्होंने प्रत्यक्ष को प्रमाण नहीं माना और दूसरे शब्दों में कहा जाए तो प्रमाण नाम के किसी साधन का अस्तित्व ही स्वीकार नहीं किया। स्वयं गौतम ने न्यायसूत्र में ऐसे लोगों के मत की सांकेतिक चर्चा की है जो प्रत्यक्षसमेत किसी प्रमाण के अस्तित्व को मानने को तैयार नहीं हैं। जयराशिभट्ट (700 ई०) ने भी यह प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया कि प्रमाणों की सत्ता मानना व्यर्थ है। व्यावहारिक दृष्टिकोण से भी अनुमान के अस्तित्व का निषेध नहीं किया जा सकता। जयन्त भट्ट ठीक ही कहते हैं कि महापुरुषों से लेकर साधारण गड़रियों तक सभी लोग अनुमान का सहारा लेकर काम चलाते हैं, अनुमान का अपलाप करने पर तो प्रत्यक्ष प्रमाण से भी काम नहीं चल सकता, यानी लौकिक कार्यकलाप करने भी कठिन हो जायेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वरूप**	1. प्रत्यक्ष की परिभाषा 2. इन्द्रियाँ और उनके विपय (क) इन्द्रिय शब्द की व्युत्पत्ति (ख) इन्द्रिय की परिभाषा (ग) इन्द्रियाँ भौतिक या अभौतिक? (घ) इन्द्रियों की संख्या (1)	10	16

	ब्राण, (2) रसन, (3) चक्षु, (4) त्वक् (5) श्रोत, (6) मन (ङ) इन्द्रियों की प्राप्यकारिता 3. प्रत्यक्ष की प्रक्रिया में आत्मा का स्थान 4. प्रत्यक्ष की प्रक्रिया में मन की भूमिका		
मॉड्यूल-2 **प्रत्यक्ष के कुछ विशिष्ट विषय**	(क) अभाव का प्रत्यक्ष (ख) ज्ञान का प्रत्यक्ष इन्द्रियों का विषयों से सन्निकर्ष (क) लौकिक सन्निकर्ष-(1) संयोग, (2) संयुक्त (समवाय, (3) संयुक्त समवेत समवाय, (4) समवाय, (5) समवेत समवाय, (6) विशेषण विशेष्य भाव (ग) त्रिपुटी प्रत्यक्ष (ख) अलौकक सन्निकर्ष-(1) सामान्य लक्षण (2) ज्ञान लक्षण, (3) योगज	10	16
मॉड्यूल-3 **प्रत्यक्ष के भेद**	निविकल्पक प्रत्यक्ष का प्रमात्व प्रत्यक्ष प्रमाण के सम्बन्ध में भारतीय तथा पाश्चात्य संकल्पना प्रत्यक्ष प्रमाण की उपयोगिता	10	16
मॉड्यूल-4 **अनुमान प्रमाण का स्वरूप**	अनुमान की परिभाषा अनुमान (न्यायवाक्य) के अवयव अनुमान के भेद	10	16
मॉड्यूल-5 **अनुमान का तार्किक आधार**	व्याप्ति (क) व्याप्ति का अर्थ ख) व्याप्ति का लक्षण अनुमिति का करण (i) लिंग ज्ञान की करणता (ii) व्याप्तिज्ञान की करणता (iii) लिंग परामर्श की करणता	10	16
मॉड्यूल-6 **अनुमिति का मनोवैज्ञानिक आधार**	पक्षधर्मता अनुमिति का प्रतिबन्धक- उपाधि (i) उपाधि का अर्थ (ii) उपाधि-निरूपण का उद्देश्य हेतु और उसके प्रकार (क) हेतु की परिभाषा (ख) हेतु-रूपों की परम्पराएं (ग) हेतुओं के प्रकार हेत्वाभास अनुमान की उपयोगिता	10	16
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. B.K.Matilal, Epistemology, Logic and Grammar In Indian Philosophical Analysis., The Hague, Mouton, 1971. 2. Barlingay, S. S. : Tarka-Rekha (Hindi). 3. Shastri, S. S. : Vedanta Paribhasa (English Translation). 4. Musalgaonkar (ed) : Vedantaparibhasa (Hindi). 5. Datta, D. M. : Six ways of knowing. 6. Satprakasananda : Methods of Knowledge 7. Navya Nyaya System of logic: theories and techniques - Motilal Banarsidass, 1979
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

प्रशासनिक नीतिशास्त्र (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम: प्रशासनिक नीतिशास्त्र (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 116

क्रेडिट: 2

सेमेस्टर: I

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	30

पाठ्यचर्या विवरण: (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत विद्यार्थी प्रशासनिक नीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र के आयाम, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र, नीतिशास्त्र बनाम नैतिकता बनाम मूल्य, मानवीय मूल्य, महान विचारकों के जीवन एवं शिक्षा से संबंधित संदेश, समाज एवं संस्था में मूल्यों की समझ, कार्य, विचार एवं व्यवहार पर इसका प्रभाव, नैतिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण, सामाजिक प्रभाव एवं प्रोत्साहन, बुनियादी मूल्य सत्यनिष्ठा, निष्पक्षता, पक्षपात, वस्तुनिष्ठता, लोक सेवा के लिए समर्पण, सहानुभूति, धैर्य, कमजोर वर्ग के प्रति करुणा, गैरतरफदारी, शासन में ईमानदारी, शासन और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिशास्त्र की संहिता, व्यवहार का नियमन, नागरिक घोषणापत्र, सेवा कार्य की गुणवत्ता, लोकनिधि की उपयोगिता का अध्ययन कर सकेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

प्रशासनिक नीति शास्त्र पाठ्यचर्या को पढ़ कर विद्यार्थी आचारशास्त्र, लोकशास्त्र से परिचित हो सकेंगे। विद्यार्थी सामाजिक एवं प्रशासनिक मूल्यों से संबंधित मानदंड बना सकेंगे एवं इन मानदंडों का प्रयोग कर अपने शैक्षणिक एवं सामाजिक जीवन का विश्लेषण भी कर सकेंगे। इसके साथ-ही-साथ प्रशासनिक नीतिशास्त्र विषय विद्यार्थी के अंदर सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित करेगा। शासन में ईमानदारी, शासन और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, सरकार में पारदर्शिता, सूचना का अधिकार, नीतिशास्त्र की संहिता, व्यवहार का नियमन, नागरिक घोषणापत्र, सेवा कार्य की गुणवत्ता, लोक निधि की उपयोगिता के अध्ययन के उपरांत लोक सेवक अथवा प्रशासक के जीवन में निहित मूल्य की आवश्यकता एवं उसके महत्व को न सिर्फ समझेगा वरन् सामाजिक जीवन में लोक कर्तव्यों के निर्वहन में स्वयं के दायित्व सुनिश्चित करने में, मूल्य आधारित जीवन जीने में समर्थ बन पाएगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	प्रशासनिक नीतिशास्त्र के आयाम 1.1-व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संबंधों में नीति शास्त्र, 1.2-नीतिशास्त्र बनाम नैतिकता बनाम मूल्य, 1.3-मानवीय मूल्य, 1.4- महान विचारकों के जीवन एवं शिक्षा से संबंधित संदेश	**10**	**33**
मॉड्यूल-2	2.1-समाज एवं संस्था में मूल्यों की समझ, 2.2-कार्य,विचार एवं व्यवहार पर इसका प्रभाव, 2.3-नैतिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोण,सामाजिक प्रभाव एवं प्रोत्साहन	**5**	**17**
मॉड्यूल-3	बुनियादी मूल्य 3.1-सत्यनिष्ठा,निष्पक्षता, पक्षपात,वस्तुनिष्ठता, लोक सेवा के लिए समर्पण, 3.3-सहानुभूति,धैर्य,कमजोर वर्ग के प्रति करुणा, गैर तरफदारी	**5**	**17**
मॉड्यूल-4	शासन में ईमानदारी 4.1-शासन और ईमानदारी का दार्शनिक आधार, 4.2-सरकार में पारदर्शिता,	**10**	**33**

	4.3- सूचना का अधिकार 4.4-नीतिशास्त्र की संहिता 4.5- व्यवहार का नियमन 4.6- नागरिक घोषणापत्र, 4.7-सेवा कार्य की गुणवत्ता 4.8- लोक निधि की उपयोगिता		
योग		**30**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. मिश्र, डॉ. नित्यानंद. (2005). नीतिशास्त्र (सिद्धान्त तथा प्रयोग),मोतीलाल बनारसीदास. 2. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश. (1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धान्त, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 3. वर्मा, डॉ. अशोक कुमार. (1977). नीतिशास्त्र के सिद्धान्त, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. 4. पांडेय, संगमलाल. (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 5. अग्रहरि, सुनील., जैन, आर.के. नीतिशास्त्र, आरोही पब्लिकेशन, दिल्ली. 6. कमलदेव, नीतिशास्त्र, निर्माण पब्लिकेशन, नई दिल्ली. 7. नीतिशास्त्र, दृष्टि प्रकाशन, नई दिल्ली.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

पाश्चात्य भाषा-दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: पाश्चात्य भाषा-दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 121

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course):

पाश्चात्य भाषा दर्शन अनुभववाद की चरम परिणति है। वहाँ भाषा दर्शन के विषयों पर अनुभववादी दृष्टि मात्र से ही विचार किया गया है। वहाँ के दार्शनिकों ने तत्त्वमीमांसा के प्रत्याख्यान, भाषा की सार्थकता-निरर्थकता, नैतिक, धार्मिक कथनों तथा भावनाओं की अभिव्यक्ति से सम्बन्धित समस्याओं पर ही विचार किया है। राइल ने 'The concept of mind' में साधारण भाषा विश्लेषण के आधार पर यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि मन और शरीर का द्वैत श्रेणी परक 'भूल' का परिणाम है। देकार्त ने मन एवं शरीर की व्याख्या इस प्रकार की है जैसी कि मन शरीर रूपी यन्त्र में स्थित प्रेत हो। किन्तु यदि वास्तव में मानसिक शब्दों एवं सम्प्रत्ययों की तार्किक व्याख्या की जाय तो इस प्रकार का द्वैत समाप्त हो जाता है। इस द्वैत में निहित दोष को राइल श्रेणीपरक दोष कहते है। यद्यपि वह श्रेणी परक दोष का स्पष्ट विवेचन एवं समाधान प्रस्तुत नहीं करता पर उसका तात्पर्य यह है कि-'किसी तथ्य का अन्तर्भाव किसी ऐसी तार्किक श्रेणी में करना जो इसके लिये उपयुक्त नहीं है, श्रेणीपरक दोष है।मन के सम्बन्ध में इसे स्पष्ट करते हुए राइल कहता है कि यदि कोई व्यक्ति 'आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, देखने आता है और उसे विभिन्न कालेज, पुस्तकालय, सीनेटहाल आदि दिखा दिया जाता है और फिर वह पूछता है कि यह सब तो मैंने देख लिया किन्तु युनिवर्सिटी कहाँ है? तो वह व्यक्ति श्रेणीपरक दोष करता है क्योंकि यूनिवर्सिटी इन्हीं सबका समुच्चय है। इन सबसे भिन्न कुछ नहीं है। इसी प्रकार मानसिक सम्प्रत्ययों की व्याख्या मनुष्य की क्रियाओं एवं विचारों द्वारा होता है इसके लिये मन के रूप में एक अशरीरी द्रव्य की कल्पना करना (देकार्त की भांति) श्रेणीपरक दोष हैं। विटगेन्स्टाइन के अनुसार भाषा के सार्थकता की इकाई मरल तर्क वाक्य है और सरल तर्क वाक्य तथ्यों का चित्र है। विटगेन्स्टाइन के ऐसे विचार एक पत्रिका में प्रकाशित दुर्घटना के चित्र को देखने के परिणामस्वरूप अभिव्यक्त हुए हैं। रसेल ने भी अपनी पुस्तक 'Principle of Machanics' में कहा है कि किसी सिद्धान्त और सत्ता में चित्रात्मक सम्बन्ध होता है किन्तु यहाँ विटगेन्स्टाइन के 'चित्र' शब्द का प्रयोग फोटोग्राफ के अर्थ में नहीं हुआ है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):

भाषा-दर्शन, मनस, स्मृति, शब्द, अनुभूति, अभिव्यक्ति, पदार्थ वाक्यानुशासन, प्रत्ययन और अपरिहार्य कथनों और उनके आकारों और सम्बन्धों की विवेचना उनकी आन्तरिक पारस्परिकता का स्पष्टीकरण करते-करते करेगा। जैसा हमारा विशेष बल पिछले कुछ सुझावों में रेखांकित किया गया है, कि दर्शन समीक्षात्मक स्वरूपांकन होता है, उसके द्वारा अजित तथ्य फिर वे भले मनस या शब्द अथवा पदानुशासन के ही क्यों न हो केन्द्रीय दायित्व अथवा उसकी चिन्ता के विषय नहीं बन सकते। मनुष्य अर्थ और सम्प्रेषण को नियम (व्याकरण) और अनुभूति के सादृश्य की प्रस्थापना द्वारा ही बैठा पाता है। यह सारे के सारे समयोजन जो 'भाषा' के विपुल आयामों में पहचाने जाते हैं, न तो पूर्ण रूपेण ऐतिहासिक आकस्मिकताओं के संघात मात्र है, और न केवल परम्परागत अनुमत परामर्शो के संकलन। परन्तु इससे यह भी निष्कर्ष जो आदर्शवादी बुद्धिवादी चिन्तन की रुढ़ि बनता रहा है कि तत्त्व, वाक, मनस, अभिव्यक्ति, पद, कथन, अनुभूति एक मात्र पूर्वस्थिति चित अथवा सत के प्रकार है, भी एक त्रुटिपूर्ण रहस्यवाद होगा। फ्रेगे (Sense & Respence) ग्रहों की फेगे के अनुसार नाम एवं तर्क वाक्य दोनों में अर्थ एवं निर्देश दोनों होता है। तादात्म्य कथनों को सार्थक कथन बतलाने के लिए फ्रेगे ने यह विभेद किया है। नाम और तर्क वाक्य को पुनरुक्ति (Tautology) से बचाने हेतु वह ऐसा स्पष्टीकरण देता है। वह कहता है कि 'Morning Star is evening star' यहाँ दोनों Star का निर्देश (शुक्रतारा है) एक है किन्तु दोनों का अर्थ एक नहीं है। विटगेन्स्टाइन ने भी यह अन्तर स्वीकार किया है। फेगे के अनुसार नाम (Name) में केवल शब्द निर्देश (Reference) होता है शब्दार्थ नहीं (Sense) और इसी प्रकार Proposition (वाक्य) केवल शब्दार्थ (Sense) होता है, निर्देश (Reference) नहीं। यदि प्रत्येक वाक्य को निर्देश माना जाय तो कोई असत्य कथन होगा ही नहीं, क्योंकि असत्य कथनों में कोई निर्देश (Reference) नहीं होता। 'भाषा खेल' से सम्बन्धित विटगेन्स्टाइन के विचार उसकी परवर्ती रचना philosophical investigation में पाये जाते हैं। विटगेन्स्टाइन मानता है कि दार्शनिक समस्याएँ वास्तविक समस्याएँ नहीं है। ये तो मात्र भाषा के गलत प्रयोग के कारण उत्पन्न होती हैं। कुछ भाषायी प्रयोग इतने प्रचलित हैं और इतनी बार सहज रूप में आते हैं कि उनसे उत्पन्न कुछ भ्रान्तिपूर्ण धारणाओं के हम शिकार हो जाते हैं। वस्तुतः यह एक अन्ध विश्वास है। मानसिक व्याधि है। अतः यह समस्या का समाधान नहीं करना है वरन् एक प्रकार का उपचार करना है।

इसी समस्या का उपचार है भाषा खेल। भाषा खेल से तात्पर्य है कि हम भाषा के साधारण प्रयोगों को देखे और समस्या में जिस कथन पर विचार हो रहा है वैसा कथन किन-किन परिस्थिति में किस-किस ढंग से हम प्रायः व्यवहृत करते हैं, इसका भी निरीक्षण करें। इससे यह स्पष्ट होता है कि

समस्या भ्रान्ति पर आधारित थी और जब यह स्पष्ट हो जाता है कि समस्या भ्रान्ति पर आधारित थी तो समस्या रहती ही नहीं। विट्गेन्स्टाइन का कहना है कि दार्शनिक समस्या एक बोतल में फंसी हुई मक्खी के भनभनाने की आवाज जैसी है। दार्शनिक 'भाषा खेल' मक्खी को बोतल से बाहर उड़ा देता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1 **समकालीन पाश्चात्य भाषीय दर्शन**	**समकालीन पाश्चात्य भाषीय दर्शन** 1. प्रारंभिक विट्गेन्स्टाइन 2. तार्किक अणुवाद 3. अर्थ का चित्रण सिद्धान्त 4. कथनीयता एवं दर्शनीयता 5. दर्शन का स्वरूप एवं कार्य	10	17
मॉड्यूल-2 **उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन**	**उत्तरकालीन विट्गेन्स्टाइन** 1. आदर्श से साधारण भाषा में विभेद 2. अर्थ एवं प्रयोग 3. भाषा खेल सिद्धान्त 4. व्यक्तिगत भाषा	10	17
मॉड्यूल-3 **जे.एल. अस्टिन का भाषा-चिंतन**	**जे.एल. अस्टिन का भाषा-चिंतन** 1. स्थिरार्थक एवं संपादनात्मक कथन 2. सफल संपादनात्मकता के निकष 3. वाक्-क्रिया सिद्धान्त	10	17
मॉड्यूल-4 **गिल्बर्ट राइल का भाषा-चिंतन**	**गिल्बर्ट राइल का भाषा-चिंतन** 1. व्यवस्थित रूप से भामक प्रकथनों के प्रकार-छद्म सत्तात्मक कथन, छद्म (भ्रामक) सामान्यपरक कथन, छद्म वर्णनात्मक कथन, राइल के प्रकथन संबन्धित निष्कर्ष 2. कोटियाँ एवं कोटिपरक भूले 3. वैचारिक द्विविधाएँ	10	17
मॉड्यूल-5 **वी.एफ. स्ट्रासन का भाषा-चिंतन**	**वी. एफ. स्ट्रासन का भाषा-चिंतन** 1. व्यक्ति की अवधारणा 2. विवरणात्मक एवं परिकल्पनात्क तत्त्वमीमांसा में विभेद 3. प्राथमिक विशेष एवं उनकी पहचान	10	16
मॉड्यूल-6 **डब्लू. बी. ओ. क्वाइन का भाषा-चिंतन**	**डब्लू. वी. ओ. क्वाइन का भाषा-चिंतन** 1. अनुभववाद की दो रूढ़ियाँ 2. उत्कट अनुभववाद की समस्या	10	16
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Korner, S. : Kant 2. Smith, N K : Philosophy of David Hume 3. D. J. O' Connor (ed.) : A critical History of Western Philosophy (New York 1964).

		4. Willis Doney (ed.) Descartes : A collection of Critical Essays (Doubleday New York 1967). 5. F. E. Baird and W. Kaufmann (ed.) : Modern Philosophy (Prentice-Hall inc. 1997) 6. Steven Nadler (ed.) A companion to Early Modern Philosophy (Black well Publisher – Ltd. 2002). 7. Korner, S. : Fundamental questions in Philosophy 8. John Hospers : An Introduction to Philosophical Analysis. 9. Titus ; H.H. : Living issues in Philosophy. 10. Eving, A.C. ; Fundamental questions of Philosophy. 11. Russell, B. : Problems of Philosophy. 12. Black, Max : Companion to Wittgenstein's Tractatus. 13. Pitcher, George : The Philosophy of Wittgenstein. 14. Pandey, R. P. : Tractatus (Hindi Translation). 15. Warnock, M.: Philosophy of Sartre. 16. Dwivedi, D. N. : Study of Wittgenstein's Philosophy. 17. Wittgenstein : Philosophical Investigations
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 122

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण: (Description of Course)

दर्शन दार्शनिक के अनुभवों का साभिप्राय एवं सप्रयोजन विवेचन है। एक दार्शनिक अन्तर्दृष्टि वह दृष्टि है जिससे दार्शनिक जीवन और जगत् को देखता है और उसका मूल्यांकन करता है। यह एक प्रकार की सुव्यवस्थित वैचारिक संरचना है। दार्शनिक यह सुव्यवस्थित वैचारिक संरचना जीवन और जगत् को अपने दार्शनिक प्रयोजनों के अनूकूल बनाने के लिये करता है। यह सुव्यवस्थित व्यक्ति केन्द्रित संरचना इसलिये सम्भव होती है, क्योंकि जगत् में वस्तुयें वैकल्पिक वैचारिक संरचनाओं का प्रतिरोध नहीं करती हैं। 'जगत् अनेकार्थक है'-यह विविध दार्शनिक विचारों की मूलभूत पूर्वमान्यता है। 'जगत्' अपनी सम्पूर्णता में हमारे समक्ष प्रदत्त नहीं होता, केवल वस्तुयें, घटनायें, प्रक्रियायें ही हमारे समक्ष प्रदत्त होती हैं। 'जगत्' एक अभिधारणा मात्र है, जो केवल तत्त्वमीमांसीय परिकल्पना में ही अस्तित्ववान होने के कारण अनेकार्थक हो सकता है और विभिन्न तत्त्वमीमांसीय प्रयोजनों एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिये विभिन्न लोगों के लिये विभिन्न रूपों में अर्थवान हो सकता है। 'जगत्' एक बौद्धिक प्रत्यय या एक तत्त्वमीमांसीय अभिधारणा है, जिसकी संरचना हम अपने जीवन में वस्तुओं के साथ अपनी क्रिया, प्रतिक्रिया के आधार पर करते हैं। एक ही वस्तु विभिन्न लोगों द्वारा विभिन्न रूपों में देखी और समझी जाती है या देखी और समझी जा सकती है। 'जगत्' अनेकार्थक होने के कारण भिन्न-भिन्न लोगों में भिन्न-भिन्न प्रतिक्रियायें उत्पन्न करने में समर्थ होता है और इसके परिणाम स्वरूप वैकल्पिक दार्शनिक विचार अस्तित्व में आते हैं। व्यक्ति द्वारा जीवन और जगत् को देखने औरउसका मूल्यांकन करने के जितने परिप्रेक्ष्य हो सकते हैं उतने प्रकार के ही दार्शनिक विचारों की संरचना की संभावना बनती है और यही दर्शन में वैविध्य का कारण है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

दर्शन और तत्त्वमीमांसा ये दर्शन पद एक अर्थ में प्रयुक्त हुए प्रतीत होते हैं। बहुलांश में ऐसा है भी। हमारा मानना है कि कोई विचार शून्य में उत्पन्न नहीं होता। उसका कोई न कोई आनुभविक आधार होता ही है। यहाँ तक कि तार्किक अणुवाद विशेष, सम्बन्ध और गुण की बात करता हैं। वह तथ्यों की बात करता है जोकि भाषा से इतर यथार्थ (घटक) हैं। इस तरह उसमें भी एक सुव्यवस्थित तत्त्वमीमांसा का प्रतिपादन होता है जिसे न्यायवैशेषिक के परमाणुकारणवाद के आकार में समझा जा सकता है। न्यायवैशेषिक भी भाषा को अत्यधिक महत्त्व देता है, उसके अनुसार जो अभिधेय है वही पदार्थ है। भाषा यथार्थ की अनुक्रमणिका है। तार्किक भाववाद तत्त्वमीमांसा का निराकरण करता है और उसके निराकरण का आधार अनुभववाद है। इसे चार्वाकों के भौतिकवाद, प्रत्यक्षवाद के आकार में समझा जा सकता है। नीतिशास्त्र मूल्यों की बात करता है किन्तु यदि तथ्य न हों त¨ मूल्यों की संरचना करना असंभव हो जायेगा। बुद्धि सापेक्षिक अवधारणाओं की ही संरचना करती है। वह निरपेक्ष अवधारणा नहीं संरचित कर सकती। तत्त्वमीमांसा में भी वर्तमान जीवन औरजगत् से असन्तुष्ट होकर ही तत्त्वमीमांसक एक ऐसे जीवन औरजगत् की संरचना करता है जिसमें उसे आत्म परित¨ष प्राप्त होता है। तत्त्वमीमांसक यह नहीं कहता कि जीवन औरजगत् यथार्थतः ऐसा है वरन् जब वह जीवन और जगत् के बारे में विचार प्रस्तुत करता है तो उसका वास्तविक तात्पर्य यह होता है कि हमें (उसे) ऐसा जीवन और जगत् चाहिए। अतएव दर्शन नियामक होता है, विवरणात्मक नहीं होता और इसकी भाषा अभिव्यक्तात्मक होती है। दर्शन बौद्धिक विलास मात्र नहीं होता क्योंकि यह एक जीवन पद्धति देता है जिसे अपना कर आध्यात्मिक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। दर्शन का केवल आध्यात्मिक मूल्य होता है। यह समझना कि दर्शन हमारे आनुभविक प्रयोजनों को सिद्ध करता है, उसके सारभूत (स्वभाव) स्वरूप को न समझना है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**तत्त्वमीमांसा की मूल संकल्पनाएँ-** भौतिकवाद या जड़वाद अध्यात्मवाद	12	20

	द्वैतवाद अद्वैतवाद वस्तुवाद		
मॉड्यूल-2	**जगत् -मीमांसा** परमाणुवाद प्रकृति मायावाद	12	20
मॉड्यूल-3	**ईश्वर-मीमांसा** ईश्वर का स्वरूप ईश्वर-सिद्धि हेतु तर्क – (i) योग मत (ii) न्याय-वैशेषिक मत ब्रह्म की अवधारणा	12	20
मॉड्यूल-4	**कार्यकारण-मीमांसा** प्रतीत्यसमुत्पाद सत्कार्यवाद असत्कार्यवाद विवर्तवाद	12	20
मॉड्यूल-5	**आत्मतत्त्व-मीमांसा** आत्मा की अवधारणा चार्वाक दर्शन में आत्मतत्त्व जैन दर्शन में आत्मतत्त्व बौद्ध दर्शन में आत्मतत्त्व सांख्य दर्शन में आत्मतत्त्व न्याय-वैशेषिक दर्शन में आत्मतत्त्व अद्वैतवेदान्त दर्शन में आत्मतत्त्व	12	20
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Rajendra Prasad : Darsanasastra ki Ruprekha. 2. Misra, H. N. : Paschatya Darsana ki Samasyayen (Hindi). 3. Herman, A. L. : The Problem of Evil and Indian Thought. 4. O'Flaherty, W. D. : Karma and Rebirth in Classical Indian Traditions. 5. Naulakha, R. S. : Sankara's Brahmavada. 6. Rao, K. B. R. : Ontology of Advaita 7. Sharma, C. D. : Bauddha Darsana aur Vedanta (Hindi). 8. Das, R. : Introduction to Sankara. 9. Stcherbatsky, Theodore : The conception of Buddhist Nirvana. 10. Murti, T. R. V. : The Central Philosophy of Buddhism. 11. Misra, R. K. : Levels of Madhyamika Thought. 12. Misra, H. N. : Madhyamika Darsana (Hindi). 13. Singh, Jaidev : Pratyabhijnahrdayam

		14. Kripa Shanker : Yuktidipika Ka eka Samiksatamaka Adhyayana 15. Urmila Chaturvedi : Vijnanabhiksu Aur Samkhya Darsana 16. Mahendra Kumar : Jain Darsana. 17. Mohan Lal Mehta : Jain Darsana. 18. Radhakrishnan, S. : An Idealist view of Life. 19. Pandey, G. C. : Bauddha Dharma ke Vikasa ka Itihasa
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 123

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या "पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं" के अंतर्गत विद्यार्थी तत्त्वमीमांसा की अवधारणा, तत्त्वमीमांसा की प्रकृति एवं इसकी समस्याएं, तत्त्वमीमांसा की आवश्यकता, कारणता सिद्धांत: नियमितता का सिद्धांत, अनुलग्नता का सिद्धांत, क्रियात्मक सिद्धांत, सार्वभौम एवं विशेष, सार्वभौम की अवधारणा, विशेष की अवधारणा, यथार्थवाद, नामवाद, अवधारणावाद, आत्मा की अवधारणा (प्लेटो और अरस्तू), अनन्यता का सिद्धांत, व्यक्ति सिद्धांत, द्विपक्षीय सिद्धांत, अंतरक्रियावाद, मन- शरीर समस्या, ईश्वरनिमित्तवाद, भौतिकवादी सिद्धांत, दार्शनिक व्यवहारवाद, समानांतरवाद का अध्ययन करेंगे।

6.अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत पाश्चात्य दर्शन की तत्त्वमीमांसीय समस्याएं विषय का संप्रत्यय स्पष्ट कर पाएंगे। तत्त्वमीमांसा की परिभाषा समझने साथ ही पाश्यात्य दर्शन के अंतर्गत तत्त्वमीमांसा के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालने की स्थिति में होंगे। पाश्चात्य दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों की समझ को विकसित कर उसकी मूल प्रवित्तियों की पहचान कर सकेगा। इस विषय का दार्शनिक विवेचन करते हुये वर्तमान में इसके महत्व को रेखांकित करने की स्थिति में होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1 -तत्त्वमीमांसा की अवधारणा, 1.1- तत्त्वमीमांसा की प्रकृति एवं इसकी समस्याएं 1.2- तत्त्वमीमांसा की आवश्यकता 1.3 - कारण कार्य भाव अथवा कारणता	**10**	**17**
मॉड्यूल-2	2.1 कारणता सिद्धांत 2.2- नियमितता का सिद्धांत 2.3- अनुलग्नता का सिद्धांत 2.4- क्रियात्मक सिद्धांत 2.4 – सामान्य एवं विशेष सामान्य की अवधारणा, विशेष की अवधारणा 2.5 नामवाद, वास्तववाद, अवधारणावाद	**10**	**17**
मॉड्यूल-3	3.1- सार्वभौम एवं विशेष 3.2- सार्वभौम की अवधारणा 3.3- विशेष की अवधारणा 3.4- यथार्थवाद 3.5- नामवाद, अरस्तू की द्रव्य की अवधारणा 3.6- अवधारणावाद 3.7 – अनुभववाद, समीक्षावाद	**10**	**16**

मॉड्यूल-4	4.1-आत्मा की अवधारणा (प्लेटो और अरस्तू) 4.2- अनन्यता का सिद्धांत 4.3- व्यक्ति सिद्धांत 4.4- द्विपक्षीय सिद्धांत 4.4- अंतरक्रियावाद 4.5- मन- शरीर समस्या	**15**	**25**
मॉड्यूल-5	5.1- निमित्तेश्वरवाद 5.2- भौतिकवादी सिद्धांत 5.3- दार्शनिक व्यवहारवाद 5.4- समानांतरवाद 5.5- पहचान सिद्धांत 5.6- तादात्म्य सिद्धांत 5.7- प्लेटो और अरस्तू आत्मा विचार	**15**	**25**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Ewing, A.C. (1984).The Fundamental Questions of Philosophy, Allied Publishers, New Delhi. 2. Grayling, A.C. (1996). Philosophy : A guide through the subject, O.U.P. 3. Patrick, G.T.W. (1978). Introduction to philosophy, Surjeet Publications, Delhi. 4. प्रसाद, राजेन्द्र. (1993). दर्शनशास्त्र की रूपरेखा, शुक्ला बुक डिपो, पटना. 5. तिवारी, के.एन. (1986). तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा, एम.एल.बी.डी.दिल्ली. 6. Taylor, Richard. (1994) .Metaphysics, Prentice-Hall of India Private Ltd., New Delhi. 7. Conee, E., and Sider, T. (2005) .Riddles of Existence, Clarendon Press, Oxford. 8. आर.एस., भटनागर. (1987). दार्शनिक समस्या, तत्त्वमीमांसा, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर. 9. Heil, John (2002). Philosophy of Mind : A Contemporary Introduction, Routledge, London.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

संस्कृति-दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : संस्कृति-दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 124

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

संस्कृति के साथ जब 'भारतीय' विशेषण लग जाता है तो यहाँ स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि किसी खास भौगोलिक सीमा में बँधी हुई संस्कृति जो विश्व की अन्य संस्कृतियों से स्वयं को पृथक् करती हो। संस्कृति के साथ भारतीयता उसे विशिष्ट बना देती है। भारतीय संस्कृति के सम्बन्ध में एक बहु-प्रचलित विचारधारा है कि विश्व की अन्य संस्कृतियों की तुलना में यह अन्तर्मुखी, आध्यात्मिक एवं सहिष्णुता के गुणों को धारण करने वाली संस्कृति है। भक्ति, ज्ञान एवं कर्म इसके तीन प्रमुख सोपान है। परन्तु इतने मात्र कह देने से भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण रूप हमारे समक्ष उपस्थित नहीं होता। इसकी सम्पूर्णता एवं व्यापकता के संज्ञान हेतु दो स्तर पर प्रमाणों का परीक्षण आवश्यक है। प्रथम तो हमारे प्राचीन शास्त्रों एवं साहित्यों का प्रमाण जो कालखण्ड के दृष्टिकोण से ऐतिहासिक साक्ष्यों से कतिपय बिन्दुओं पर मतभिन्नता रखते हैं। द्वितीय, वे इतिहास एवं आधुनिक व्याख्याओं के स्रोत हैं जो भारतीय संस्कृति की पुरातनता, सातत्यता एवं उसके स्वरूपों पर प्रकाश डालते हैं। भारतीय संस्कृति में एक अविच्छिन्नता है, इसका कारण है कल्पना और यथार्थ का लगभग सरूप आदर्श प्रस्तुत कर, समाज का व्यवस्थापन तथा उसको उदात्त लक्ष्य की ओर प्रेरित करना। भारतीयता की इस शाश्वत विकास-यात्रा का रहस्य, मानव के आचार-व्यवहार का यथासम्भव सीमा तक सुव्यवस्थापन, तर्क एवं श्रद्धा का समन्वय कर, सन्तुलित और सोद्देश्य जीवन-प्रणाली की स्थापना में है। भारतीयता एक सनातन यात्रा है, एक अमृत पंथ है, जो अनादि से अनन्त तक विस्तृत है। भारत की आत्मा या भारतीयता को मात्र इतिहास के दिशा-सन्दर्भो में नहीं समझा जा सकता, क्योंकि भारतीय संस्कृति का इतिहास घटनाओं और तथ्यों का पुञ्ज मात्र नहीं है। प्रत्येक घटना, प्रत्येक काल का इतिहास एक मूल्यदृष्टि का सृजन करता है जो देशानुकूल, कालानुकूल व्यावहारिक परिवर्तनों के साथ ही सत्य की खोज एवं उसकी प्राप्ति के आग्रह से युक्त हो। सर्वतोभावेन लोकमंगल के लिए प्रयासरत समष्टि जीवन का मूल्याधिष्ठिति स्वरूप प्रस्तुत करता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विशाल एवं उदात्त जीवन-पद्धति होने के नाते भारतीय संस्कृति को एक विशेष प्रकार की अमूर्तता प्राप्त हो जाती है। जगत् में मनुष्य का कोई व्यापार या व्यवहार नितान्त एकाकी एवं अन्य से नितान्त अलग क्रिया नहीं है। किन्तु इस मान्यता के कारण अनेक दृष्टियाँ या मत सम्भव हैं, यद्यपि यह भी भारतीय संस्कृति का एक वैशिष्ट्य ही है कि इसमें मनुष्य को अपनी दृष्टि के निर्माण का व्यापक स्वातन्त्र्य प्राप्त है। किन्तु सामान्य बोध की दृष्टि से भारतीय संस्कृति के कुछ अवधारणात्मक सम्प्रत्ययों को अवश्य गिनाया जा सकता है। जो समग्र भारतीय संस्कृति के मानदण्ड के रूप में-समझे जाएं और भारतीय दृष्टि से सुसंगत मानव व्यवहार में इसका प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सके। इस दृष्टि से कुछ प्रमुख अवधारणाएं निम्नवत् हैं-1. जीवन की पूर्णता एवं इस जीवन की नश्वरता का बोध, 2. कर्म के प्रति जोर तथा नैतिक सिद्धान्तों की सर्वव्यापिता, 3. मानव मात्र की एकात्मता में विश्वास, 4. उत्तरदायित्व की पवित्रता, 5. करुणा का आदर्श, 6.मनुष्य की सर्वविध उन्नति पर जोर,7. भू-सांस्कृतिक राष्ट्रीयता।

इस पाठ्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं -

- सीखने वालों में प्रेम की भावना और राष्ट्र के प्रति अपनेपन की भावना विकसित करना।
- देश की गौरवशाली संस्कृति और समृद्ध विरासत के बारे में ज्ञान प्रदान करना।
- दर्शन, विज्ञान, कला, संगीत, वास्तुकला आदि के क्षेत्रों में हमारे पूर्वजों के महान योगदान से शिक्षार्थियों को परिचित कराना।
- भारत में विभिन्न धर्मों में अंतर्निहित एकता के साथ शिक्षार्थियों को परिचित करने के लिए और अन्य विविधताओं में एकता।
- दुनिया के विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति के प्रभाव से शिक्षार्थियों को परिचित कराना।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**भारतीय संस्कृति: लक्षण और विशेषताएं** 1.1 संस्कृति: अर्थ और घटक 1.2 संस्कृति तथा सभ्यता में भेद 1.3 भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषताएं 1.4 मानव जीवन में संस्कृति का महत्त्व	8	13
मॉड्यूल-2	**भारतीय संस्कृति का एतिहासिक संदर्भ** **2.1 प्राचीन भारत** 2.1.1 सिंधु-सरस्वती सभ्यता का सांस्कृतिक महत्त्व 2.1.2 वैदिक संस्कृति 2.1.3 धार्मिक सुधार- बौद्धधर्म व जैनधर्म **2.2 मध्यकालीन भारत** 2.2.1 मुगलों का सांस्कृतिक प्रभाव / इंडो-मुगल संस्कृति 2.2.2 भक्ति आंदोलन का सांस्कृतिक प्रभाव 2.2.3 नए आस्थाओं का उदय **2.3 आधुनिक भारत** 2.3.1 पश्चिम का भारत पर सांस्कृतिक प्रभाव 2.3.2 सामाजिक और धार्मिक सुधारों का सांस्कृतिक महत्त्व 2.3.3 राष्ट्रीय आंदोलनों का सांस्कृतिक प्रभाव	8	13
मॉड्यूल-3	**भारतीय संस्कृति का भाषायी व साहित्यिक संदर्भ** 3.1 वैदिक साहित्य 3.2 संस्कृत साहित्य 3.3 पालि एवं प्राकृत साहित्य 3.4 तमिल / संगम साहित्य 3.5 फारसी तथा उर्दू साहित्य 3.6 आधुनिक हिन्दी का सांस्कृतिक प्रभाव	8	13
मॉड्यूल-4	**भारतीय संस्कृति का धार्मिक एवं दार्शनिक संदर्भ** 4.1 वैदिक धर्म 4.2 वैष्णव, शैव व शाक्त मत 4.3 सूफी मत 4.5 वैदिक दर्शन 4.6 अवैदिक दर्शन	**8**	13
मॉड्यूल-5	**भारतीय संस्कृति का कलात्मक बोध** 5.1 प्रदर्शन कला- संगीत, नृत्य, नाटक और लोक कला 5.2 चित्र कला 5.3 मूर्ति कला 5.4 स्थापत्य कला	**8**	13
मॉड्यूल-6	**भारतीय शिक्षा-प्रणाली का सांस्कृतिक वैविध्य** 6.1शिक्षा का सांस्कृतिक उद्देश्य 6.2 भारतीय मूल्य प्रणाली शिक्षा- 'पुरुषार्थ' और 'आश्रम' तथा 'ऋणों' की अवधारणा 6.3 प्राचीन भारत में प्रसिद्ध केंद्रों की शिक्षा एवं उनका सांस्कृतिक	**8**	**13**

	महत्त्व-तक्षशिला, नालंदा, वल्लभी, विक्रमशिला, काशी, नादिया, मिथिला 6.4 मुगल काल में शिक्षा - मुस्लिम शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं 6.5 ब्रिटिश नियम के तहत शिक्षा - ईसाई मिशनरियों द्वारा वर्चस्व, अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य 6.6 शिक्षा विभागों की स्थापना, उच्च शिक्षा, शिक्षा के क्षेत्र में कुछ उल्लेखनीय विकास		
मॉड्यूल-7	**भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सांस्कृतिक अवदान** 7.1 प्राचीनकालीन विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का सांस्कृतिक महत्त्व- नक्षत्र विज्ञान, गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, औषधि विज्ञान, धातु विज्ञान, कृषि विज्ञान, शल्य चिकित्सा, आयुर्वेद व योग 7.2 आधुनिक प्रौद्योगिकी का सांस्कृतिक महत्त्व	**6**	**11**
मॉड्यूल-8	**भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार एवं प्रभाव** 8.1 दर्शन एवं धर्म के माध्यम से प्रसार एवं प्रभाव 8.2 व्यापारियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का से प्रसार एवं प्रभाव 8.3 शिक्षकों, दूतों और मिशनरियों के माध्यम से संस्कृति का प्रसार एवं प्रभाव 8.4 श्रम (गिरमिटिया) का सांस्कृतिक महत्त्व	**6**	**11**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. दिनकर, सिंह रामधारी, संस्कृति के चार अध्याय 2. Nilakanta Sastri, K.A. (2002) [1955]. A history of South India from prehistoric times to the fall of Vijayanagar. नई दिल्ली: Indian Branch, Oxford University Press. 3. Narasimhacharya, R (1988) [1988]. History of Kannada Literature. नई दिल्ली, Madras: Asian Educational Services. 4. Kamath, Suryanath U. (2001) [1980]. A concise history of Karnataka: from pre-historic times to the present. Bangalore: Jupiter books. 5. पवन के.वर्मा बीइंग इंडियन: इनसाइड द रियल इंडिया 6. वी एस नाइपौल India: A Million Mutinies Now 7. मंजरी उईल, भारतीय संस्कृति पर विदेशी प्रभाव
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

गीता का दर्शन (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : गीता का दर्शन (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड :MAPHIL 125

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

भगवद्गीता भारतीय विचारधारा का एक अत्यन्त लोकप्रिय दार्शनिक, धार्मिक एवं नैतिक काव्य है। यह महाभारत के 'भीष्म पर्व' का एक भाग है। भारतीय जनमानस में इसकी जड़ें अत्यन्त गहरी हैं। गीता को सभी उपनिषदों का निचोड़ कहा जाता है। गीतामाहात्म्य में कहा गया है कि 'सभी उपनिषद् गाय हैं और कृष्ण दूध निकालने वाले (दोग्धा) हैं। अर्जुन बछड़ा है और उससे निकलने वाला दूध गीता रूपी अमृत है। सुधी जन दुग्ध पान करने वाले हैं। वेदान्त दर्शन की प्रस्थानत्रयी' में इसे समादरणीय स्थान प्राप्त है। इसे वेदान्त दर्शन का 'स्मृति-प्रस्थान' कहा जाता है। गीता के सम्बन्ध में समय-समय पर अनेक प्रश्न उठते रहे हैं और इसके मुख्य उपदेश के विषय में तो इसके व्याख्याकारों में पर्याप्त विवाद भी रहा है। किन्तु इस मतभिन्नता का कोई भी प्रभाव गीता की लोकप्रियता पर नहीं पड़ा है। डा० राधाकृष्णन का यह कथन उचित ही प्रतीत होता है कि 'मानव मन पर किसी ग्रन्थ का कितना अधिकार है, यदि इसे किसी ग्रन्थ की लोकप्रियता की कसौटी माना जाय तो गीता को भारतीय विचारधारा में सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रन्थ कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है'। यह केवल आचारमीमांसा का ही ग्रन्थ नहीं है, अपितु तत्त्वमीमांसा का भी ग्रन्थ है। चूँकि यह एक नैतिक समस्या पर विचार करती है, अतः इसके द्वारा समय-समय पर तत्त्वमीमांसीय प्रश्नों को स्पर्श कर लेना अस्वाभाविक भी नहीं है। इसने संवाद शैली में उपरोक्त समस्या का समाधान करने का प्रयास किया है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

गीता के निष्काम कर्मयोग की उपयोगिता आज भी निर्विवाद है। कर्म को अकर्म से श्रेयस्कर बताते हुये निष्काम भाव से कर्तव्य-कर्म के सम्पादन आदेश गीता की अपनी सार्वभौम विशेषता है। वर्तमान भारतीय परिवेश में, जबकि सर्वत्र भ्रष्टाचार और अनाचार का बोलबाला है, निष्काम कर्मयोग की उपयोगिता और भी बढ़ गयी है। उल्लेखनीय है कि राजनीति और प्रशासनिक सेवाएं समाज-सेवा के साधन हुआ करती हैं, किन्तु आज इनकी विश्वसनीयता सन्दिग्ध है और समाज-सेवा का साध्य अप्राप्य हो गया है। यदि कम से कम हमारा वर्तमान नेतृत्व और सेवा-संवर्ग ही निष्काम भाव से योजनाओं का निर्माण एवं कार्यान्वयन करें तो लोक-सेवा का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है, स्वातन्त्र्य आन्दोलन के सपने को साकार किया जा सकता है और भ्रष्टाचार की देशव्यापी समस्या से देश मुक्त हो तात्पर्य यह है कि भ्रष्टाचारमुक्त समाज के निर्माण में निष्काम कर्मयोग का आदर्श आज भी समीचीन है। गीता की यह शिक्षा आज भी मूल्यवान है कि अपना हित चाहने वाले व्यक्ति को अपने संकीर्ण स्वार्थपरक आवेगों को जीतना होगा। काम, क्रोध, लोभ आदि पर विजय प्राप्त करने की शिक्षा आज भी लोकहितकारी है। पुनः, विभिन्न भाष्यकारों द्वारा समय-समय पर गीता पर लिखे गये भाष्यों की विविधता इसकी प्रासंगिकता का ही द्योतक है। तात्पर्य यह है कि गीता की अमर शिक्षा की उपयोगिता आज भी उतनी है है जितनी अतीत में कभी थी।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	सामान्य परिचय ईश्वर-विचार ईश्वरसाक्षात्कार का साधन - योगमार्ग लोकसंग्रह और स्वधर्म	15	25

मॉड्यूल-2	स्थितप्रज्ञ की अवधारणा अहंकार रहित कर्म करना ही कर्मयोग है अनासक्त कर्म ही कर्मयोग है निष्काम कर्म ही कर्मयोग है गीता के कर्मयोग की विशेषता	15	25
मॉड्यूल-3	योग विचार कर्मयोग गीता का कर्मयोग भक्तिपूर्ण कर्मयोग है ज्ञानयोग भक्तियोग	15	25
मॉड्यूल-4	शरणागत भक्त ही श्रेष्ठ योगी है गीता की प्रासंगिकता	**15**	25
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. The Bhagavadgita (English Translation by S. Radhakrishnan) 2. The Bhagavadgita (English Translation by Swami Cidbhavananda) 3. Tilak, B. G. : Gita Rahasya. 4. Bhave, Vinoba : Gita Pravacana
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

योग दर्शन (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : योग दर्शन (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 126

क्रेडिट : 2

सेमेस्टर :II

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	30

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत अष्टांग योग अर्थात योग के आठ अंग जिन्हें महर्षि पतंजलि ने योग की समस्त विद्याओं को आठ अंगों में श्रेणीबद्ध किया है, यह आठ अंग हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि तथा जैन दर्शन में योग, बौद्ध दर्शन में योग, हठयोग, राजयोग, नाथ संम्प्रदाय में योग, हठयोग, क्रियायोग, ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग-जैसे योग के महत्त्वपूर्ण आयामों का अध्ययन विद्यार्थी करेगा।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

वर्तमान समय में समूचे विश्व में योग की महत्ता को स्वीकार किया जा रहा है ऐसे में योगदर्शन के अध्ययन से विद्यार्थी में योग के मूल विषयों की समझ के साथ ही उसके जीवन में एक अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित होगा जिससे उसके व्यक्तित्व पर सकारात्मक प्रभाव पड़ने के साथ ही उसमें कार्यकुशलता आएगी। चित्तवृत्तियों के निरोध में मदद मिलेगी। विद्यार्थी को ध्यान केन्द्रित करने एवं चित्त और शरीर के विक्षेप दूर करने में सहायता मिलेगी। विद्यार्थियों में 'ऋत' की उपलब्धि हेतु भी योग दर्शन का अध्ययन लाभकारी रहेगा। वर्तमान समय में योग की वैश्विक स्वीकृति एवं इससे होने वाले समस्त लाभ से छात्र परिचित हो सकेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**योग की विभिन्न भारतीय परंपराओं का परिचय** 1.1-योगविद्या के सनातन स्रोत-'वेद' 1.2- उपनिषदों में योग और उसकी साधना 1.3- स्मृतियों में योगशिक्षा 1.4- पुराणों में योगचर्या 1.5- योगवासिष्ठ में योगसाधना	5	17
मॉड्यूल-2	**अष्टांग योग** 2.1- यम 2.2- नियम 2.3- आसन 2.4- प्राणायाम 2.5- प्रत्याहार 2.6- धारणा 2.7- ध्यान 2.8- समाधि	5	17
मॉड्यूल-3	**जैन एवं बौद्ध दर्शन योग** 3.1- जैन दर्शन में योग 3.2 -बौद्ध दर्शन में योग	**5**	17

मॉड्यूल-4	**नाथ संम्प्रदाय में योग** 4.1- हठयोग 4.2- मंत्रयोग 4.3- लययोग	**5**	17
मॉड्यूल-5	योग की प्रमुख भारतीय परंपराएँ 5.1- क्रियायोग 5.2- राजयोग 5.3- ज्ञान योग 5.4- भक्ति योग 5.5- समग्र योग	**5**	16
मॉड्यूल-6	योग द्वारा व्याधि निवारण की संभावनाएँ-	**5**	16
योग		**30**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Gupta, S.N. Das. (1974). Yoga Philosophy in Relation to other systems of Indian Thought, MLBD. 2. Gupta, S.N. Das, (1922). History of Indian Philosophy, Vol-V Cambridge. 3. हरिहरानंद, स्वामी. (1988). पतंजलि योग दर्शन, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी. 4. मुनि, स्वामी ब्रम्हलीन. पतंजलि योग दर्शन, चौखम्भा प्रकाशन. 5. दास, हरिकृष्ण. (2013). योग दर्शन, गीता प्रेस, गोरखपुर. 6. श्रीवास्तव, सुरेशचन्द्र. पतंजलि योग दर्शन, सुभारती प्रकाशन, वाराणसी. 7. Mitra, Rajendra lal. Yoga Aphorism with Commentary of Bhoja, Asiatic Society of Bengal. 8. Vivekanand, Swami. (1990). Rajyoga, RamkriShna Mission, Nagpur.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भर्तृहरि का भाषा दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भर्तृहरि का भाषा-दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 231

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

वेदों से प्रारम्भ हुआ भारतीय भाषा दर्शन का विकास अपने परम रूप में वैयाकरण दर्शन परम्परा में प्रकट हुआ। इस परम्परा के महान् दार्शनिक भर्तृहरि ने शब्द तत्त्व को ब्रह्म में प्रतिष्ठित किया तथा भाषा दर्शनों को अध्यात्मवादी, अद्वैतवादी चिन्तन की विचारधारा से जोड़कर भारतीय संस्कृति एवं साधना की अन्तरात्मा को ही मानो अपने आकर ग्रन्थ 'वाक्यपदीयम्' में जगमगाने के लिए रख दिया। भाषा का दार्शनिक स्वरूप वास्तव में क्या है? भाषा दर्शन का प्रयोजन क्या है? भाषा दर्शन की वास्तविक समस्यायें क्या हैं? भारतीय साधना में शब्द अथवा मन्त्र का प्रयोग क्यों होता है, उसका महत्त्व आदि क्या है, वह क्यों साधन माना जाता है? आदि प्रश्नों का उचित उत्तर पाने के लिए तथा भारतीय साधना को गम्भीरता से समझने के लिए 'वाक्यपदीप' का अनुशीलन, चिन्तन, मनन अपरिहार्य है। भर्तृहरि वैयाकरण परम्परा की वह मजबूत कड़ी है जो मध्य में अवस्थित होकर अपने से पूर्व तथा अपने से पर के दार्शनिक परम्परा को आधार रूप में पकड़े हुए हैं। उनके पूर्व के वैयाकरण दार्शनिक परमपरा में स्फोटायन, औदुम्बरायण, पाणिनि वाजप्यायन, व्याडि, कात्यायन, पतंजलि तथा बसुरात के नाम आते हैं। भर्तृहरि के परवर्ती वैयाकरण दार्शनिकों में कैयट, जिनेन्द्रबुद्धि, भट्टोजिदीक्षित, कौण्डभट्ट तथा नागेश के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत पुस्तक की आकार सीमा को ध्यान में रखते हुए यहाँ भर्तृहरि के 'वाक्यपदीय' के आधार पर ही वैयाकरण पर ही वैयाकरण भाषा दर्शन पर विचार किया जायेगा। वाक्यपदीय तीन काण्डों में निबद्ध है। इसमें लगभग दो सम्पन्न कारिकायें हैं। पहला काण्ड 'ब्रह्मकाण्ड' के नाम से प्रसिद्ध है। इसे 'आगम समुच्चय' भी कहा जाता है। विषय की दृष्टि से यह दोनों नाम संगत लगते हैं। द्वितीय काण्ड का नाम 'वाक्यकाण्ड' है। इसमें वाक्य का सांगोपांग विवेचन है। इसे वाक्यपदीय का मुख्य भाग माना जाता है। तृतीय काण्ड को 'पदकाण्ड' या 'प्रकीर्णकाण्ड' कहते हैं। इसमें जाति, द्रव्य, काल, दिक् आदि का विशदता के साथ विवेचन किया गया है। आकार की दृष्टि से भी यह काण्ड बहुत विशद् है। इसकी कारिका संख्या आरम्भ के दोनों काण्डों की कारिका संख्या से लगभग दुगुनी है। यह चौदह समुद्देश्यों में विभक्त है। सम्भवतः इसमें दो समुदेश और भी थे, जो जब उपलब्ध नहीं हैं। भर्तृहरि ने वाक्यपदीय के ब्रह्मकाण्ड पर स्वोपज्ञवृत्ति नामक टीका लिखा है। इसके अतिरिक्त उन्होंने महाभाष्य पर दीपिका टीका भी लिखा है। वाक्यपदीय पर हेलाराज तथा पुण्यराज द्वारा लिखी गई टीकायें प्रसिद्ध हैं।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

वैयाकरण भाषा दर्शन के सिद्धान्तों पर विचार करने से पूर्व वैयाकरण भाषा दर्शन के प्रयोजन तथा इस दृष्टि से इसके महत्त्व को जान लेना आवश्यक है। वैयाकरण भाषा दर्शन केवल भाषा विश्लेषण अथवा शब्द व्युत्पत्ति तक ही सीमित नहीं है। पतन्जलि, कैयट, विशेषकर भर्तृहरि ने इसे आध्यात्मिक, तत्त्वमीमांसीय, ज्ञानमीमांसीय आधार प्रदान किया। वैयाकरण भाषा दर्शन एक आध्यात्मिक दर्शन है। यह ब्रह्म की शब्द रूप से विवेचना करता है। शब्द तत्त्व से ही जगत् की सृष्टि की भी विवेचना करता है। भर्तृहरि ने तो प्रमाणादि की विवेचना करके इसे ज्ञानमीमांसा पक्ष को भी उद्घाटित किया है। उन्होंने मोक्ष प्राप्ति के लिए व्याकरण दर्शन का अनुशीलन आवश्यक बताया। उनके अनुसार व्याकरण शास्त्र सिद्धि की श्रेणियों के पर्वों का प्रथम पदस्थान है, यह मोक्ष प्राप्ति का निष्कपट राजमार्ग है, जो व्याकरण शास्त्र में निष्पात है, वह केवल (परावाक्) का साक्षात्कार करता है। ज्ञानरूप में स्थित सूक्ष्म शब्द तत्त्व के साथ अभेद का साक्षात्कार करने वाला व्याकरण शास्त्र के अभ्यास के द्वारा वर्षों के आनुपूर्वी (पूर्वापर्य) इत्यादि से विशिष्ट साधु शब्द का ज्ञान प्राप्त कर तथा वर्णानुपूर्वी रूपक्रम के परित्याग के द्वारा स्वात्मा के निर्विकल्प योग का लाभ करके परम पुरुषार्थ रूप मोक्ष को प्राप्त करता है।

शब्द के स्वरूप पर विचार करते समय व्याकरण दर्शन सबसे पहले इस बात पर विचार करता है कि क्या अर्थ से सम्बन्ध रखने वाला शब्द वही है जो बोला और सुना जाता है। यदि वही है तो समस्या उठेगी कि इनसे अर्थबोध कैसे होता है क्योंकि वर्ण समूह जो सुनाई देते हैं अथवा बोले जाते हैं, वे तो प्रत्यक्ष रहता है पर कोई शब्द संघातरूप में कभी प्रत्यक्ष नहीं हो सकता। इसलिए वैयाकरण श्रव्य शब्दों के अलावा एक आन्तरिक, बुद्धिस्थ शब्द की सत्ता स्वीकार करते हैं। सामान्यतया गुण से उच्चारित होने वाले और कानों से सुने जाने वाले ध्वनि समूह को शब्द कहा जाता है किन्तु इस ध्वनिरूप शब्द का कारणभूत एक और शब्द है जो बुद्धिस्थ होता है। ध्वनि की उत्पत्ति इसी बुद्धिस्थ शब्द के कारण होती है। इसी बुद्धिस्थ शब्द के कारण उत्पन्न ध्वनियाँ श्रोता के श्रवणेन्द्रिय तक पहुँच कर उसे अर्थबोध कराती हैं।

शब्द के इन दोनों स्वरूपों में परस्पर कार्य कारण भाव दिखाई देता है। कुछ लोग इन दोनों का परस्पर भेद मानते हैं, परन्तु कुछ भेद को केवल बुद्धिस्थ मानते हैं। इनका तात्त्विक भेद यह है कि इनमें पहला अर्थात् बुद्धिस्थ शब्द अध्वनिक या अश्रवणीय है और दूसरा उच्चारित शब्द ध्वनिमय या श्रवणीय

है। शब्द का स्वरूप और स्वभाव ज्ञान तथा प्रकाश के समान है। इसमें अपना स्वयं का स्वरूप तथा इससे सम्बद्ध अर्थ का स्वरूप दोनों भासित होते हैं। जैसे प्रकाश में प्रकाश्य वस्तु का स्वरूप तो दिखता ही है, प्रकाश स्वयं भी दिखता है। अन्तर इतना है कि प्रकाश जहाँ प्रकाशित वस्तु के रूप में दृष्टिगोचर होता है, वहाँ शब्द बोधित वस्तु को शब्द रूप बनाकर प्रतीत करता है। बोधित वस्तु शब्द रूप होकर बुद्धिगत होती है, जबकि प्रकाश वस्तुरूप होकर बुद्धिगत होता है। यद्यपि दोनों प्रकाशक का ही काम करते हैं।

व्याकरण दर्शन में अभिव्यक्ति की दृष्टि से शब्द तत्त्व के चार भेद अथवा शब्द तत्त्व की अभिव्यक्ति के चार स्तरों का निरूपण किया गया है। वे स्तर हैं-परा, पश्यन्ती, मध्यमा तथा वैखरी।

परा : इसे व्याकरण दर्शन में ब्रह्म रूप माना जाता है। इसमें शब्द और अर्थ के बोध की क्रिया प्रकट नहीं होती। जैसे अण्डे में क्रियात्मक द्रव तिरोहित रहता है और उसी में स्पंद लेकर हंस आदि रूप में प्रकट होता है। परावाक् स्व प्रकाश संविद् रूप है। इसे स्वरूप ज्योति कहा गया है। यह अत्यन्त सूक्ष्मातिसूक्ष्म अनपायिनी (नित्य) है। यही व्याकरण में अनादि शब्द ब्रह्म है। वाक्यपदीय के कुछ टीकाकार परावाक् को पश्यन्ती वाक् का ही भेद विशेष मानते हैं। कुछ टीकाकार इसे अनादि निधन शब्द ब्रह्म के रूप में वर्णित स्वतन्त्र चौथी वाक् अर्थात् परावाक् मानते हैं।

पश्यन्ती : पश्यन्ती वाक् परा के आविर्भाव का प्रथम स्पंद है जिसमें ज्ञान रूप से क्रम स्फुरित होता है। यह कहा जा सकता है कि 'परा' क्रम के तिरोमणि की दशा है जिसे पूर्ण अभेद दशा कहा जा सकता है, जबकि पश्यन्ती में शब्द और अर्थ की भेदाभेद दशा ज्ञान रूप में कुछ कुछ स्फुरित होती है। कुछ दार्शनिक दोनां को एक ही मानते हैं। यह वाच्य वाचक विभाग से रहित क्रम बन्धन शून्य होती है। यह समस्त जगत् को अपने में देखती है अथवा स्वोपादानभूत परावाक् से देखी जाती है। इसलिये पश्यन्ती नाम से कही जाती है।

मध्यमा : ज्ञान रूप में स्थित पश्यन्ती अर्थ प्रकाशन की दृष्टि से जो नाद रूप लेती है उसे मध्यमा वाक् कहते हैं। मध्यमा वाक् वह है जो अन्तः संकल्प का विषय अर्थात् मन से ही प्रत्यक्ष की जाती है। यह श्रोत ग्रहण ककारादि वर्णों की अभिव्यक्ति से रहित है, फिर भी इस वर्ण के उत्तर क्षण में यह वर्ण है, इस प्रकार के क्रम बन्धन में बँधी होती है। प्राण वायु की अपेक्षा न करती हुई यह वाक् पश्यन्ती तथा वैखरी के मध्य में होने से अथवा प्राण तथा अपान वायु के मध्य में रहने से मध्यमा शब्द से बोधित होती है। मन में जो कुछ कहा जाता है वह इसी मध्यमा के ही शब्दों में कहा जाता है। दोनों कर्ण छिद्रों को बन्द कर देने पर जो नाद सुनाई देता है वह मध्यमा नाद ही है।

वैखरी : मध्यमा नाद जब मुख कुहर में आकर कंठ आदि स्थानों से व्यक्त होने के लिये उच्चारित होता है तब उसे वैखरी नाम से जाना जाता है। इस प्रकार कण्ठ, तालु इत्यादि स्थानों में प्राणवायु के निरोध से अर्थात् प्राणवायु से जिह्वा के संयोग से ककार आदि वर्ण रूप को स्वीकार करने वाली वाक् को वैखरी कहते हैं। इसी से प्रयोक्ताओं का व्यवहार चलता है। प्राणवायु के व्यापार पर ही यह निर्भर रहती है। भीतर के शब्दरूप रत्नों की राशि को अथवा सूक्ष्म शब्दों से बंधे हुए ज्ञान रत्न को बाहर बिखेरने से यह वैखरी कही जाती है। हम भाषायी व्यवहार में जिस शब्द का प्रयोग करते हैं वह वैखरी है। वक्ता में शब्दाभिव्यक्ति का सूक्ष्म से स्थूल की ओर अर्थात् पश्यन्ती, मध्यमा वैखरी का क्रम रहता है किन्तु श्रोता में क्रम उलट जाता है। वैखरी से श्रोता का मध्यमा नाद स्फुरित होता है, उस नाद से स्फोट रूप शब्द जो पश्यन्ती का ही रूपान्तर है, प्रकट होता है, जिसमें वैखरी का वर्णक्रम प्रतिबिम्बित होता है। इस स्फोट रूपी स्फटिक शिला में प्रतिबिम्बित शब्द ही अर्थबोध का कारण होता है, वाक् के चारों स्तरों को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि व्यक्त वर्णों वाले शब्दों की निष्पत्ति वैखरी है, नाद रूप में सुनी जाने वाली 'मध्यमा' आन्तरिक अर्थ से मुक्त पश्यन्ती और परा वाणी सूक्ष्म है जो विकार रहित होती है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**भर्तृहरि और उनकी कृतियां** वाक्यपदीय की टीकाएँ- (अ) वृत्ति (ब) हेलाराज की टीका प्रकाश (स) पुण्यराज की टीका (द) वृषभदेव की पद्धति	15	25
मॉड्यूल-2	**अर्थ-निर्णय की समस्याएं** वाक्यपदीय की विषय-वस्तु भर्तृहरि तथा दर्शन भर्तृहरि और प्रमाण	15	25
मॉड्यूल-3	**वाक्यपदीय की दार्शनिक पृष्ठभूमि** स्फोट-सिद्धान्त वाक्य के विषय में भर्तृहरि	15	25

	शब्द तथा अर्थ में सम्बन्ध		
मॉड्यूल-4	**भर्तृहरि का व्याकरणिक विश्लेषण** विश्लेषण से प्राप्त पदार्थ-जाति एवं द्रव्य गुण के विषय में दिक् के विषय में साधन के विषय में- (अ) कर्म (ब) करण (स) कर्ता तथा हेतु (द) सम्प्रदान (इ) अपादान (ई) आधार (अधिकरण) (उ) शेष तथा सम्बोधन	15	25
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Vakyapadiya, Brahmakandam of Bhartrhari with Harivrtti Edited By Bhagirath Prasad Tripathi, Vagisha Sastri, Sampurnananda Sanskrit Visvavidyalaya, Varanasi, 1976 2. Vakyapadīya, Brahmakanda of Bhartrhari with Harivrtti Tr. in Hindi by Suresh Chandra Awasthi, Chowkhambha Vidya Bhawan, 1990 3. Vakyapadīya, Part I &II of Bhartrhari, Tr. by K.Raghvan Pillai, MLBD, 1971. 4. Tiwari, D.N.The Central Problems of Bhartrhari's Philosophy, ICPR, New Delhi. 2008 5. K.A.Subramania Ayer, Bhartrhari, Deccan College, Poona,1969. 6. Matilal, B.K. The Word and the World, Oxford University Press, 1990. 7. Pandey, R.C..The Problem of Meaning in Indian Philosophy, BLBD, 1963. 8. Kunjhuni Raja Indian Theories of Meaning, Adyar library & Research center,1963. 9. Jha, H.M.,Trends of Linguistic Analysis in Indian Philosophy, Choukhambha Vidya Bhawan, Varanasi, 1981 10. Sastri, Gauri Nath A Study in the Dialectics of Sphota, MLBD, New Delhi,1980 11. Vyakarana Darshan, Ram Suresh Tripathi, 12. B.K.Matilal, Epistemology, Logic and Grammar In Indian Philosophical Analysis. The Hague, Mouton, 1971. 13. Coward, H.G. The Sphota Theory of LanguageMLBD, Delhi,1997.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

तर्कशास्त्र (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: तर्कशास्त्र (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 232

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

आधुनिक तर्कशास्त्रियों ने आगमन और निगमन के निम्नलिखित भेद पर बल दिया है। उनका कथन है कि निगमनात्मक युक्तियाँ वैध या अवैध होती हैं। कोई निगमनात्मक युक्ति तब वैध होती है जब उसका निष्कर्ष विषय-वस्तु पर ध्यान दिये बिना तार्किक आवश्यकता के साथ उसके आधारवाक्यों से निकलता है अथवा वे वैध तब होती हैं जब बिना निष्कर्ष के सत्य हुए आधारवाक्यों का सत्य होना असम्भव हो। इसमें आधारवाक्य निष्कर्ष की सत्यता हेतु निश्चायक साक्ष्य प्रदान करते हैं। सभी मनुष्य मरणशील हैं और राम एक मनुष्य है- इन दोनों आधारवाक्यों से निष्कर्ष 'राम मरणशील है, अनिवार्यतः निगमित होता है। उल्लेखनीय है कि निगमनात्मक युक्ति केवल वैध (Valid) होती है, कोई भी तथ्य उसे वैधतर (More Valid) या वैधतम (Most Valid) नहीं बना सकता। यदि किसी निगमनात्मक युक्ति का निष्कर्ष वैध है तो परिवर्धित आधारवाक्यों का समूह (Set of enlarged Premisses) भी उसे वैधतर नहीं कर सकता। इस प्रकार निगमनात्मक युक्तियों की वैधता में मात्रात्मक भेद नहीं किया जाता है। आगमनात्मक युक्तियों में स्थिति भिन्न है। उन्हें वैध और अवैध के वर्ग में नहीं रखा जाता। उनके विषय में प्रसंभाव्यता (Probability) का निर्णय किया जाता है। ये युक्तियाँ कम या अधिक प्रसंभाव्य होती है। आगमनात्मक युक्तियों में यह दावा नहीं किया जाता है कि इनके आधारवाक्य निष्कर्ष की सत्यता के लिये निश्चायक साक्ष्य प्रदान करते हैं। वे उस अर्थ में न तो वैध होती हैं और न अवैध, जिस अर्थ में निगमनात्मक युक्तियाँ। आगमनात्मक युक्ति का मूल्यांकन उस प्रसंभाव्यता की मात्रा के अनुसार उन्हें अच्छी या खराब कहकर किया निष्कर्ष के विषय में आरोपित करते हैं। निगमनात्मक युक्तियाँ केवल आकारिक (Formal) होती हैं। इसमें केवल आधारवाक्यों और निष्कर्ष के तार्किक सम्बन्ध पर बल दिया जाता है, उसमें आये तर्कवाक्यों की विषय-वस्तु से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता। इसके विपरीत आगमन वस्तुगत सत्यता (Material Truth) पर बल देता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

परिभाषया तर्कशास्त्र को विचारों का विज्ञान या विचार के नियमों का विज्ञान और तर्क का विज्ञान कहा जाता है। प्रश्न है कि क्या तर्कशास्त्र का अध्ययन करने वाला व्यक्ति ही विचार कर सकता है, तर्क कर सकता है? अथवा क्या तर्कशास्त्र का अध्ययन न करने वाला व्यक्ति तर्क या विचार नहीं कर सकता? इस प्रश्न का उत्तर निषेधात्मक ही है। जिस प्रकार एक अच्छा खिलाड़ी होने के लिए शरीर-विज्ञान का ज्ञान होना आवश्यक नहीं है, उसी प्रकार अच्छा विचार या तर्क करने के लिये तर्कशास्त्र का अध्ययन आवश्यक नहीं है। तथापि तर्कशास्त्र की उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता। इसके कई कारण हैं। प्रथम, मान लीजिए, दो व्यक्ति समान बुद्धि वाले हैं। उनमें से एक व्यक्ति ने तर्कशास्त्र का अध्ययन किया है, किन्तु दूसरा व्यक्ति तर्कशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों से अपरिचित है। ऐसी स्थिति में प्रथम व्यक्ति सत्य तर्क करने में ज्यादा सफल हो सकता है। द्वितीय, तर्कशास्त्र का अध्ययन दो रूपों- विज्ञान एवं कला-में होता है। विज्ञान के रूप में तर्कशास्त्र के सामान्य सिद्धान्तों की जानकारी दी जाती है और कला के रूप में उनका अभ्यास कराया जाता है। यह प्रक्रिया ज्ञान-वृद्धि में अत्यन्त सहायक होती है। तृतीय, तर्कशास्त्र का एक भाग तर्कदोषों के विश्लेषण एवं परीक्षण से सम्बन्धित है। इन तर्कदोष का परिचय व्यक्ति को इनमें पड़ने से बचाता है। अन्ततः तर्कशास्त्र व्यक्ति को कुछ पद्धतियों की जानकारी देता है जिसकी सहायता से वह अपनी व अन्य व्यक्तियों की युक्तियों की परीक्षा कर सकता है। यह ज्ञान व्यक्ति के लिये उपयोगी होता है, क्योंकि वह आसानी से घटित होने वाली त्रुटियों से बच सकता है। इस प्रकार तर्कशास्त्र के अध्ययन के लाभ बिल्कुल स्पष्ट हैं। इससे विचारों को स्पष्टतया को तर्कशास्त्र की परिभाषा से जोड़ा जाता है। अभिव्यक्त करने की उच्चतर योग्यता, किसी पद को परिभाषित करने की परिवर्धित कुशलता, युक्तियों की संरचना करने तथा उनकी आलोचनात्मक विश्लेषण करने की व्यापक क्षमता प्राप्त होती है। किन्तु इसके अध्ययन से सबसे बड़ा लाभ यह है कि व्यक्ति के मन में यह मान्यता प्रगाढ़ता से बैठ जाती है कि मानव ज्ञान के सभी पहलुओं में तर्कबुद्धि (Reason) का प्रयोग किया जा सकता है। लोकतान्त्रिक संस्थाओं की यह माँग है कि व्यक्ति स्वतः चिन्तन करें, समस्याओं पर परस्पर स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करें तथा वार्तालाप और प्रबलतम साक्ष्यों के द्वारा समस्याओं का समाधान करें। तर्कशास्त्र के अध्ययन से न केवल तर्कणा (Reasoning) में अभ्यास अपितु तर्कबुद्धि का सम्मान करने की प्रेरणा भी प्राप्त होती है। होता है। इस प्रकार, दर्शनशास्त्र की एक शाखा के रूप में तर्कशास्त्र का सर्वातिशायी महत्व है। चूंकि, दर्शनशास्त्र एक द्वितीय श्रेणिक प्रयास (Second order

activity) है, एक बौद्धिक चिन्तन है, समस्याओं का तार्किक विश्लेषण है, अतः उसे तार्किक आधार की आवश्यकता है जो उसे तर्कशास्त्र ही उपलब्ध कराता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**निरपेक्ष न्याय वाक्य** मानक-आकार निरपेक्ष न्याय वाक्य-मुख्य, अमुख्य और मध्य पद अवस्था आकृति न्याय वाक्यीय युक्ति का आकारगत स्वरूप न्याय वाक्य के परीक्षणार्थ वेन की रेखाचित्र-विधि न्याय वाक्यीय नियम तथा न्याय वाक्यीय तर्कदोष निरपेक्ष न्याय वाक्य के 15 वैध आकारों की व्याख्यान निरपेक्ष न्याय वाक्य के 15 वैध आकारों का निगमन	5	9
मॉड्यूल-2	**सामान्य भाषा में युक्तियां** सामान्य भाषा में न्याय वाक्यीय युक्तियां न्याय वाक्यीय युक्तियों में पदों की संख्या में कमी करना मानक आकार में निरपेक्ष तर्कवाक्यों का रूपांतरण लुप्तावयव न्याय वाक्य संक्षिप्त तर्कमाला वियोजक तथा हेतुफलाश्रित न्याय वाक्य उभयतोपाश	5	9
मॉड्यूल-3	**प्रतीकात्मक तर्कशास्त्र** आधुनिक तर्कशास्त्र की प्रतीकात्मक भाषा संयोजन, निषेध तथा विकल्प के लिए प्रतीक क. संयोजन ख. निषेध ग. विकल्प घ. विराम-चिन्ह सापेक्ष प्रकथन और शाब्दिक प्रतिपत्ति युक्ति-आकार तथा युक्ति क. तार्किक साम्यानुमान द्वारा खंडन ख. सत्यता-सारणी के आधार पर युक्ति का परीक्षण ग. कुछ सामान्य वैध युक्ति आकार घ. कुछ सामान्य अवैध युक्ति-आकार ङ प्रतिस्थापन उदाहरण और विशेष आकार **प्रकथन-आकार और वस्तुगत समता** क. प्रकथन-आकार और प्रकथन ख. पुनर्कथन, व्याघाती और सम्भाव्य प्रकथनाकार ग. वस्तुगत समता घ. युक्ति, सापेक्ष प्रकथन और पुनर्कथन तार्किक समता वस्तुगत प्रतिपत्ति के विरोधाभास विचार के तीन नियम	10	17

मॉड्यूल-4	**निगमन की पद्धति** वैधता का आकारगत प्रमाण पुनर्स्थापन का नियम	10	17
मॉड्यूल-5	**परिमाणन सिद्धांत** एकव्यापी तर्कवाक्य परिमाणन वैधता प्रमाणित करना अवैधता प्रमाणित करना परम्परागत उद्देश्य-विधेय तर्कवाक्य न्याय वाक्य-रहित अनुमान	15	24
मॉड्यूल-6	**विज्ञान तथा प्राक्कल्पना** विज्ञान का महत्व व्याख्याएँ, वैज्ञानिक तथा अवैज्ञानिक वैज्ञानिक व्याख्याओं का मूल्यांकन 1. पूर्व-प्रतिष्ठापित प्राक्कल्पनाओं के साथ संगति 2. भविष्यवक्तृता या व्याख्यात्मक शक्ति 3. 3. सरलता **वैज्ञानिक शोध की सात अवस्थाएं** 1. समस्या को पहचानना 2. प्रारंभिक प्राक्कल्पना करना 3. अतिरिक्त तथ्यों को जुटाना 4. व्याख्यात्मक प्राक्कल्पना की संरचना 5. अन्य परिणामों का निगमन 6. परिणामों का परीक्षण 7. सिद्धांत का प्रयोग	15	24
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Copi & Cohen : Introduction to Logic, 11th Edition, Pearson Education Inc, 2002 2. Copi & Cohen: Tarkashastra: Eka Parichaya, Hindi Translation of Introduction to Logic, 11th Edition, Pearson Education, 2006 3. Copi : Tarkasastra Ka Parichaya (Hindi translation by Sangam Lal Pandey & Gorakh Nath Mishra). Asia Book Company, Allahabad, 2002 4. Basson, A.H. and O Connor, D.J. : Introduction to Symbolic Logic, Third edition, 1959, Indian Impression by Oxford University Press, Culcutta, 1981 5. Copi, I.M. : Symbolic Logic (Fifth Edition), Pearson Education Inc 1979, First Indian Impression, 2006, 6. Suppes, P : Introduction to Logic, Princeton N.J., 1957, 7. Chakraborti Chhanda: Logic: Informal, Symbolic and Inductive, Prentice Hall of India, New Delhi, 2007.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

धर्म दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : धर्म दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 233

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यक्रचर्या के अंतर्गत विद्यार्थी धर्म का स्वरूप, धर्म और दर्शनशास्त्र, धर्म और रिलीजन में अन्तर, धार्मिक अनुभूति और धार्मिक चेतना, रहस्यवाद, धार्मिक विश्वास के आधार, तर्कबुद्धि, श्रुति, आस्था, रहस्यानुभूति, प्रारम्भिक/आदिम धर्म,आदिम धर्म के विभिन्न रूप, ईश्वर के तात्त्विक गुण, सर्वशक्तिमतता, सर्वव्यापकता, सर्वज्ञता, अनन्तता, नित्यता, ईश्वर समर्थक युक्तियाँ, अशुभ का स्वरूप, अशुभ की समस्या का विकास, अशुभ के प्रकार, ईश्वरवाद और अशुभ की समस्या, निरीश्वरवाद: भारतीय परंपरा, चार्वाक, जैन,बौद्ध, सांख्य, मीमांसा, निरीश्वरवाद : पाश्चात्य परंपरा, आत्मा की अमरता, पुर्नजन्म और कर्मवाद, मोक्ष, मोक्ष प्राप्ति के साधन/मार्ग, धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक रूढ़िवादिता, सर्वधर्म समन्वय, धार्मिक बहुलवाद, धर्म निरपेक्षता, मानवतावाद, धर्मों की सारभूत अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन इत्यादि का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या के अध्ययन धर्म दर्शन से संबंधित समस्त आयामों से परिचित होने के साथ ही विभिन्न धार्मिक समस्याओं का प्रत्युत्तर देने में समर्थ हो सकेगा तथा ईश्वर, आत्मा, मोक्ष, धार्मिक सहिष्णुता, धार्मिक बहुलवाद, मानवतावाद के अध्ययन के साथ ही इनकी दार्शनिक समझ को विकसित कर स्वयं के विचारों की निर्मिति कर सकेगा जिससे एक आदर्श एवं धर्मयुक्त समाज के स्थापना में वह अपना योगदान दे पायेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	धर्म दर्शन का स्वरूप 1.1- धर्म का स्वरूप 1.2- धर्म और दर्शनशास्त्र 1.3- धर्म और रिलीजन में अन्तर 1.4- धार्मिक अनुभूति और धार्मिक चेतना	07	12
मॉड्यूल-2	धर्म की अवस्था 2.1- आदिम धर्म 2.2- जीववाद, टोटमवाद 2.3- प्राकृतिक धर्म 2.4- मानवीय धर्म 2.5- आध्यात्मिक धर्म	07	12
मॉड्यूल-3	धार्मिक दर्शन के प्रकार 3.1- अनीश्वरवाद 3.2- सर्वेश्वरवाद 3.3 द्वैतवाद 3.4- अनेकेश्वरवाद 3.5- निमित्तोपादानेश्वरवाद 3.6- ईश्वरवाद	07	12

मॉड्यूल-4	ईश्वर के अस्तित्व के प्रमाण 4.1- तात्त्विक युक्ति 4.2- विश्व संबंधी युक्ति 4.3- प्रयोजनमूलक युक्ति 4.4- नैतिक युक्ति 4.5- कांट की युक्ति	07	12
मॉड्यूल-5	5.1- धार्मिक विश्वास के आधार • तर्कबुद्धि • श्रुति • आस्था • रहस्यानुभूति	07	12
मॉड्यूल-6	6.1- ईश्वर की अवधारणा 6.2- ईश्वर के तात्त्विक गुण • सर्वशक्तिमतता • सर्वव्यापकता • सर्वज्ञता • अनन्तता • नित्यता ईश्वर समर्थक युक्तियाँ	07	12
मॉड्यूल-7	अशुभ की समस्या 7.1- अशुभ का स्वरूप 7.2- अशुभ की समस्या का विकास 7.3- अशुभ के प्रकार 7.4- ईश्वरवाद और अशुभ की समस्या	07	12
मॉड्यूल-8	8.1- निरीश्वरवाद भारतीय परंपरा • चार्वाक दर्शन • जैन दर्शन • बौद्ध दर्शन • सांख्य दर्शन • पूर्व-मीमांसा 8.2- निरीश्वरवाद : पाश्चात्य परंपरा 8.3- आत्मा की अमरता 8.4- पुर्नजन्म और कर्मवाद 8.5 - मोक्ष 8.6 - मोक्ष प्राप्ति के साधन/मार्ग	05	**8**
मॉड्यूल-9- -	9.1- धार्मिक सहिष्णुता 9.2- धार्मिक रूढिवादिता 9.3- सर्वधर्म समन्वय 9.4- धार्मिक बहुलवाद 9.5- धर्म निरपेक्षता 9.6- मानवतावाद 9.7- धर्मों की सारभूत अवधारणाओं का तुलनात्मक अध्ययन	05	**8**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. मसीह, याकूब. (2014). तुलनात्मक धर्म दर्शन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली . 2. उपाध्याय, बलदेव. धर्म और दर्शन. 3. पाण्डेय, ऋषिकांत, धर्म दर्शन, पिअर्सन प्रकाशन, नई दिल्ली. 4. डॉ. रमेश. धर्म-दर्शन, सामान्य एवं तुलनात्मक, मोती लाल बनारसी दास पब्लिशर्स. 5. दुबे, प्रो. श्री प्रकाश, श्रीवास्तव अविनाश. (2008). तुलनात्मक धर्म दर्शन, विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर, मध्य प्रदेश. 6. सिन्हा, हरेन्द्र प्रसाद. (1962). धर्म दर्शन की रूपरेखा, मोतीलाल बनारसी दास, दिल्ली. 7. या. मसीह. (1973). धर्म दर्शन परिचय, मोतीलाल बनारसीदास, पटना. 8. मिश्र, हृदय नारायण. (1967). धर्म दर्शन परिचय, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन पर समकालीन भारतीय प्रभाव (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम: सामाजिक राजनीतिक आंदोलन पर समकालीन भारतीय प्रभाव (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 234

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

'सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन पर समकालीन भारतीय प्रभाव' पाठ्यचर्या के तहत विद्यार्थी सामाजिक-राजनीतिक आदर्श यथा समानता, न्याय एवं स्वतंत्रता, अधिकार, राजनीतिक विचारधाराओं के अंतर्गत अराजकतावाद, मार्क्सवाद, समाजवाद, सर्वोदय, संप्रभुता, संविधानवाद, बहुलवादी सिद्धांत, मार्क्स की राज्य की अवधारणा, संप्रभुता : राष्ट्र, राज्य एवं वैश्वीकरण के आलोक में, संत ज्ञानेश्वर, राजा राममोहन राय, स्वामी विवेकानंद, पंडित मदन मोहन मालवीय, कविगुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, डॉ.भीमराव अंबेडकर, विनोबा भावे के दार्शनिक विचारों का सामाजिक-धार्मिक आंदोलन के आलोक में अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या के अध्ययन उपरांत भारत में हुए सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन से परिचित होंगे। इस पाठ्चर्या के माध्यम से विद्यार्थियों को भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक आंदोलन के उन महान विभूतियों को जानने समझने का मौका मिलेगा जिनको पढ़ते हुए सामाजिक आंदोलनों के भारतीय चिंतन एवं पद्धति से परिचित हुआ जा सकता है। इस पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यार्थी सामाजिक, धार्मिक आंदोलन के महत्व एवं उनसे निकले संदेशों को आत्मसात करते हुए राष्ट्रनिर्माण में अपना योगदान देने में समर्थ हो सकेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**सामाजिक राजनीतिक आदर्श** 1.1 स्वतंत्रता 1.2 समानता 1.3 न्याय 1.4 अधिकार	**12**	**20**
मॉड्यूल-2	**राजनीतिक विचारधाराएं** 2.1 अराजकतावाद 2.2 मार्क्सवाद 2.3 समाजवाद 2.4 सर्वोदय 2.5 संविधानवाद	**12**	**20**
मॉड्यूल-3	**संप्रभुता** 3.1 बहुलवादी सिद्धांत 3.2 मार्क्स की राज्य की अवधारणा 3.3 संप्रभुता : राष्ट्र, राज्य एवं वैश्वीकरण के आलोक में	**12**	**20**
मॉड्यूल-4	**सामाजिक-राजनीतिक विचारक** 4.1 संत ज्ञानेश्वर : मानवता और शांति संबंधित विचार 4.2 राजा राममोहन राय : ब्रह्मसमाज, सती प्रथा का विरोध 4.3 स्वामी विवेकानंद : ईश्वर, आध्यात्म एवं मुक्ति	**12**	**20**

	4.4 पंडित मदन मोहन मालवीय: सांस्कृतिक दृष्टि, शिक्षा दृष्टि 4.5 कविगुरु रविन्द्रनाथ टैगोर : मानवतावाद		
मॉड्यूल-5	5.1 महात्मा गांधी : सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह 5.2 डॉ.भीमराव अंबेडकर : समता का दर्शन, सामाजिक न्याय 5.3 विनोबा भावे : सर्वोदय 5.4 पंडित दीनदयाल उपाध्याय : एकात्ममानव दर्शन	**12**	**20**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. H. Sabine, George. (1973). A History of Political Theory. Oxford, IBH, 4th edition. 2. Raphaelm, D.D. (1978).The Problems of Political Philosophy, Oxford University Press 3. Van Dyke, Vernon. (1960). Political Science A PhilosoMAPHILal Analysis, Stanford, Stanford University Press. 4. Daya, Krishna. (1978). Social Philosophy Past & Future, Shimla, Indian Institute of Advance Studies. 5. गाबा, ओ.पी. (2021).राजनीति सिद्धान्त की रूपरेखा. दिल्ली : मयूर पेपर बैक्स. 6. सिंह, शिवभानु. (2000). समाज दर्शन का सर्वेक्षण, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन. 7. T.M.P., Mahadevan, and G.V., Saroja. (1974). Contemporary Indian Philosophy. 8. सक्सेना, लक्ष्मी : (सम्पा.) समकालीन भारतीय दर्शन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. 9. Bhattacharya, Haridas.(1956). The cultural heritage of India Vol, IVth. Calcutta, Ramakrishana Mission. 10. Lal, B.K.(2009).Contemporary Indian Philosophy.Varanasi: Motilal Banarsidas. 11. Narvane,V.S.(1964). Modern Indian Thought. Bombay, Asia Publishing House. 12. Srivastava, R.S.(1965). Contemporary Indian Philosophy. Delhi, Munshi Ram Manohar Lal. 13. शर्मा, महेशचंद्र. एकात्म मानवदर्शन- प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली. 14. भावे, विनोबा. अध्यात्म एवं दर्शन, सर्व सेवा संघ, वाराणसी. 15. भावे, विनोबा. आत्मसुधा, सर्व सेवा संघ, वाराणसी. 16. मिश्रा, एच.एन. समाज दर्शन, शेखर प्रकाशन, प्रयागराज. 17. पांडेय, एस.एल. समाज दर्शन की प्रणाली, प्रयागराज. 18. सिंह, बी.एन : समाज दर्शन एवं राजनीति दर्शन, आशा प्रकाशन, वाराणसी 19. सिन्हा, वशिष्ठ नारायण, समाज दर्शन. 20. सिंह, शिवभानु : समाज दर्शन का सर्वेक्षण, अभिमन्यु प्रकाशन, इलाहाबाद 21. श्रीवास्तव, जगदीश सहाय. समाज दर्शन की भूमिका. 22. Mackenzie J.S. An Outlines of Social Philosophy 23. मिश्रा, एच.एन. सामाजिक एवं राजनैतिक दर्शन, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

समकालीन भारतीय दर्शन : स्वरूप एवं समस्याएं (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : समकालीन भारतीय दर्शन: स्वरूप एवं समस्याएं (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड:MAPHIL 235

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	**60**

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

समकालीन भारतीय दर्शन के अंतर्गत समकालीन भारतीय दर्शन की पूर्वपीठिका एवं विशेषताएं, स्वामी विवेकानंद के ईश्वर, माया, मुक्ति, अध्यात्म, राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, साधन-साध्य विवेक, कविगुरु रविंद्रनाथ टैगोर के अध्यात्म, माया, आत्मा, मानवतावाद एवं श्री अरविंद के समग्र योग की अवधारणा, अतिमानस, प्रतिविकास, तथा के. सी. भट्टाचार्य के दर्शन की अवधारणा एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अध्यात्म, बौद्धिकता एवं अन्त:प्रज्ञा का अध्ययन विद्यार्थी करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या को पढ़ने के बाद समकालीन भारतीय दर्शन के महत्वपूर्ण विचारों से न सिर्फ परिचित होंगे बल्कि समकालीन भारतीय दर्शन की गौरवशाली परंपरा का अध्ययन कर सकेंगे। विद्यार्थी इसका रचनात्मक चिंतन करते हुये इसके वर्तमान प्रासंगिकता एवं महत्त्व को बताने में समर्थ होगा एवं अपने जीवन में इसे आत्मसात कर सकेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1. समकालीन भारतीय दर्शन की पूर्वपीठिका एवं विशेषताएं	**10**	**16**
मॉड्यूल-2	2- स्वामी विवेकानंद 2.1- माया 2.2- मुक्ति 2.3- अध्यात्म	**10**	**16**
मॉड्यूल-3	3- महात्मा गांधी 3.1- सत्य 3.2- अहिंसा 3.3- सत्याग्रह 3.4- साधन-साध्य विवेक	**10**	**17**
मॉड्यूल-4	4- रविंद्र नाथ टैगोर 4.1- अध्यात्म 4.2- माया 4.3- आत्मा 4.4- मानवतावाद	**10**	**17**
मॉड्यूल-5	5- श्री अरविंद 5.1- समग्र-योग की अवधारणा 5.2- अतिमानस 5.3- प्रति विकास	**10**	**17**

	5.4- विकासवाद		
मॉड्यूल-6	7- डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन 7.1- अध्यात्म 7.2- बौद्धिकता 7.3- अन्त:प्रज्ञा	**10**	**16**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Mahadevan, T.M.P. and Saroja, G.V. Contemporary Indian Philosophy. 2. सक्सेना, लक्ष्मी. (1974). समकालीन भारतीय दर्शन, (सम्पा.) उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ. 3. Haridas, Bhattacharya: (1956). The cultural heritage of India Vol, IVth Ramakrishana Mission Calcutta. 4. Lal, B.K.(2009). Contemporary Indian Philosophy (Hindi & English versions), Motilal Banarsidas, Varanasi. 5. Narvane, V.S. (1964) .Modern Indian Thought (Hindi & English translation), Asia Publishing House, Bombay. 6. Srivastava, R.S. (1965).Contemporary Indian Philosophy, Munshi Ram Manohar Lal, Delhi.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

समकालीन पाश्चात्य दर्शन : स्वरूप एवं समस्याएं (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: समकालीन पाश्चात्य दर्शन : स्वरूप एवं समस्याएं (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड: BAPHIL 236

क्रेडिट: 2

सेमेस्टर: III

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	30

पाठ्यचर्या विवरण:(Description of Course)

इस पाठ्यचर्या का उद्देश्य छात्रों को समकालीन पाश्चात्य दर्शन के विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति में अभिरुचि का संचरण करना है। 20 वीं शताब्दी के पश्चिमी दर्शनशास्त्र के महत्वपूर्ण विचारों से अवगत करना है, जिसके कारण भाषाई विश्लेषण, तर्क के संदर्भ में क्रांतिकारी अवधारणा और दर्शन का गणितीय विश्लेषण की प्रधानता रही। इस परंपरा ब्रैडले, सी॰ एस॰ पियर्स, विलियम जेम्स, जॉन डेवी आदि ने अर्थक्रियावाद को स्थापित किया, वहीं हुर्सरल ने दर्शनशास्त्र को नए विचारों से पुनर्गठन करने का प्रयास किया। अस्तित्ववादी विचारकों ने दर्शन के स्वरूप का पुनर्पाठ किया। मार्क्स के वैचारिक आंदोलन से न तो केवल विश्व का स्वरूप में परिवर्तन आया वरन दर्शनशास्त्र का स्वरूप भी आंदोलित हुआ। दुनिया में आज भी इस काल को दार्शनिक उर्वर परंपरा के रूप में देखा जाता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

इस पाठ्यचर्या में समकालीन पाश्चात्य दर्शन के प्रवृत्तियों को सीखने के परिणामों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। पश्चिमी दर्शन में विचार के सबसे महत्वपूर्ण और प्रभावशाली विचारकों का दार्शनिक परिचय से छात्र अवगत होंगे। युवा दिमाग को पाश्चात्य परंपरा से जुड़े बुनियादी विचारों के साथ जोड़ना, जिससे महत्वपूर्ण और चिंतनशील वैचारिकी तैयार हो सके। इस पाठ्यचर्या से छात्रों को सरल विचारों से जटिल विचारों की ओर अग्रसारित करेगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**एफ॰ एच॰ ब्रैडले का दर्शन** 1.1- प्राथमिक तथा गौण गुण, द्रव्यता एवं विशेषणता, संबंध एवं गुण, कारणता 1.2- आभास और सत् 1.3- निरपेक्ष सत् विचार	5	12
मॉड्यूल-2	**अर्थक्रियावाद का दर्शन** **पीयर्स** : अर्थ सिद्धांत **विलियम जेम्स** **जान डिवी** : उपकरणवाद **शिलर** : मानववाद	5	12
मॉड्यूल-3	**बर्गसां और मूर का दार्शनिक अवदान** **हेनरी बर्गसां** -सर्जनात्मक विकासवाद (Creative Evaluation) **जी.ई.मूर**-प्रत्ययवाद का खंडन, दृश्यते इति वर्तते का खंडन, सामान्य ज्ञान, इन्द्रिय प्रदत्त ज्ञान	5	12
मॉड्यूल-4	**बर्ट्रेंड रसेल का दर्शन** साक्षात परिचय ज्ञान (Knowledge by Acquaintances) विवरणात्मक ज्ञान (Knowledge by Description) तार्किक अणुवाद (Logical Atomism)	5	12

मॉड्यूल-5	**विश्लेषणात्मक दर्शन** **गिल्बर्ट राइल**-कोटिमूलक दोष (मशीन में प्रेत का सिद्धांत) **आस्टीन**-वाक् क्रिया	5	12
मॉड्यूल-6	**मार्क्सवाद** 3.1- द्वंद्वात्मक भौतिकवाद 3.2- क्रांति 3.3- राज्य	5	12
मॉड्यूल-7	**हुसर्ल : फेनामेनोलाजी (संवृत्तिशास्त्र) का दर्शन** फेनामेनोलाजी का सामान्य स्वरूप फेनामेनोलाजी की विधि- असंबंधन, विभिन्न प्रकार के अपचयन फेनामेनोलाजी का तात्त्विक पक्ष फेनामेनोलाजी का महत्त्व	5	12
मॉड्यूल-8	**अस्तित्ववाद के प्रमुख विचारक** **सोरेन किर्केगार्ड** - सत्य आत्मीयता है **कार्ल यास्पर्स** - तत्र अस्तित्व, स्व अस्तित्व, स्वतंत्र अस्तित्व **हाइडेगर** – तात्त्विक सत् एवं सत्तायें, अस्तित्ववान मानव **सार्त्र-** अस्तित्व सार का पूर्ववर्ती है, स्वतंत्रता एवं उत्तरदायित्व, आत्म प्रवंचना	5	12
योग		**40**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	**पाठ्य-सामग्री**	**विवरण**
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Passmore, J. (1966) A Hundred Years of Philosophy, Penguin Books, (Hindi Translation by C.M. Sharma, Hindi Prakashan Vibhaga Rajasthan Vishwavidyalay, Jaipur, 2. Passmore, J(1968) Recent Philosophers, Penguin Books 3. Copleston : Contemporary Philosophy. 4. Datta, D. M. (1970) Chief Currents of Contemporary Philosophy, The University of Calcutta 5. Lal, B.K. (1996) Samakalin Pascatya Darsan (Hindi), Motilal Banarsidas, 6. Saxena, Lakshmi, ed. (1991) Samakalina Pasctya Darshana (Hindi), U.P. Hindi Sansthan 7. Mishra, Nityanand: (2006) Samakalina Pascatya Darshana (Hindi), Motilal Banarsidas 8. F.H., Bradely(1969) Appearance and Reality, Oxford University Press, Oxford, London, New York 9. Tiwari, K.N. (1986) Tattva-mimamsa evam Jnanamimamsa, M.L.B.D., Delhi
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय भाषा-दर्शन पर आधारित ग्रंथ अध्ययन-वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रणीत- तत्त्वबिन्दु (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय भाषा-दर्शन पर आधारित ग्रंथ अध्ययन-वाचस्पति मिश्र द्वारा प्रणीत- तत्त्वबिन्दु (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 241

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

भारतीय भाषा दर्शन का स्वरूप अपनी समग्रता में विविधता तथा एकता का दिग्दर्शन है। यहाँ विभिन्न दार्शनिक दृष्टियों, विचारों को स्वतन्त्र रूप से पल्लवित एवं पुष्पित होने का अवसर मिला। इसका कारण संभवतः यह था कि भारतीय परंपरा में कभी भी वैचारिक संकीर्णता नहीं रही। अपने मत, विचार, सिद्धान्त, दर्शन के प्रतिपादन, प्रवर्तन की स्वतन्त्रता सभी को सदा प्राप्त रही। इस स्वतन्त्रता ने ही यहाँ की चिन्तन-भूमि को उर्वर बनाया। फलतः इस भूमि पर विविध दार्शनिक सम्प्रदायों (वादों) का आविर्भाव हुआ तथा उनका निर्विन विकास हुआ। भारतीय परम्परा में जहाँ प्रत्येक दार्शनिक को अपने सिद्धान्तों की स्वतन्त्र रूप से प्रतिपादन करने की स्वतन्त्रता थी, वहीं विभिन्न सम्प्रदायों के दार्शनिकों के मिलन, सम्मेलन, विचार-विनिमय का भी माहौल था। इस मिलन, सम्मेलन हेतु भारतीय परम्परा में शास्त्रार्थ का आयोजन एक महत्वपूर्ण मन्च था। इस मन्च के माध्यम से एक दार्शनिक दूसरे दार्शनिक को अपना पक्ष बताता था तथा दूसरे के मत को सुनता था। वाद-विवाद, खण्डन-मण्डन की प्रक्रिया द्वारा वे अपने वैचारिक मतों का संवर्द्धन, परिमार्जन करते थे। फलतः तार्किक दृष्टि से भारतीय परम्परा के दर्शन अपनी-अपनी दृष्टियों से पूर्णतया विकसित हुए। विचार विनिमय की इस परम्परा ने जहाँ भारतीय दर्शन को विविधता प्रदान किया वहीं भारतीय दर्शन की समग्रता में एकरूपता भी जोड़ा। भारतीय दर्शन के सम्प्रदाय सिद्धान्त की दृष्टि से विभिन्न हैं, किन्तु लक्ष्य की दृष्टि से एक हैं। स्वरूप (शरीर) की दृष्टि से अनेक हैं किन्तु आत्मा (लक्ष्य)की दृष्टि से एक हैं। कोई भौतिकवादी है तो कोई अध्यात्मवादी, कोई वस्तुवादी है तो कोई प्रत्ययवादी, कोई ईश्वरवादी है तो कोई निरीश्वरवादी, कोई द्वैतवादी है तो कोई अद्वैतवादी। इन सभी में एक बात पर सहमति है, वह है आत्मज्ञान, आत्मोपलब्धि, सत्य ज्ञान, मोक्ष । भारतीय दर्शन की समग्रता का निर्माण इसकी तीन प्रमुख धाराओं से होता है - वैदिक, आगमिक तथा श्रमण । वेद का प्रामाण्य मानने वाले तथा वेद को आधार रूप में मान कर दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने वाले दर्शन वैदिक दर्शन कहलाते हैं। इस परम्परा में आने वाले प्रमुख दर्शन हैं-न्याय-वैशेषिक, सांख्य-योग, मीमांसा तथा वेदान्त दर्शन। आगमिक परम्परा में वे दार्शनिक सम्प्रदाय आते हैं जो आगमों तथा तन्त्रों के आधार पर अपने सिद्धान्तों का प्रतिपादन करते हैं। इसमें प्रमुख रूप से वैष्णव, शैव तथा शाक्त दर्शन आते हैं। श्रमण परम्परा में वे दर्शन आते हैं जो मोक्ष अथवा आध्यात्मिक उपलब्धि के लिये ईश्वरीय अनुग्रह को आवश्यक न मान कर श्रम को (मानवीय प्रयास अथवा साधना को) महत्व प्रदान करते हैं। इस परम्परा में प्रमुख रूप से बौद्ध तथा जैन दर्शन आते हैं। भारतीय भाषा दर्शन के समग्र रूप को जानने के लिये इन तीनों ही धाराओं को जानना आवश्यक है। भारतीय भाषा दर्शन का समग्र रूप इन तीनों ही धाराओं से निर्मित है। भारतीय भाषा दर्शन के विकास में इन तीनों ही धाराओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

मीमांसा दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य धर्म है। धर्म के लक्षण तथा प्रमाणादि के विवेचन द्वारा यागादि क्रिया रूप का ज्ञान कराना ही मीमांसा का मुख्य लक्ष्य है। मीमांसा दर्शन के अनुसार धर्म ज्ञान के लिए वेद को छोड़ कर कोई दूसरा साधन नहीं है। धर्म के ज्ञान में केवल वेद ही प्रमाण है। प्रत्यक्ष, अनुमान आदि प्रमाण इसके ज्ञान में समर्थ नहीं हैं। इसीलिए वेद के प्रामाण्य का निरूपण इस दर्शन में अत्यन्त सबल युक्तियों से किया गया है। वेद की प्रामाणिकता में कोई आंच न आये इसएि मीमांसा ईश्वर को भी वेदों का कर्ता स्वीकार नहीं करते। उनके अनुसार वेद नित्य हैं। वेद की नित्यता स्थापित करने के लिए मीमांसक शब्द को नित्य मानते हैं। मीमांसा दर्शन शब्द की उत्पत्ति होना नहीं मानता। इसके अनुसार शब्द नित्य है क्योंकि यह नित्य द्रव्य आकाश का गुण है। नित्य होने से यह किसी अन्य कारण द्वारा उत्पन्न नहीं हो सकता। मीमांसकों के अनुसार शब्द आकाश के सभी भागों में उपस्थित रहता है तथा उपायुक्त व्यंजक द्वारा अभिव्यक्त होता है। जब हथोड़ा किसी वस्तु पर गिरता है तो हमें शब्द सुनाई देता है। यह शब्द (ध्वनि) उत्पन्न नहीं होती बल्कि अभिघात द्वारा नित्य रूप से उपस्थित शब्द (ध्वनि) अभिव्यक्त होता है। शब्द नित्य है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

मीमांसकों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय है धर्म। उनके अनुसार धर्म का ज्ञान केवल वैदिक समावेश द्वारा ही प्राप्त हो सकता है। इसके लिए वैदिक समावेश की विश्वसनीयता अथवा प्रामणिकता सिद्ध करना आवश्यक है। वैदिक समावेश की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए मीमांसक यह सिद्ध करते हैं कि शब्द नित्य है (अर्थात् वेद नित्य है), शब्दार्थ नित्य है, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध नित्य है तथा वैदिकवाक्य, जिनमें वैदिक समावेश प्राप्त होता है, वह नित्य है। मीमांसक यह मानते हैं कि वाक्यार्थ वाक्य के अंगभूत शब्दों के अर्थ पर निर्भर करता है तथा वाक्य का अपने अंगभूत शब्दों से अलग, स्वतन्त्र

कोई अर्थ नहीं होता। वाक्य की नित्यता के सम्बन्ध में मीमांसक कहते हैं कि मनुष्य द्वारा रचित वाक्य नित्य नहीं हो सकते तथा उनमें प्रामाणिकता भी नहीं हो सकती क्योंकि उनकी प्रामाणिकता उनके रचनाकार की प्रामाणिकता पर निर्भर करेगी, जिसमें दोष होने की संभावना रह सकती है। मीमांसक केवल उन वैदिक वाक्यों की नित्यता और प्रामाणिकता की बात करते हैं जिसमें वैदिक समावेश मिलते हैं क्योंकि वही धर्म के ज्ञान के साधन हैं। इसलिए मीमांसक वेद की प्रामाणिकता स्थापित करने के लिए उसे अपौरुषेय और नित्य घोषित करते हैं।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	प्रथम-प्रकरण	10	17
मॉड्यूल-2	द्वितीय-प्रकरण	10	16
मॉड्यूल-3	तृतीय-प्रकरण	10	17
मॉड्यूल-4	चतुर्थ- प्रकरण	10	16
मॉड्यूल-5	पंचम- प्रकरण	10	17
मॉड्यूल-6	षष्ठ- प्रकरण	10	17
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	तत्त्वबिन्दु, वाचस्पति मिश्र
2	संदर्भ-ग्रंथ	
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

शांकरवेदान्त– चतु:सूत्री के आलोक में (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: शांकरवेदान्त–चतु:सूत्री के आलोक में (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 242

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

नाभादास ने लिखा है कि कलियुग में मुख्य धर्मपालक शंकराचार्य हैं जिन्होंने सभी प्रज्ञानियों, अनीश्वरवादियों को सन्मार्ग पर लाया। वे सदाचार की सीमा हैं, साक्षात् सदाचार की मूर्ति हैं और उनसे बड़ा कोई सदाचारी नहीं हुआ। उनके साक्षात् शिष्य पद्मपाद ने लिखा है कि- शंकराचार्य अनुमान विग्रह हैं अर्थात् उनका आधा शरीर अनुमान से बना है। दूसरा आधा भाग श्रुति से बना है। इस प्रकार अपने शिष्य की दृष्टि में शंकराचार्य ने श्रुति और अनुमान को महत्त्व दिया था। वाचस्पति मिश्र कहते हैं कि शंकराचार्य विशुद्ध विज्ञान हैं अर्थात् उनका जीवन विशुद्धविज्ञान की मूर्ति है। एक दार्शनिक के लिए इससे बढ़कर और क्या अभिशंसा हो सकती है? शंकराचार्य द्वारा लिखित ग्रंथ निम्न हैं-(1) शारीरकभाष्य (बादरायण के ब्रह्मसूत्रभाष्य), (2) श्रीमद्भगवद्गीताभाष्य, (3) ईशोपनिषद्भाष्य, (4) केनोपनिषद् भाष्य, (5) कठोपनिषद्भाष्य, (6) प्रश्नोपनिषद्भाष्य, (7) ऐतरेयोपनिषद्भाष्य, (8) तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्य, (9) छान्दोग्योपनिषद्भाष्य, (10) बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्य, (11) मुडकोपनिषद् भाष्य, (12) माण्डूक्यकारिकाभाष्य और (13) उपदेशसहस्री। शंकराचार्य के ग्रन्थों को तीन प्रस्थानों में विभक्त किया जाता है-श्रुतिप्रस्थान, स्मृति-प्रस्थान और न्याय-प्रस्थान। उपनिषदों पर लिखे गये उनके भाष्य श्रुतिप्रस्थान के भाष्य हैं। गीताभाष्य स्मृति-प्रस्थान का भाष्य है और शारीरकभाष्य न्याय-प्रस्थान का भाष्य है। कुछ भी हो, शंकराचार्य ने जिस वेदान्त-दर्शन की स्थापना की उसके तीन स्रोत या प्रस्थान हैं-उपनिषद् या श्रुति-प्रस्थान, ब्रह्मसूत्र या न्याय-प्रस्थान और भगवद्गीता या स्मृति-प्रस्थान। इन तीनों प्रस्थानों की एकवाक्यता अद्वैतवाद में है-यही शंकराचार्य का मुख्य प्रतिपाद्य है। इस विषय को चुनौती देते हुए परवर्ती प्राचार्यों ने शाङ्कर भाष्यों की आलोचना करने के लिए ब्रह्मसूत्र, उपनिषद् और गीता पर भाष्य लिखे। परन्तु वे सब कम से कम इतने के लिए शंकराचार्य के ऋणी हैं कि प्रस्थानत्रयी पर भाष्य लिखने की प्रेरणा शंकराचार्य ने ही दी। यद्यपि शंकराचार्य के पूर्व कुछ भाष्य उपनिषदों के, या ब्रह्मसूत्र के या गीता के थे, परन्तु किसी एक प्राचार्य ने इन तीनों प्रस्थानों की एकवाक्यता नहीं स्थापित की थी। फिर शङ्कर-पूर्व ये भाष्य अब उपलब्ध भी नहीं है। इस कारण प्रस्थानत्रयी पर भाष्य लिखने की प्रेरणा देने वाले एकमात्र शंकराचार्य हैं। दूसरे शब्दों में वे अपने विरोधियों के भी गुरु हैं। भारतीय दार्शनिक अभी तक प्रस्थानत्रयी के मोह या प्रभाव से दूर नहीं हटे हैं। राधाकृष्णन और रामचन्द्र दत्तात्रेय रानडे ने इन पर भाष्य लिखे। अनेक लोगों ने गीता पर भी भाष्य लिखे। आधुनिक भाषाओं में भी प्रस्थानत्रयी पर कुछ-न-कुछ भाष्य लिखा गया है। यह सब शंकराचार्य का प्रभाव है। उन्होंने ही सर्वप्रथम प्रस्थानत्रयी को दार्शनिक गवेषणा का मूलाधार बनाया। उनकी इस परम्परा को उनके अनुयायी तथा विरोधी दोनों प्राज तक मानते आ रहे हैं। अतः आज भी भारतीय दर्शन पर सर्वाधिक प्रभाव शंकराचार्य का ही है। क्यों न हो ? यदि वे विशुद्ध विज्ञान हैं तो ऐसा होना सहज स्वाभाविक ही है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

शंकराचार्य अपने को बादरायण की परम्परा का दार्शनिक मानते हैं और उनके अनुयायी भी मानते हैं कि सूत्रकार बादरायण तथा भाष्यकार शंकराचार्य में मतैक्य है। शंकराचार्य या उनके अनुयायी कहीं बादरायण का खंडन नहीं करते हैं। शंकराचार्य ने बादरायण के ब्रह्मसूत्र पर जो भाष्य लिखा है, वह किसी वैष्णव प्राचार्य के मतों का खण्डन करने के लिए नहीं लिखा गया है, जबकि रामानुज, मध्व आदि वैष्णव आचार्यों ने जो भाष्य लिखे हैं, उनका लक्ष्य शंकराचार्य के मत का खण्डन करना है या शंकराचार्य के समान ही एक मत स्थापित करना है। अतः जहां शंकराचार्य का उद्देश्य रचनात्मक और मौलिक है, वहां अन्य आचार्यों का उद्देश्य ध्वंसात्मक या अनुकरणात्मक है। प्राचीनता की दृष्टि से शंकर का भाष्य ही सबसे प्राचीन है और सभी आचार्यों की अपेक्षा शंकराचार्य ही कालत: बादरायण के सन्निकट हैं। रामानुज, भास्कर आदि का यह कहना कि उनकी परम्परा के भाष्य शंकराचार्य के पूर्व भी थे और वे अब उपलब्ध नहीं हैं, ऐतिहासिक दृष्टि से अच्छी तरह प्रमाणित नहीं है। शंकराचार्य की परम्परा के भी अनेक शंकर-पूर्व दार्शनिक हैं, जिन्होंने अद्वैत पक्ष का समर्थन किया था। भारतीय परम्परा के अनुसार उपनिषदों के दर्शन को ही ब्रह्मसूत्र में विवेचित किया गया है। थीबो आदि शंकर के आलोचक हैं तथा मानते हैं कि उपनिषदों का दर्शन अद्वैतवाद है और शंकराचार्य ने जो उपनिषद्-भाष्य लिखे हैं, वे मूलानुसारी हैं। ऐसी परिस्थिति में यह निष्कर्ष निकालना गलत नहीं है कि शंकर का भाष्य भी ब्रह्मसूत्र का मूलानुसारी है, क्योंकि जैसे शंकर वैसे बादरायण उपनिषदों के दर्शन के ही व्याख्याता हैं। वास्तव में शंकर के मायावाद को लेकर वैष्णव प्राचार्यों ने शंकर का विरोध किया और यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि मायावाद अवैदिक है तथा ब्रह्मसूत्रकार बादरायण मायावादी नहीं हैं। परन्तु आधुनिक अनुशीलनों से सिद्ध हो गया है कि मायावाद वैदिक है, वेदों और उपनिषदों में उसकी व्याख्या की गई है तथा बादरायण के ब्रह्मसूत्र में भी उसका विवेचन है। ईश्वरवाद को लेकर भी वैष्णव प्राचार्यों ने शंकर का विरोध किया और आधुनिक आलोचकों ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि बादरायण ईश्वरवादी हैं तथा शंकराचार्य ब्रह्मवादी हैं। इन आलोचकों की दृष्टि में शंकर का

ब्रह्मवाद निर्गुण ब्रह्मवाद है और बादरायण का ईश्वरवाद सगुण ब्रह्मवाद है। परन्तु निर्गुण और सगुण का ऐसा पृथक्करण शंकराचार्य के दर्शन और परम्परा में नहीं है। शंकर उतने ही बड़े ईश्वरवादी हैं जितने ब्रह्मसूत्र के वैष्णव या शैव भाष्यकार के। परन्तु वे ईश्वर के किसी नाम के प्रति आग्रह नहीं करते, वे उसको एक ही श्वास में शिव, विष्णु, शक्ति आदि पुकारते हैं। यही दृष्टि वैदिक है; क्योंकि सभी देवों का देवत्व एक है, उनमें नाम, रूप, गुण, विभूति आदि के आधार पर भेद करना वेद-सम्मत नहीं है। अतएव जिन लोगों ने ईश्वरवाद को लेकर बादरायण और शंकराचार्य में भेद किया है, उन्होंने तो न तो बादरायण को समझा है और न शंकराचार्य को। दोनों ने निमित्तेश्वरवाद या ईश्वरकारणवाद और पाञ्चरात्र ईश्वरवाद का खण्डन किया है। तर्कपाद के अन्तिम दो अधिकरण में इसे देखा जा सकता है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	जिज्ञासाधिकरण	15	25
मॉड्यूल-2	जन्माद्यस्य यत:	15	25
मॉड्यूल-3	शास्त्रयोनित्वात्	15	25
मॉड्यूल-4	तत्तसमन्वयात्	15	25
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Bhattacharya, V. S. : The Agama Sastra of Gaudpada. 2. Pandey, S. L. : Pre-Sankara Advaita Philosophy. 3. Nakamura, Hajime : A History of Early Vedanta Philosophy. 4. Deusson, Paul : The system of the Vedanta. 5. Naulakha, R. S. : Sankara's Brahmavada. 6. Rao, K. B. R. : Ontology of Advaita. 7. Dasgupta, S. N. : A History of Indian Philosophy Vol II. 8. Coward, H. G. (ed) : Studies in Indian Thought. 9. Thibaut, George : The Vedanta Sutra with Sankaracarya's Commentary (S B E Vols. 34 & 38). 10. Tripathi, R. K.: Brahmasutra Sankara – Bhasya Catussutri (Hindi). 11. Saraswati, Satyananda : Brahma – Sutra Sankara – Bhasya (Hindi). 12. Sharma, C. D. : Bauddha Darsana aur Vedanta (Hindi). 13. Das, R. : Introduction to Sankara.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

काश्मीर शैवदर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: काश्मीर शैवदर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 243

क्रेडिट: 4 .

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

तान्त्रिक ज्ञान अनुभूति पर आधारित है, इसलिए वह 'आगम' या 'आगमन' है। अनुभव पर आधारित होने की दृष्टि से तन्त्र (आगम) को हम वेद का पूरक कह सकते हैं। यह कहा जा सकता है कि वेद ने जो ईश्वरीय ज्ञान दिया उसे तन्त्र ने व्यावहारिक अनुभव से पुष्ट किया; 'श्रुति' की पुष्टि 'अनुभूति' में हुई। तात्पर्य यह कि ईश्वरीय वचन विश्वास अथवा मान्यता की वस्तु न रहकर अनुभूत सत्य बन गया। कुछ पाश्चात्य दार्शनिक यह जो आक्षेप करते हैं कि भारतीय दर्शन विश्वास पर आधारित है क्योंकि वह श्रुति-वाक्यों को मानकर चलता है, वह आक्षेप गलत है। भारतीय दर्शन काल्पनिक विचारों (Speculation) पर नहीं वरन् अनुभूत सत्यों पर आधारित है। भारतीय संस्कृति का अन्तिम आधार उच्च आध्यात्मिक अनुभव है। आखिर क्या इतनी बड़ी संस्कृति काल्पनिक विचारों पर आधारित हो सकती है ? तन्त्र में मतान्तर की समस्या-तन्त्र (आगम) के विषय में एक विचित्रता यह है कि आगम एक प्रकार के नहीं हैं; तीन प्रकार के दर्शन देने वाले अलग-अलग तीन प्रकार के आगम हैं। कुछ आगम भेदपरक हैं, कुछ भेदाभेदपरक हैं और कुछ अभेदपरक हैं जिन्हें पारिभाषिक अर्थ में क्रमश: शिव-आगम, रुद्रआगम एवं भैरव-आगम कहा जाता है। इन तीन प्रकार के आगमों से वस्तुतः तत्परक तीन प्रकार के दार्शनिक सम्प्रदाय निकले हैं। भेद परक आगम से 'शैवसिद्धान्त', भेदाभेद परक आगम से 'वीर शैव' दर्शन एवं अभेदपरक आगम से 'त्रिक' या 'काश्मीर शैव' दर्शन (जिसे प्रत्यभिज्ञा दर्शन भी कहते हैं) निकला है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

काश्मीर शैव दर्शन तान्त्रिक (आगमिक) परम्परा का सबसे प्रधान दर्शन है। भारतीय संस्कृति, धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में तान्त्रिक परम्परा का महत्त्वपूर्ण योगदान है। तान्त्रिक दर्शन में जीवन के ऐसे सत्यों की गवेषणा है, जिन्हें जानना सुखी जीवन के लिए अपरिहार्य है। उन चिरन्तन सत्यों का ज्ञान आज के जीवन में भी संगत है; तन्त्र ने चिरन्तन नवीन रहने वाला स्वस्थ जीवन दर्शन दिया है। तान्त्रिक (आगमिक) जीवन-दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता है जीवन एवं जगत् के प्रति भावात्मक (Positive) दृष्टिकोण। तन्त्र ने जगत् एवं जागतिक मूल्यों (values) को स्वीकार कर उन्हें इस प्रकार प्रयोग की विधा दी है जिससे हम सुखी एवं स्वस्थ जीवन बिताते हुए जीवन के चरम लक्ष्य आत्मप्राप्ति की ओर अग्रसर होते रहें। यहाँ भोग और योग का प्रवृत्ति एवं निवृत्ति का समन्वय है। यहाँ भोग भी योग बन जाता है एवं साधारणतया बन्धन करने वाला संसार स्वयं मोक्ष का साधन बन जाता है। 'निषेधात्मक जीवन-दर्शन का मार्जन :-इस जीवन-दर्शन का महत्त्व तब और भी प्रखर रूप से सामने आता है जब हम इसे ऐसे जीवन-दर्शनों के समकक्ष रखकर विचार करते हैं, जिनमें जीवन एवं जगत् को नकारा गया है तथा आत्मप्राप्ति के लिए संसार के त्याग (संन्यास) की शिक्षा दी गई है। उदाहरण के लिए वेदों (उपनिषदों) को आधार मानकर चलने वाला अद्वैत-वेदान्त दर्शन यह मानता है कि परम-तत्त्व ब्रह्म (आत्मा) वस्तुतः निष्क्रिय तत्त्व है; वह स्वयं में कुछ भी नहीं करता, सारा सृष्टि-व्यापार ब्रह्म पर अविद्या (या माया) के द्वारा आक्षिप्त (super-imposed) है। दूसरे शब्दों में, अविद्या के कारण पैदा हुआ संसार ब्रह्म (जो हमारा वास्तविक स्वरूप है) के ऊपर पड़ा हुआ पर्दा अथवा अवरोध है। फलतः यदि अपने वास्तविक स्वरूप (आत्मा या ब्रह्म) को पाना है तो उसपर पड़े और आश्चर्यजनक सत्य यह है कि जब हम संसार को इस भाँति आत्मसात् करते हैं तो संसार हमसे दुश्मनी करना छोड़ देता है, अर्थात् हमारे लिए बाधक नही बनता। वह तभीतक हमसे दुश्मनी करता है जबतक हम उसको अपने से अलग रखते हैं। जैसे हम अपने ही आत्मीयों को अज्ञानवश पराया समझकर उनसे दुश्मनी कर लेते हैं तो वे भी हमसे दुश्मनी करते हैं तथा हमारे काम में बाधक बनते हैं, और जब हम परायापन हटाकर पुनः उनको अपना बना लेते हैं तो वे हमारे मित्र बन जाते हैं और हमारे साधक हो जाते हैं; उसी प्रकार जब हम संसार के साथ द्वैत हटाकर उसे आत्मसात् कर लेते हैं तो वह फिर बाधक बनने की जगह साधक बन जाता है (मोक्षायते च संसारः)। जब हम शत्रु को मित्र बना लेंगे तो फिर वह शत्रु रह ही नहीं जायेगा। तन्त्र अनुभव पर आधारित है-आगम (तन्त्र) की यह भी महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि इसमें जो सिद्धान्त दिए गए हैं वे कल्पना अथवा मानसिक चिंतन (Speculation) के आधार पर नहीं हैं वरन् अनुभव के आधार पर हैं। योगियों ज्ञानियों ने सत्य का जो अनुभव प्राप्त किया है उसी से यह परम्परा चली है। इसीलिये अभिनवगुप्त तन्त्रपरम्परा को 'अनुभव-सम्प्रदाय' कहते हैं। उल्लेखनीय है कि वेद को 'निगम' तथा तन्त्र को 'आगम' कहा जाता है।

तर्कशास्त्र की दृष्टि से 'निगम' या 'निगमन' (Deduction) का अर्थ है आधार वाक्य को मान लेना और मानकर उससे आगे निष्कर्ष निकालना; और 'आगम' अथवा 'आगमन' (Induction) का अर्थ है आधार वाक्यों को मान नहीं लेना वरन् अनुभव में सत्य को देखकर आधारवाक्य प्राप्त करना और तब उससे निष्कर्ष निकालना। तात्पर्य यह है कि आगमन (आगम) की विशेषता अनुभव पर आधारित होने में है। यद्यपि वेद का ज्ञान अनुभवगम्य भी है, परन्तु वेद को मुख्यतया ईश्वरप्रदत्त ज्ञान (Revelation) माना जाता है, (यस्य निःस्वसितं वेदा:) ऋषियों को केवल उस ज्ञान का दृष्टा अथवा प्राप्तिकर्ता माना जाता है (ऋषयो मन्त्रद्रष्टार:)। इसीलिये वैदिक परम्परा 'निगम' या 'निगमन' है। किन्तु तन्त्र वस्तुतः जीवन में अनुभूत व्यावहारिक ज्ञान है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**आगमिक दर्शन की विशेषताएं** 1. दर्शन के क्षेत्र में आगम की विशेषताएँ 2. परमतत्त्व की अवधारणा में शक्ति का समावेश 3. शिव का स्वातन्त्र्य 4. शिव की विश्वमयता 5. सृष्टि-प्रक्रिया में शिव का सक्रिय भाग 6. धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में आगम की विशेषता-जगत् के प्रति धार्मिक भाव, प्रवृत्ति मार्ग 7. मोक्ष से लौकिक कार्यों की संगति 8. आगम काल, 9. दार्शनिक काल	10	17
मॉड्यूल-2	**काश्मीर शैव दर्शन का इतिहास तथा साहित्य** 1. ज्ञान मीमांसा ज्ञान का स्वरूप 2. प्रमाण विचार 3. आगम प्रमाण 4. प्रामाण्य विचार 5. भ्रम-सिद्धान्त	10	17
मॉड्यूल-3	**कारणता**-काश्मीर शैव दर्शन द्वारा आरम्भवाद, बौद्ध कारणता सिद्धान्त, परिणामवाद, विवर्तवाद की आलोचना; काश्मीर शैव दर्शन में कारणता-आभासवाद **शिव-शक्तिस्वरूप**-निर्वचन की समस्या, शिव चित् रूप, शक्तिरूपता, शिव में आत्म-चेतना, शिव प्रकाश विमर्श रूप, शक्ति, शक्ति का अर्थ, शक्ति के भेद . शिव-शक्ति सम्बन्ध, **शिव का सृष्टि से सम्बन्ध**-सृष्टि का उद्देश्य, लीलावाद, जगत से शिव का सम्बन्ध, शिवेच्छा ही जगत् रूप धारण करती है, शिव और जगत् में स्वरूप अथवा अवस्था भेद	10	17
मॉड्यूल-4	**आभासवाद**-जड़वादी पक्ष, जड़वादी पक्ष का खण्डन, आभासवादी पक्ष, जड़वादी आक्षेप, आभासवादी उत्तर **स्वातन्त्र्यवाद-** सृष्टि-प्रक्रिया शिव का स्वरूप लक्षण नहीं है, सृष्टि को स्वातन्त्र्य मानने का शास्त्रीय आधार, स्वातन्त्र्य के भेद, स्पन्द सिद्धान्त	10	17
मॉड्यूल-5	**अशुभ की समस्या**- अशुभ का कारण-इच्छा स्वातन्त्र्य का दुरूपयोग, कर्म के लिए शिव नहीं अपितु जीव ही जिम्मेदार, 'भगवान कम कराता है' का अर्थ **वाक् सृष्टि**-वाक् शक्ति के स्तर-परा, पश्यन्ती, मध्यमा, वैखरी; वैखरी की अशुद्धावस्था में अभिव्यक्ति, भाषीय विज्ञानवाद, वर्ण क्रम **सृष्टि' क्रम (छत्तीस तत्त्व)**- शुद्ध अध्वा और अशुद्ध अध्वा-शिव से लेकर पृथ्वी तक छत्तीस तत्त्वों का विवेचन	10	16
मॉड्यूल-6	**आत्मा**-आत्मा की सत्ता सिद्धि, आत्मा का स्वरूप **बन्धन**-आणव मल, मायीय मल, कर्म मल, बौद्ध अज्ञान और पौरुष अज्ञान मोक्ष **मुक्ति का स्वरूप**, प्रत्यभिज्ञा, बौद्ध ज्ञान, पौरुष ज्ञान, जीवन्मुक्ति, शक्तिपात, मोक्ष के उपाय	10	16

योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	**आधार/पाठ्य ग्रंथ**	Isvarapratyabhijnavimarsini (Jnanadhikara Only) of Abhinavagupta, Paramarthasara, and Pratyabhijnahrdayam of Kshemaraja
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Pandey, K C : Bhaskari Vol III 2. Singh, Jaidev : Pratyabhijnahrdayam. 3. Chatterjee, J C : Pratyabhijnahrdayam. 4. Mishra, K P : Sattrmsattattvasamdoh,. (Ek Darsanika Addhyayana) 5. Pandey, K C : Abhinavagupta and His Times. 6. Pandit, B N : Kashmir Saiva Darsana. 7. Sharma, L N : Kashmir Saivism. 8. Misra, Kamalakar : Significance of Tantric Tradition. 9. Misra, Kamalakar : Kashmir Saivism : The Central Philosophy of Tantrism. 10. Mishra, K P : Kashmir Saiva Darsana : Mula Siddhanta. 11. Sastri, Suryanarayan : Sivadvaita of Srikantha. 12. Murphy, Paul R : Triadic Mysticism.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय प्रमाणविचार-धर्मकीर्ति प्रणीत न्यायबिन्दु से प्रत्यक्ष खंड तथा धर्मराजाध्वरीन्द्र प्रणीत वेदान्त परिभाषा से आगम प्रमाण पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: भारतीय प्रमाणविचार-धर्मकीर्ति प्रणीत न्यायबिन्दु से प्रत्यक्ष खंड तथा धर्मराजाध्वरीन्द्र प्रणीत वेदान्त परिभाषा से आगम प्रमाण (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 244

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

बौद्ध कल्पनारहित और निभ्रान्त ज्ञान को प्रत्यक्ष कहते हैं। कल्पना रहित को ही प्रत्यक्ष कहने का कारण यह है कि कल्पना के लिए अर्थ की उपस्थिति अपेक्षित नहीं है, इसका सीधा सा आशय यही है कि प्रत्यक्ष पदार्थ के सानिध्य में ही हो सकता है। बौद्ध दार्शनिकों के अनुसार किसी वस्तु की स्वलक्षणात्मक परिभाषा सम्भव नहीं है, क्योंकि प्रत्येक धारणा अपने प्रतिरूप के साथ सम्बद्ध होती है। जैसे नील और नीलेतर। यदि नील के सम्बन्ध में कुछ कहना अपेक्षित हो तो व्यावृत्ति के नियम का प्रयोग करते हुये यह कहा जा सकता है कि 'नील' वह है जो 'नीलेतर' नहीं है। यही सिद्धान्त बौद्धदर्शन में 'अपोहवाद' के नाम से प्रसिद्ध है। प्रत्यक्ष की परिभाषा भी बौद्धों के इस सिद्धान्त से प्रभावित है। यों तो सभी बौद्ध दार्शनिकों ने व्यावृत्ति के नियम से ही प्रत्यक्ष का विवेचन किया है, किन्तु इस पर भी वे स्पष्टत: दो वर्गों में बँटे हुए प्रतीत होते हैं। एक वर्ग प्रत्यक्ष के लक्षण में 'अभ्रांत' शब्द का प्रयोग नहीं करता, जबकि दूसरा वर्ग उसका समावेश आवश्यक मानता है। पहले वर्ग के प्रवर्तक आचार्य हैं दिङ्नाग, और दूसरे के धर्मकीर्ति । शान्तरक्षित और कमलशील ने दोनों मतों में सामंजस्य स्थापित करने का प्रयत्न किया किन्तु उनका झुकाव भी धर्मकीर्ति की ओर अधिक लगता है।

तत्त्व विवेचन में शब्द प्रमाण का प्रमुख स्थान है। ब्रह्म का निर्वचन शब्द प्रमाण के आधार पर ही किया जा सकता है। उसी को श्रुति प्रमाण भी कहते हैं। श्रुति एवं अनुभव दोनों ही ऐसे प्रमाण हैं, जिनके माध्यम से ब्रह्म का ज्ञान किया जा सकता है। ब्रह्म; जगत् को उत्पन्न करता है, जगत् का पालन करता है तथा उसका नाश भी करता है। उपनिषद् वाक्यों एवं ब्रह्मसूत्र के आधार पर भी उक्त तथ्य की पुष्टि होती है। प्रायः सभी उपनिषद् वाक्यों के माध्यम से ब्रह्म की ही सिद्धि होती है। अभेद का प्रतिपादन करने वाले उपनिषद् वाक्यों के रहते हुए, इन वाक्यों का दूसरा अर्थ नहीं किया जा सकता। कुछ दार्शनिक उपनिषद् वाक्यों का "कर्ता एवं देवता रूप" अर्थ करते हैं। इस विषय में यह प्रश्न उठता है कि श्रुति वाक्यों के माध्यम से जिस ब्रह्म का प्रतिपादन होता है, वह ब्रह्म पहले से सिद्ध है या असिद्ध। यदि ब्रह्म पहले से सिद्ध है, तो उसका ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण के माध्यम से भी होना चाहिए। जैसे घट, पट, आदि पदार्थ पहले से सिद्ध हैं, उनका ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण से होता है। यदि ब्रह्म भी पहले से सिद्ध है और उसी का प्रतिपादन उपनिषद् वाक्यों से होता है, तो उपनिषद् वाक्य पूर्व-सिद्ध ब्रह्म का ही प्रतिपादन करते हैं। पूर्व सिद्ध वस्तु का प्रतिपादनकर्ता, उसका मूल प्रतिपादक नहीं होता, अपितु सिद्ध का प्रतिपादन करने से वह अनुवादक होता है। अनुवाद को प्रामाणिक नहीं माना जाता, इसलिए श्रुति वाक्यों के द्वारा ब्रह्म का प्रतिपादन मानना उपयुक्त नहीं है। इस आक्षेप के समाधान के रूप में यह कहा जाता है कि ब्रह्म, सिद्ध वस्तु तो अवश्य है, किन्तु उसका प्रतिपादन श्रुति के अतिरिक्त अन्य से नहीं हो सकता। "तत्त्वमसि' इस प्रकार के अभेद का प्रतिपादन श्रुति के अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रमाण से सम्भव नहीं है। इसलिए श्रुति को ही मूलरूप से ब्रह्म का प्रतिपादक माना जाता है। यहाँ पर पुनः यह प्रश्न उठता है कि किसी भी वस्तु के विषय में दो प्रकार के विकल्प होते हैं या तो कोई वस्तु किसी गुण के कारण ग्रहण करने योग्य होती है, इसी को उपादेय भी कहते हैं। या किसी विशेष दोष के कारण ग्रहण करने योग्य नहीं होती है। इसी को अनुपादेय या हेय कहते हैं । अर्थात् कोई भी वस्तु या तो हेय होगी या उपादेय होगी। जो वस्तु हेय या उपादेय होगी, उसका सन्बन्ध किसी न किसी क्रिया के साथ होगा। ब्रह्म का सम्बन्ध किसी भी क्रिया के साथ नहीं माना जाता। इसलिए ब्रह्म न तो हेय है, न उपादेय । वह हेय एवं उपादेय दोनों ही प्रकार की विशेषताओं से रहित है। इस स्थिति में ब्रह्म का प्रतिपादन करना सार्थक नहीं है। श्री शंकराचार्य जी का कथन है कि ब्रह्म हेय एवं उपादेय से रहित है, किन्तु उसी के प्रतिपादन से सभी प्रकार के क्लेशों का नाश होता है। उसी के माध्यम से सी. ज्ञान से दुःखों की निवृत्ति होती है, अतः उसका प्रतिपादन करना सार्थक है और चूँकि उसका प्रतिपादन शब्द के माध्यम से ही हो सकता है, इसलिए शब्द-प्रमाण अतीव उपयोगी है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

दिङ्नाग के अनुसार प्रमाण दो ही होते हैं-प्रत्यक्ष और अनुमान और प्रत्यक्ष वह धारणा है जो कल्पना, नाम, जाति आदि से संपृक्त न हो। धर्मकीति, उपर्युक्त परिभाषा में अभ्रान्त शब्द को भी जोड़ते हैं। इस प्रकार धर्मकीर्ति के विचार में प्रत्यक्ष वह ज्ञान है, जो निन्ति हो तथा जिसमें नाम, जाति आदि की कल्पना का समावेश न हुआ हो। धर्मोत्तर संभवत: इस बात के प्रति सचेत थे कि 'कल्पनापोढ़' शब्द में ही 'अभ्रान्त' शब्द के अर्थ का भी समावेश हो सकता है, किन्तु वे धर्मकीर्ति के इस मत का समर्थन करते हैं कि गाड़ी आदि से यात्रा करते हुए लोगों को मार्ग के दोनों ओर पीछे छूटते

हुए पेड़ों आदि के चलने या दौड़ने का जो भ्रम होता है, उसका परिहार 'अभ्रान्त' शब्द के प्रयोग के बिना नहीं हो सकता। वैसे वे दिङ्नाग के इस मत को भी उचित समझते हैं कि आनुभविक भ्रमों के सम्बन्ध में कल्पनापोढ़ शब्द ही पर्याप्त है। धर्मोत्तर के अनुसार धर्मकीति 'अभ्रान्त' शब्द द्वारा इस बात का संकेत करना चाहते थे कि प्रत्यक्ष से हमें स्वलक्षण वस्तु का ज्ञान होता है।' असंग के अनुसार अभ्रान्त ज्ञान वह है जो (1) संज्ञा भ्रान्ति, (2) संख्या भ्रान्ति (3) संस्थान भ्रान्ति (4) वर्णभ्रान्ति, तथा (5) कर्म भ्रान्ति से मुक्त हो। इन भ्रान्तियों में चित्त का जो आग्रह है, वह चित्तभ्रान्ति है तथा उन भ्रमपूर्ण विषयों में जो आसक्ति है वह दृष्टि भ्रान्ति है। इन भ्रान्तियों से विरहित तथा नाम, जाति आदि की योजना से नितान्त अस्पृष्ट जो ज्ञान होता है उसे प्रत्यक्ष कहते हैं। धर्मोत्तर ने प्रत्यक्ष के विषय में यह भी कहा कि जिस प्रकार 'गो' शब्द गम् धातु से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ 'गमन' है, पर व्यावहारिक दृष्टि से यह विशेष प्रकार के पशु का बोधक है, इसी प्रकार प्रत्यक्ष से अभिप्राय है 'प्रतिगतमाश्रितमक्षम्', पर व्यावहारिक दृष्टि से इसका आशय है साक्षात्कार, (ततश्च यत्किंचिदर्थस्य साक्षात्कारिज्ञानं, तत्प्रत्यक्षमुच्यते)। धर्मोत्तर का मत है कि धर्मकीर्ति व दिङ्नाग द्वारा दी परिभाषाएं कुछ विशेषताओं (अकल्पनात्मक, अभ्रमात्मक) की बोधक है। अत: उनके मत में प्रत्यक्ष का आशय है-अर्थसाक्षात्कारित्व (अर्थसाक्षात्कारित्वम् अर्थेषु साक्षात्कारिज्ञानम्) शेरबात्सिकी ने भी इस मत का अनुमोदन किया है। परन्तु विनीतदेव व कमलशील के मत में दिङ्नाग व धर्मकीर्ति की परिभाषाएँ भी प्रत्यक्ष के स्वरूप की बोधक हैं, न कि विशेषताओं की। विनीतदेव का मत है कि जो कुछ अकल्पनात्मक व अभ्रमात्मक है, वह प्रत्यक्ष है। बौद्ध परिभाषा का निष्कर्ष संक्षेप में यह है कि प्रत्यक्ष एक ऐसा विज्ञान है जिसके बाद विकल्प आता है, क्योंकि विकल्प किसी विशेष संदर्भ में कल्पनाचित्र के अतिरिक्त और कुछ नहीं होता। यह भी ज्ञातव्य है कि बौद्धों के चार संप्रदायों में से वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक यथार्थवादी हैं, तथा योगाचार और माध्यमिक आदर्शवादी हैं। वैभाषिकों की ऐसी मान्यता है कि समस्त संसार प्रत्यक्ष ज्ञान का क्षेत्र है। बिना प्रत्यक्ष के अनुमान नहीं हो सकता क्योंकि यदि प्रत्यक्ष ज्ञान से उचित सामग्री उपलब्ध न हो तो हम व्याप्ति का बोध भी नहीं कर सकते। सौत्रान्तिक बाह्य संसार की सत्ता को स्वीकार करते हुये भी उसका प्रत्यक्षण स्वीकार नहीं करते। माध्यमिकों का यह मत है कि बाह्य पदार्थ एवं आन्तरिक अवस्थाएँ दोनों ही शून्य हैं। यह शाखा चरम विधि और चरम निषेध दोनों के मध्यम मार्ग को स्वीकार करती है। योगाचार में ऐसे आदर्शवाद का विकास होता है जो समस्त यथार्थता को केवल विचार-सम्बन्धों के रूप में ही परिणत कर देता है। वे विज्ञान अथवा चेतना के अतिरिक्त अन्य सब पदार्थों की सत्ता का निषेध करते हैं। इसके अतिरिक्त बौद्ध दार्शनिकों ने नैयायिकों द्वारा दी गई प्रत्यक्ष की परिभाषा में मुख्य रूप से यह दोष बताया है कि वास्तविक प्रत्यक्ष निविकल्पकावस्था में ही हो सकता है। प्रत्यक्ष का अपना विषय, कारण और व्यापार होता है। सभी ज्ञानों का यह सामान्य स्वभाव है कि उनका कारण ही उनका विषय भी होता है। प्रत्यक्ष का व्यापार है-अपने विषय का आभास करना। जहाँ तक आभासित वस्तु के नाम रूप आदि का प्रश्न है, वह प्रत्यक्ष की परिधि से बाहर की बात है। बौद्धों के उपयुक्त मत का नैयायिकों ने दृढ़ता से खन्डन किया है। बौद्ध प्रत्यक्ष को नाम जाति आदि से रहित मानते हैं और साथ ही कल्पनापोढ़' शब्द के द्वारा उसका उल्लेख भी करते हैं। नैयायिकों के अनुसार यह स्वतोव्याघात है। इसके अतिरिक्त यदि कल्पनापोढत्व को ही प्रत्यक्ष माना जाय तो 'सविकल्पक प्रत्यक्ष' का बहिष्कार हो जायेगा। अत: नैयायिकों के मत में बौद्धों द्वारा दी गई प्रत्यक्ष की परिभाषा मान्य नहीं है।

महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि शब्द के माध्यम से परोक्ष ज्ञान ही होता है, या अपरोक्ष ज्ञान भी ? इस विषय में दो प्रकार के मत हैं-एक मत विवरण पक्ष का है, दूसरा भामती पक्ष का इस मत का आशय यह है कि विषय के समीप होने पर अपरोक्ष ज्ञान और विषय के समीप न होने पर परोक्षज्ञान होगा। "तत्त्वमसि' इस वाक्य के द्वारा जो ब्रह्म ज्ञान होता है। वह ब्रह्म, प्रमाता से अभिन्न है और अभिन्न होने के कारण अत्यन्त समीप भी। इसलिए शब्द के द्वारा अपरोक्ष ज्ञान होता है। "तुम दशवें हो" इस वाक्य के द्वारा भी इस की पुष्टि होती है। भामती पक्ष की मान्यता के अनुसार यदि इन्द्रियों में सूक्ष्म विषय को ग्रहण करने की क्षमता है, तो उनके माध्यम से विषय का अपरोक्ष ज्ञान होगा अन्यथा नहीं। शब्द के द्वारा अपरोक्ष ज्ञान नहीं होता। उस संस्कार सम्पन्न मन के माध्यम से ब्रह्म का अपरोक्ष ज्ञान होता है। श्रुतियों में कहीं-कहीं पर इस सिद्धान्त का विरोध मालूम पड़ता है, क्योंकि यह कहा गया है-"यतोवाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह" अर्थात् मन और वाणी भी उस ब्रह्म के पास नहीं पहुँच सकते। फिर प्रश्न उठता है यदि मन ब्रह्म के पास नहीं पहुँच सकता तो उसके द्वारा ब्रह्म का अपरोक्ष ज्ञान कैसे हो सकता है ? इस विषय में भामती पक्ष का कथन है कि मन का, ब्रह्म के पास न पहुँचने का अभिप्राय यह है कि, जो मन संस्कार से सम्पन्न नहीं है उस मन के माध्यम से ब्रह्म का अपरोक्ष ज्ञान नहीं हो सकता।। यहाँ पर एक शंका यह उठती है, कि उपनिषदों में उल्लेख है कि "तं तु औपनिषदं पुरुषं पृच्छामि अर्थात् ब्रह्म उपनिषद वेद्य है। यदि ब्रह्म उपनिषद वेद्य है, तो भामती पक्ष से इसका विरोध है होगा। किन्तु विचार करने पर मालूम होता है कि भामती पक्ष से से इसका विरोध नहीं है। विरोध तो तब होता जबकि ब्रह्म का ज्ञान श्रति प्रमाण या शब्द प्रमाण से न मानकर किसी अन्य प्रमाण के द्वारा माना जाता। किन्तु, भामती पक्ष ब्रह्म का परोक्ष ज्ञान श्रुति प्रमाण से ही मानता है, एवं अति प्रमाण से परोक्ष रूप से ज्ञात ब्रह्म का संस्कार युक्त मन के माध्यम से अपरोक्ष ज्ञान होता है। ब्रह्म के अपरोक्ष ज्ञान का कारण परम्परा के अनुसार श्रुति ही है। इसलिये अपरोक्ष ज्ञान, शब्द के माध्यम से ही होता है। माध्यम से ही होता है। इस प्रकार यदि शब्द प्रमाण का अर्थ श्रुति ही माना जाय तो यह स्पष्ट है, कि शब्द ही एक ऐसा प्रमाण है, जिसका सम्बन्ध किसी व्यावहारिक वस्तु से नहीं, अपितु पारमार्थिक ब्रह्म से ही है। अन्य प्रमाणों के के विश्लेषण से अविद्या, ब्रह्म तथा अन्य वस्तुओं का ज्ञान हो सकता है, किन्तु श्रुति या शब्द का ब्रह्म ही साक्षात् विषय है, अन्य नहीं। श्रुति के इस महत्व एवं अनिवार्यता को वेदान्त के अतिरिक्त अन्य किसी दार्शनिक ने स्वीकार नहीं किया है। संक्षेप में हम वेदान्त के इस सिद्धान्त का निष्कर्ष तीन वाक्यों में रख सकते हैं-(क) ब्रह्म उपनिषद वेद्य है (ख) ब्रह्म केवल उपनिषदवेद्य है (ग) केवल ब्रह्म ही उपनिषद वेद्य है। इस प्रकार तत्त्वविवेचन की दृष्टि से शब्दप्रमाण का महत्वपूर्ण स्थान है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	न्यायबिन्दु, प्रत्यक्ष परिच्छेद	30	50
मॉड्यूल-2	वेदान्त परिभाषा, आगम परिच्छेद	30	50
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	धर्मकीर्ति प्रणीत न्यायबिन्दु , धर्मराजाध्वरीन्द्र प्रणीत वेदान्त परिभाषा
2	संदर्भ-ग्रंथ	1. Shastri, S. S. : Vedanta Paribhasa (English Translation). 2. Musalgaonkar (ed) : Vedantaparibhasa (Hindi). 3. Datta, D. M. : Six ways of knowing. 4. Satprakasananda : Methods of Knowledge 5. Nyayabindu translated into Hindi by Pt. C. S. Shastri. 6. Nyayabindu translated into Hindi by Dr. S. N. Shastri. 7. Buddhist Logic Vol. II, by Stcherbatsky. 8. Bhattacharya, V. S. : The Agama Sastra of Gaudpada. 9. Pandey, S. L. : Pre-Sankara Advaita Philosophy. 10. Nakamura, Hajime : A History of Early Vedanta Philosophy. 11. Deusson, Paul : The system of the Vedanta. 12. Naulakha, R. S. : Sankara's Brahmavada. 13. Rao, K. B. R. : Ontology of Advaita. 14. Dasgupta, S. N. : A History of Indian Philosophy Vol II. 15. Coward, H. G. (ed) : Studies in Indian Thought.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

सौंदर्यमीमांसा (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : सौंदर्यमीमांसा (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 245

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर : IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत विद्यार्थी सौंदर्यशास्त्र का परिचय, परिभाषा, स्वरूप, क्षेत्र, शास्त्रीय सौंदर्यशास्त्र : भरतमुनि का सौंदर्यशास्त्र, आनंदवर्धन : ध्वनि सम्प्रदाय, अभिनवगुप्त की अभिनवभारती, रस सिद्धांत, रीति सिद्धांत, गुण सिद्धांत, वकरोक्ति सिद्धांत, आधुनिक सौंदर्यशास्त्र :रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द, आनंद कुमार स्वामी, एम. हिरियन्ना, रामकृष्ण, विवेकानंद, गांधी, पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र के अंतर्गत प्लेटो, अरस्तू, कान्ट, हेगल, शोपेनहावर,नीत्शे, क्रोचे, कान्ट का सौंदर्यशास्त्र में सौंदर्य की सार्वभौमिकता, सौंदर्य की प्रयोजनहीन-प्रयोजनता, सुंदर तथा उदात्त : एक तुलनात्मक दृष्टि, सौंदर्य उदात्तता एवं नैतिकता, सौंदर्य परक निर्णयों का निगमन, कान्ट का कला सिद्धान्त इत्यादि का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यचर्या के अध्ययन उपरांत सौंदर्यशास्त्र के विभिन्न आयामों से न सिर्फ परिचित हो सकेंगे वरन् भारत की गौरवशाली सौंदर्यशास्त्रीय परपंरा का अध्ययन करने के साथ ही पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र की भी समझ विकसित कर सकेंगे। सौंदर्य मनुष्य का आभूषण है। दर्शनशास्त्र के इस पाठ्यचर्या के माध्यम से विद्यार्थियों के मस्तिष्क में सौंदर्यबोध का विकास होगा जो उनके व्यक्तित्व विकास में न सिर्फ सहायक होगा अपितु इसकी महत्ता को भी व्याख्यायित करने में समर्थ होगा।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	सौंदर्यशास्त्र 1.1- परिचय 1.2- परिभाषा 1.3- स्वरूप 1.4- क्षेत्र	12	20
मॉड्यूल-2	शास्त्रीय सौंदर्यशास्त्र 2.1- भरतमुनि का सौंदर्यशास्त्र 2.2- आनंदवर्धन : ध्वनि सम्प्रदाय 2.3- अभिनवगुप्त की अभिनवभारती 2.4- रस सिद्धांत 2.5- रीति सिद्धांत 2.6- गुण सिद्धांत 2.7- वकरोक्ति सिद्धांत	12	20
मॉड्यूल-3	भारतीय आधुनिक सौंदर्यशास्त्र के विचारक 3.1- रवीन्द्रनाथ टैगोर 3.2- श्री अरविन्द 3.3- आनंद कुमार स्वामी 3.4- एम. हिरियन्ना	12	20

	3.5- रामकृष्ण परमहंस 3.6- विवेकानंद 3.7- महात्मा गांधी		
मॉड्यूल-4	पाश्चात्य सौंदर्यशास्त्र के विचारक 4.1- प्लेटो 4.2- अरस्तू 4.4- हेगल 4.5- शोपेनहावर 4.6- नीत्शे 4.7- क्रोंचे	12	20
मॉड्यूल-5- -	कान्ट का सौंदर्यशास्त्र 5.1- सौंदर्य की सार्वभौमिकता 5.2- सौंदर्य की प्रयोजनहीन प्रयोजनता 5.3- सुंदर तथा उदात्त : एक तुलनात्मक दृष्टि 5.4- सौंदर्य उदात्तता एवं नैतिकता 5.5- सौंदर्य परक निर्णयों का निगमन 5.6- कान्ट का कला सिद्धान्त	12	20
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Tagore, R.N. Personality. 2. Tagore, R.N. Creative Unity. 3. टैगोर, रविन्द्रनाथ. साधना. 4. Tagore, R.N. Religion of Man. 5. Tagore, R.N. The Future Poetry. 6. श्री अरविंद.Tagore on Asthetics. 7. दासगुप्ता, एस.एन. सौंदर्यतत्त्व.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

कान्ट का दर्शन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : कान्ट का दर्शन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड : MAPHIL 246

क्रेडिट : 4

सेमेस्टर : IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्याविवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या में कांट के दर्शन की वैचारिक पृष्ठभूमि तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं पर यथास्थान विस्तार पूर्वक विचार किया गया है, यह कहा जा सकता है कि कांट प्रमुख रूप से दो प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर ढूँढने की चेष्टा कर रहा था - प्रथम वैज्ञानिक ज्ञान कैसे संभव है? और द्वितीय, नैतिक तथा धार्मिक जीवन कैसे सम्भव है? एक वैज्ञानिक के रूप में कांट न्यूटन के यांत्रिकी सिद्धांत से सहमत था। किन्तु इस सिद्धान्त की अपनी सीमायें थीं जो ह्यूम में आकर सर्वथा स्पष्ट हो गयीं, ह्यूम ने यह प्रमाणित कर दिया कि यांत्रिकी का आधारभूत सिद्धांत-सार्वभौम कारणता-स्वतः एक संदिग्ध सिद्धांत है। इसका तात्पर्य यह था कि समूचा वैज्ञानिक चिन्तन इस नाते संदेहास्पद है कि वह अपने ही मूलभूत सिद्धांत की व्याख्या नहीं कर सकता। वैज्ञानिक चिन्तन अपनी समस्याओं के लिए इन्द्रियानुभविक आगमन का सहारा लेता है और आगमन की पद्धति कारणता के सार्वभौम स्वरूप का प्रतिपादन नहीं कर सकती। इसलिए कांट की पहली समस्या यह थी कि वैज्ञानिक चिन्तन को एक सुनिश्चित दार्शनिक आधार किस प्रकार प्रदान किया जा सकता है। उसी के साथ कांट यह भी चाहता था कि वैज्ञानिक ज्ञान नैतिकता के साथ कोई हस्तक्षेप न कर सके। यदि कारणता का सिद्धांत सार्वभौम रूप से वैध सिद्धांत है तो मनुष्य का नैतिक जीवन भी उससे अछूता नहीं रह सकता क्योंकि तब मनुष्य का समस्त आचरण भौतिक घटनाओं की भाँति निर्धारित हो जाता है और परिणामस्वरूप मनुष्य की स्वतंत्रता, जो कि नैतिक जीवन की आवश्यक शर्त है, समाप्त हो जाती है। कांट विज्ञान और नैतिकता दोनों की रक्षा करना चाहता है और उसका दावा है कि कॉपरनिकसीय क्रान्ति पर आधारित उसका आलोचनात्मक दर्शन ऐसा करने में सक्षम है। ऊपर इंगित समस्या का ज्ञान की समस्या से गहरा सम्बन्ध है। हमारे ज्ञान का स्वरूप क्या है ? नक्षत्रविज्ञान में कॉपरनिकस की क्रान्ति के समानांतर कांट ज्ञानमीमांसा में भी वैसा ही प्रयोग करता है। परिणामस्वरूप हमारे समस्त ज्ञान में मानवीय चेतना की रचनात्मकता का स्पर्श अंकित हो जाता है। हमारा ज्ञान वस्तु द्वारा निर्धारित न होकर हमारी चेतना द्वारा निर्धारित होता है। ज्ञात प्राकृतिक जगत् तटस्थ रूप से प्राप्त जगत् न होकर एक मानवीयं जगत् है। बुद्धि की कोटियों के द्वारा निर्धारित होने के नाते ही हमारा ज्ञान वस्तु का ज्ञान होता है और संप्रेषणीय होता है। एक ही प्रकार से संरचित सारे मनुष्यों की चेतना उस अनुभव और उस जगत् में साझीदार होती है। विश्लेषणवाद, जो आज की सर्वाधिक प्रभावशील विचारधारा है, पर कांट के दर्शन का स्पष्ट प्रभाव है। पी० एफ० स्ट्रॉसन इस समय इसी परम्परा से संबद्ध दार्शनिक हैं। वे कांट के महत्त्व पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं : "हमारे लिए एक ऐसे जगत् की कल्पना करना सम्भव है जो कि हमारे द्वारा ज्ञात जगत् से भिन्न हो। अनुभव या ज्ञान के ऐसे प्रकारों की भी कल्पना करना सम्भव है जो हमारे अनुभव से भिन्न हों। किन्तु ऐसे अनुभवों का बोधगम्य वर्णन नहीं हो सकता। हमारे सोचने की और बोधगम्य वर्णन करने की एक सीमा होती है.. इसकी खोज एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण दार्शनिक कार्य है। इस कार्य को कांट से बेहतर ढंग से किसी अन्य दार्शनिक ने नहीं किया है।"

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

इक्कसवीं शताब्दी में विकसित होने वाली पाश्चात्य दर्शन की विचारधाराओं के सन्दर्भ में कांट के योगदान का समुचित मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है। यह कहा जा सकता है कि समकालीन पाश्चात्य दर्शन में आज दो प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं; ब्रिटेन तथा अमेरिका में विश्लेषण (एनालिसिस) का प्रचलन है और यूरोप, विशेषतः फ्रान्स तथा जर्मनी, में फेनामेनालाजी तथा अस्तित्ववाद की लोकप्रियता है। लेकिन यह बात सापेक्षिक रूप से ही समझी जानी चाहिए क्योंकि दोनों ही क्षेत्रों में दोनों विचारधाराओं के समर्थक विद्यमान हैं। भाषा-दर्शन सहित दर्शन की अन्य विधाओं पर कांट के प्रभाव को तो पहले से ही स्वीकार किया गया है किन्तु फेनामेनालोजी तथा अस्तित्ववाद के सन्दर्भ में भी कांट के दर्शन की प्रासंगिकता पर गंभीरतापूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। एक ऐसा ही प्रयास अंग्रेजी भाषा में राबर्ट सी० सोलोमन ने फ्रांस रेशनलिज्म टू एग्जिस्टेन्शियलिज्म, में किया है। उन्होंने बीसवीं सदी के हुसर्ल, हाइडेगर, सार्च आदि के विचारों का स्रोत कांट तथा हेगल के दर्शन में ढूँढ़ने की चेष्टा की है।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**कांट के दर्शन की सामान्य रूपरेखा** जीवन-वृत्त एवं कृतियाँ आलोचनात्मक दर्शन की पृष्ठभूमि तथा उसका क्रमिक विकास मनुष्य की तत्त्वमीमांसीय प्रवृत्ति कांट की समस्या कापरमिक्सीय क्रान्ति कांट की आलोचनात्मक पद्धति निर्णयों का वर्गीकरण-संश्लेषणात्मक प्रागनुभाविक ज्ञान की सम्भावना	12	20
मॉड्यूल-2	**अनुभवातीत संवेदनशास्त्र** देश एवं काल देश एवं काल का तात्त्विक विवरण देश एवं काल का अनुभवातीत विवरण देश एवं काल की इन्द्रियानुभविक वास्तविकता तथा पारमार्थिक प्रत्ययात्मकता	12	20
मॉड्यूल-3	**अनुभवातीत तर्कशास्त्र** सामान्य तर्कशास्त्र तथा अनुभवातीत तर्कशास्त्र अनुभवातीत ज्ञान तथा उसका अनुभवातीत प्रयोग अनुभवातीत तर्कशास्त्र का स्वरूप अनुभवातीत तर्कशास्त्र का विभाजन अनुभवातीत विश्लेषकी	12	20
मॉड्यूल-4	**संप्रत्ययों की विश्लेषकी** संप्रत्ययों का तात्त्विक निगमन परिणाम सम्बन्धी निर्णय गुण सम्बन्धी निर्णय, सम्बन्ध सूचक निर्णय संप्रत्ययों का अनुभवातीत निगमन	12	20
मॉड्यूल-5	**संवृत्ति तथा परमार्थ का भेद**	12	20
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. दयाकृष्ण. (1972). ज्ञानमीमांसा, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. 2. पाण्डेय, संगमलाल. (1973). आधुनिक दर्शन की भूमिका, इलाहाबाद, दर्शन पीठ प्रकाशन. 3. पाण्डेय, संगमलाल. (1982). कान्ट का दर्शन, इलाहाबाद, दर्शन पीठ प्रकाशन. 4. मिश्र, सभाजीत. कान्ट दर्शन, लखनऊ, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी. 5. राय, प्रो.अरविंद कुमार. (2020). कान्ट दर्शन का तात्पर्य, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन. 6. Bhattacharya, K.C. Philosophy of Immanuel Kant. 7. Paul, Guyer. Kant's Critique of Pure Reason. 8. चन्द्र, दीवान. शुद्ध बुद्धि मीमांसा. 9. मसीह, याकूब. (2016). पाश्चात्य दर्शन का समीक्षात्मक इतिहास, नई दिल्ली, मोतीलाल बनारसीदास. 10. वर्मा, अशोक कुमार. पाश्चात्य दर्शन (बेकन से कान्ट तक), नई दिल्ली, मोतीलाल

		बनारसीदास. 11. उपाध्याय, हरिशंकर. पाश्चात्य दर्शन, इलाहाबाद, अनुशीलन प्रकाशन. 12. Korner, S. : Kant. 13. Rai, Chhaya : Kant Ka Nitidarsana (Hindi).
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

अस्तित्ववाद (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्याका नाम : अस्तित्ववाद (मूल)

पाठ्यचर्याकाकोड : MAPHIL 247

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण: (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के तहत विद्यार्थी अस्तित्ववाद, अस्तित्ववाद का अर्थ, अस्तित्ववाद का महत्व, अस्तित्ववाद की प्रकृति, ईश्वरवादी अस्तित्ववाद, अनीश्वरवादी अस्तित्ववाद, अस्तित्ववाद से संबंधित प्रमुख दार्शनिक जिसमें यास्पर्श, हाइडेगर, केकेगार्ड, नीत्शे, कामू, ज्यां पाल सार्त्र के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत मानवीय गरिमा की महत्ता को सुनिश्चित करने के साथ ही आत्मशुद्धि व आत्मकेंद्रितता के गुण सीख पाएंगे। विद्यार्थियों में अस्तित्ववाद की समझ उनमें विचारों एवं इच्छाओं को प्रकट करने की क्षमता विकसित करेगी। अस्तित्ववाद की प्रकृति को पढ़ते हुए विद्यार्थी अपने अंदर शिक्षा में अस्तित्ववादी सौन्दर्यबोध की क्षमता विकसित करने के साथ ही एक आशावादी एवं सकारात्मक प्रवृत्ति को आत्मसात कर सकेंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1.1 अस्तित्ववाद का अर्थ 1.2 अस्तित्ववाद की परिभाषा 1.3 अस्तित्ववाद का महत्व 1.4 अस्तित्ववाद की प्रकृति	15	25
मॉड्यूल-2	2.1 अस्तित्ववाद के उद्भव की परिस्थितियाँ 2.2 अस्तित्व के लक्षण 2.3 अस्तित्ववाद की सीमाएँ 2.4 अस्तित्ववाद के प्रकार : ईश्वरवादी अस्तित्ववाद, अनीश्वरवादी अस्तित्ववाद	15	25
मॉड्यूल-3	**अस्तित्ववाद के प्रमुख दार्शनिक** 3.1 केकेगार्ड 3.2 यास्पर्श 3.3 गैब्रिल मार्शल 3.4 अल्बर्ट कामू	15	25

मॉड्यूल-4	4.1 मार्टिन हाइडेगर 4.2 ज्यां पाल सार्त्र 4.3 नीत्शे	15	25
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Sartre, Jean Paul. Existentialism is a Humanism, Yale University Press. 2. Sartre, Jean Paul. Modern Classics Age of Reason. 3. सक्सेना, डॉ.लक्ष्मी. मिश्र, डॉ. सभाजीत, : अस्तित्ववाद के प्रमुख विचारक, मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी. 4. Cooper, David. Existentialism A Reconstruction Wiley Blackwell. 5. Camus, Albert. The Myth of Sisyphus, Penguin Modern Classics. 6. मिश्र, हृदय नारायण. उन्नत नीतिशास्त्र. इलाहाबाद : शेखर प्रकाशन. 7. निगम, शोभा. पाश्चात्य दर्शन के संप्रदाय. दिल्ली : मोतीलाल बनारसीदास.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

दार्शनिक उपबोधन (मूल)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: दार्शनिक उपबोधन (मूल)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 248

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर: IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिट घंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course)

दार्शनिक उपबोधन, परंपरा में, किसी के मूल्यों, विश्वासों, विचारों, निर्णयों, इच्छाओं, भावनाओं, अंतर्ज्ञानों, निष्कर्षों, लक्ष्यों, प्रतिबद्धताओं, संबंधों को प्रतिबिंबित करने, स्पष्ट करने, देखने और समझने का एक अभ्यस्त, दैनिक अभ्यास है। सामान्य तौर पर, सभी कार्य और अनुभव जो किसी के जीवन का निर्माण करते हैं। इस अर्थ में, दर्शन जीवन जीने का एक तरीका है, विचारों, विचारों, प्रथाओं के लिए गंभीर रूप से जीने और सोचने के लिए जो किसी की संस्कृति और समाज द्वारा दिए गए हैं। आधुनिक जीवन की कई समस्याएं इस दृष्टिकोण को विकसित करने में विफलता का परिणाम हो सकती हैं, विशेष रूप से दूसरे के प्रभाव में और इसके परिणामस्वरूप अन्यता में स्वयं के लिए, दूसरों के प्रभाव में व्यवसाय के विकल्प के रूप में और अपने स्वयं के हितों; एक मध्यम वर्ग के व्यक्ति पर एक आर्थिक और मनोवैज्ञानिक बोझ के कारण असाधारण, शानदार जीवन शैली प्रदर्शित करना, और इसी तरह। यह दूसरी दिशा कई मनोवैज्ञानिक तनावों और आधुनिक व्यक्ति के अलगाव का मूल कारण बन जाती है। दर्शन, विशेष रूप से अस्तित्ववाद के तहत, अलगाव, अर्थ या उद्देश्य की कमी, चिंता, और इसी तरह की समस्याओं से संबंधित है, और एक स्वतंत्र, प्रामाणिक, व्यक्ति विकसित करने का प्रयास करता है । नीत्शे की शब्दावली में मनुष्य अपने स्वयं के प्रामाणिक तरीके से वास्तविक खुशी या जीवन का उद्देश्य / अर्थ खोजने के लिए प्रतिबद्ध है। भारतीय दार्शनिक प्रणालियों की ओर बढ़ते हुए, हमारे पास पर्याप्त संसाधन (सैद्धांतिक और अभ्यास-आधारित) हैं, विशेष रूप से बौद्ध और वेदांत, योगिक परंपराओं, जैन परंपरा और भगवद्गीता में, जो एक स्थिर मार्ग प्राप्त करने में मदद कर सकता है। इस पाठ्यचर्या में कुशल दार्शनिक परामर्शदाताओं को विकसित करने के लिए दार्शनिक सिद्धांत को व्यावहारिक अनुभव के साथ संयोजित करने का प्रयास करता है।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes)

1. दार्शनिक की बुनियादी अवधारणाओं और सिद्धांतों की समझ विकसित करना।
2. दार्शनिक परामर्श की मनोवैज्ञानिक परामर्श से तुलना करना।
3. दार्शनिक परामर्श में घटनात्मक और अस्तित्वपरक दार्शनिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना।
4. दार्शनिक परामर्श में पूर्वी संसाधनों जैसे गीता, जैन, जेन, ताओ, विपश्यना ध्यान की भूमिका का पता लगाना।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1. सामान्य परामर्श-परिभाषा और अर्थ, बुनियादी धारणाएं 2. परामर्श के रूप 3. परामर्श प्रक्रिया में चरण 4. एक परामर्शदाता के व्यक्तिगत गुण 5. प्रभावी परामर्श के लक्षण 6. दार्शनिक परामर्श क्या है? 7. प्रारंभिक योगदान। 8. दार्शनिक परामर्शदाता की विशेषताएं 9. दर्शन - एक गतिविधि 10. दार्शनिक परामर्श 11. चिकित्सीय दर्शन	**15**	**25**

मॉड्यूल-2	1. उपनिषद - आत्म-पारगमन, पंचकोश सिद्धांत, 2. चेतना के चार स्तर- (जाग्रत, स्वप्न, सुसुप्ति और तुरीय), 3. गीता - भावनात्मक स्थिरता, समत्वम का आदर्श, निष्कामकर्म	**15**	**25**
मॉड्यूल-3	1. जैन धर्म-अनेकांतवाद, सापेक्षता सिद्धांत; प्रेक्षाध्यान 2. बौद्ध धर्म-मानसिक पीड़ा का विश्लेषण, मध्य-पथ का सिद्धांत, बौद्ध धर्म का मनोविश्लेषण, विपश्यना ध्यान की प्रभावशीलता 3. ज़ेन बौद्ध धर्म-आत्म-साक्षात्कार 4. ताओवाद-आंतरिक स्वतंत्रता। 5. जीवन का अंतिम लक्ष्य-मोक्ष 6. न्यायवैशेषिक प्रणाली-चेतना के सिद्धांत 7. सांख्य प्रणाली-त्रिगुण और व्यक्तित्व 8. योग और ध्यान 9. अष्टांगयोग-चित्तवृत्ति, समाधि और चेतना के स्तर 10. वेदांत-भ्रम और यथार्थ	**15**	**25**
मॉड्यूल-4	1. स्वामी विवेकानंद-चार योग 2. श्री अरबिंदो-समग्र योग 3. गांधी- व्यावहारिक अहिंसा 4. डॉ राधाकृष्णन-बुद्धि और अंतर्ज्ञान 5. जे. कृष्णमूर्ति-पूर्ण स्वतंत्रता 6. श्री रमण महर्षि-आत्म-जांच की विधि 7. श्री नारायण गुरु-आत्मोपदेश	**15**	**25**
योग		**60**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. De Monticelli, R. (2018). Edmund Husserl, In The Oxford Handbook of Phenomenological Psychopathology (Ed.: Stanghelline, G., Raballo A., Broome, M., Fernandez A.V., Fusar-Poli, P., Rosfort R.), Oxford: Oxford University Press. 2. J. Krishnamurthi (1954). The first and last freedom. Harper & Brothers Publication, London. 3. Suzuki, D.T. & Carl G. Jung (1948). An Introduction to Zen Buddhism. NY: Grove Press. 4. Schuster, S. C. (1998). On Philosophical Self-diagnosis and Self-help. International Journal of Applied Philosophy, 12(1), 37-50. 5. Sankaracarya. Self-knowledge (Atmabodha), (1946), Swami Nikhilananda. Tr. New York: Ramakrishna-Vivekananda Center 6. Radhakrishnan, S. (1924), The Philosophy of the Upanisads. London: Allen & Unwin, 1924. 7. Radhakrishnan, S. (1940), Indian Philosophy,Vol II, Oxford University Press, NewDelhi. 8. Chandradhar Sharma (1991); "A Critical Survey of Indian Philosophy", Motilal Banarsidass publishers pvt. Ltd., Delhi. 9. A Parthasarathy (1971), Atma Bodha of Sri Sankaracharya, Bharatiya Vidya

		Bhavan, Bombay. 10. Umesh Mishra, (2006); Nyaya-Vaisesika conception of matter in Indian Philosophy, Bharatiya Kala Prakashan, Delhi. 11. Basant Kumar Lal (2005), Contemporary Indian Philosophy, Motilal Banarsidass Publishers Pvt. Ltd. Delhi. 12. Raghunath Safaya (1976), Indian Psychology, Munshiram Manoharlal Publishers Pvt. Ltd. New Delhi. 13. Judith Blackstone and Zoran Josipovic (2003); Zen for Beginners, Orient Longman pvt. Ltd. Hyderabad,
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

महात्मा गांधी का दर्शन (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम: महात्मा गांधी का दर्शन (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्याकाकोड : MAPHIL 249

क्रेडिट: 4

सेमेस्टर :IV

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइनव्याख्यान	60
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	60

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

"महात्मा गांधी का दर्शन" इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत महात्मा गांधी के दर्शन यथा सामाजिक दर्शन में सत्य, अहिंसा, सर्वोदय का दर्शन, वर्ण व्यवस्था सबंधी विचार तथा राजनैतिक दर्शन में सत्याग्रह, रचनात्मक कार्यक्रम, राज्य की अवधारणा, आदर्श राज्य व्यवस्था, रामराज्य आर्थिक दर्शन के अंतर्गत न्यासिता का सिद्धांत, लघु एवं कुटीर उद्योग पर गांधी के विचार, सह-अस्तित्व एवं हिंसा एवं धार्मिक एवं नैतिक दर्शन में धर्म एवं राजनीति, अहिंसा का नैतिक दर्शन, साधन-साध्य विचार, सात सामाजिक पाप का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes):-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत गांधी के जीवन,गांधी के दर्शन से संबंधित उनके महत्वपूर्ण विचार को आत्मसात करके राष्ट्र निर्माण के साथ ही व्यक्ति निर्माण हेतु सत्य और अहिंसा के आधार पर एक श्रेष्ठ जीवन के निर्मिति करने में समर्थ होंगे। गांधी के दर्शन एवं विचार को आत्मसात करते हुये विद्यार्थी आत्मनिर्भरता की व्यावहारिक सिद्धि करने में समर्थ होंगे।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु (Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	1. पाठ का शीर्षक -महात्मा गांधी का दर्शन उपशीर्षक 1. सामाजिक दर्शन 1.1- सत्य 1.2- अहिंसा 1.3- सर्वोदय का दर्शन 1.4- वर्ण व्यवस्था सबंधी विचार	15	25
मॉड्यूल-2	राजनैतिक दर्शन 2.1- सत्याग्रह 2.2- रचनात्मक कार्यक्रम 2.3- राज्य की अवधारणा 2.4 आदर्श राज्य व्यवस्था 2.5 रामराज्य	15	25
मॉड्यूल-3	आर्थिक दर्शन 3.1- न्यासिता का सिद्धांत 3.2- लघु एवं कुटीर उद्योग पर गांधी के विचार 3.3-सहअस्तित्व एवं हिंसा	15	25
मॉड्यूल-4	धार्मिक एवं नैतिक दर्शन 4.1- धर्म एवं राजनीति 4.2- अहिंसा का नैतिक दर्शन	15	25

	4.3- साधन-साध्य विचार 4.4- सात सामाजिक पाप		
योग		**60**	**100%**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Gandhi, M. K. An Autobiography : My Experiments with Truth. 2. Datta, D. M. (1953). The Philosophy of Mahatama Gandhi (Hindi translation) Toronto, University of Wisconsin. 3. Dhawan, G. N. (1946) The Political Philosophy of Mahatma Gandhi. The Popular Book Depot. 4. Pandey, Sangamlal. Gandhi Ka Darshana (Hindi). 5. Parekh, B. (1989). Gandhi's Political Philosophy, Macmillan Press. 6. Prasad, Mahadeva (1958) Social Philosophy of Mahatma Gandhi, Vishwavidyalya Prakashan. 7. Gangadhar, D.A.(1984). Mahatma Gandhi's Philosophy of Brahmacharya, New Delhi. 8. Lal, B.K. (2002). Contemporary Indian Philosophy, MLBD.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

भारतीय नीतिशास्त्र (ऐच्छिक)
पाठ्यचर्या विवरण हेतु ढाँचा

पाठ्यचर्या का नाम : भारतीय नीतिशास्त्र (ऐच्छिक)

पाठ्यचर्या का कोड: MAPHIL 2410

क्रेडिट: 2

सेमेस्टर : 4

घटक	घंटे
कक्षा/ऑनलाइन व्याख्यान	30
ट्यूटोरियल/संवाद कक्षा	
व्यावहारिक/प्रयोगशाला स्टूडियो/क्षेत्रकार्य	
कौशल विकास गतिविधियाँ	
कुल क्रेडिटघंटे	30

पाठ्यचर्या विवरण (Description of Course) :-

इस पाठ्यचर्या के अंतर्गत भारतीय नीतिशास्त्र :प्रकृति एवं क्षेत्र, नैतिक अवधारणाएं : शुभ, अधिकार, कर्तव्य, मूल्य, नैतिकता की पूर्व मान्यताएं, नैतिक निर्णय का उद्देश्य, वैदिक नीतिशास्त्र : ऋत की वैदिक अवधारणा, ऋण की वैदिक अवधारणा, धर्म व धर्म के भेद-धृति, क्षमा, दम, शौच, इन्द्रियनिग्रह, अस्तेय, धी :, विद्या, सत्य, अक्रोध, सदाचार और कर्तव्य : चार्वाक का कर्म-सिद्धांत, कर्तव्य स्वातंत्र्य बनाम निर्धारणवाद, पुरुषार्थ की अवधारणा : धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आश्रम व्यवस्था : ब्रह्मचर्याश्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम, संन्यासाश्रम, गांधी का नैतिक दर्शन :सत्य , अहिंसा, साधन-साध्य विवेक, दंड और पुरस्कार,दंड का स्वरूप एवं सिद्धान्त, पुरस्कार-अर्थ व स्वरूप का अध्ययन करेंगे।

अपेक्षित अधिगम परिणाम (Course Learning Outcomes) :-

विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम के अध्ययन उपरांत भारतीय एवं पाश्चात्य नीतिशास्त्र के महत्वपूर्ण आयामों से न सिर्फ भली-भांति परिचित होंगे बल्कि उनके सिद्धांतों से प्रेरणा लेकर सार्थक, गरिमापूर्ण एवं न्यायोचित जीवन जीने में सफल होंगे। सही और गलत के बीच अंतर करने की स्थिति में होंगे। विवेक पूर्ण निर्णय की क्षमता विकसित होगी।

पाठ्यचर्या की अंतर्वस्तु(Contents of the Course)

मॉड्यूल संख्या	विवरण	कुल घंटे	कुल पाठ्यचर्या में प्रतिशत अंश
मॉड्यूल-1	**भारतीय नीतिशास्त्र** 1.1-प्रकृति एवं क्षेत्र 1.2- नैतिक अवधारणाएं : शुभ, अधिकार, कर्तव्य, मूल्य	**6**	20
मॉड्यूल-2	**वैदिक नीतिशास्त्र** 2.1 ऋत की वैदिक अवधारणा 2.2- ऋण की वैदिक अवधारणा 2.3- धर्म व धर्म के लक्षण-धृति, क्षमा, दम, शौच, इन्द्रियनिग्रह, अस्तेय, धी:, विद्या, सत्य, अक्रोध 2.4- यज्ञों में अन्तर्निहित नैतिक विधान 2.5- उपनिषदीय चिंतन में नैतिक विचार	**6**	20
मॉड्यूल-3	**कर्ममीमांसा** **3.1-** चार्वाक का कर्म-सिद्धांत 3.2- जैन मत में कर्म सिद्धांत 3.3- बौद्ध मत में कर्म सिद्धांत 3.4- षड् दर्शन में कर्म विचार	**6**	20
मॉड्यूल-4	4.1- **पुरुषार्थ की अवधारणा** धर्म	**6**	20

	अर्थ काम मोक्ष 4.2- आश्रम व्यवस्था ब्रह्मचर्याश्रम गृहस्थाश्रम वानप्रस्थाश्रम संन्यासाश्रम 4.3- ऋण व्यवस्था का नीतिशास्त्र		
मॉड्यूल-5	5.1- **गांधी का नैतिक दर्शन** सत्य अहिंसा साधन-साध्य विवेक 5.2- **दंड और पुरस्कार** • दंड का स्वरूप एवं सिद्धान्त • पुरस्कार-अर्थ व स्वरूप	**6**	20
योग		**30**	**100**

अध्ययन हेतु आधार/संदर्भ ग्रंथ (Textbooks/Reference/Resources)

क्र. सं.	पाठ्य-सामग्री	विवरण
1	आधार/पाठ्य ग्रंथ	
2	**संदर्भ-ग्रंथ**	1. Bhagvad Gita (2006) .Gita Press, Gorakhpur, 2. Frankena, William K. (1973). Ethics (Prentice Hall of India). 3. Lillie, William, (1975). An Introduction to Ethics, Allied publishers, Indian Reprint. 4. Foucault, Michel, (1973). (1971) The Birth of the Clinic, Tr. London and New York. 5. मिश्रा, नित्यांनद.(2006). नीतिशास्त्र, एम.एल.बी.डी. 6. Panigrahi, S.C.(2006). Issues In Indian Ethics, Dept of SAP in Philosophy, Utkal University, Orissa. 7. Maitra, S.K. (1978). The Ethics of the Hindus, University of Calcutta. 8. Rogers, R.A.P. A Short History of Ethics. 9. जोशी, शांति. (1963). नीतिशास्त्र, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली. 10. मिश्र, डॉ. नित्यानंद. (2005). नीतिशास्त्र (सिद्धांत तथा प्रयोग), मोतीलाल बनारसीदास. 11. वर्मा, डॉ. वेद प्रकाश.(1977). नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, एलाइड पब्लिकेशन, दिल्ली. 12. वर्मा, डॉ.अशोक कुमार. (1977). नीतिशास्त्र के सिद्धांत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. 13. पांडेय, संगमलाल. (2005). नीतिशास्त्र का सर्वेक्षण, सेन्ट्रल पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद. 14. पाठक, डॉ. दिवाकर. (1974) भारतीय नीतिशास्त्र, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमि.
3	ई-संसाधन	
4	अन्य	

(संकायाध्यक्ष) **(विभागाध्यक्ष)**